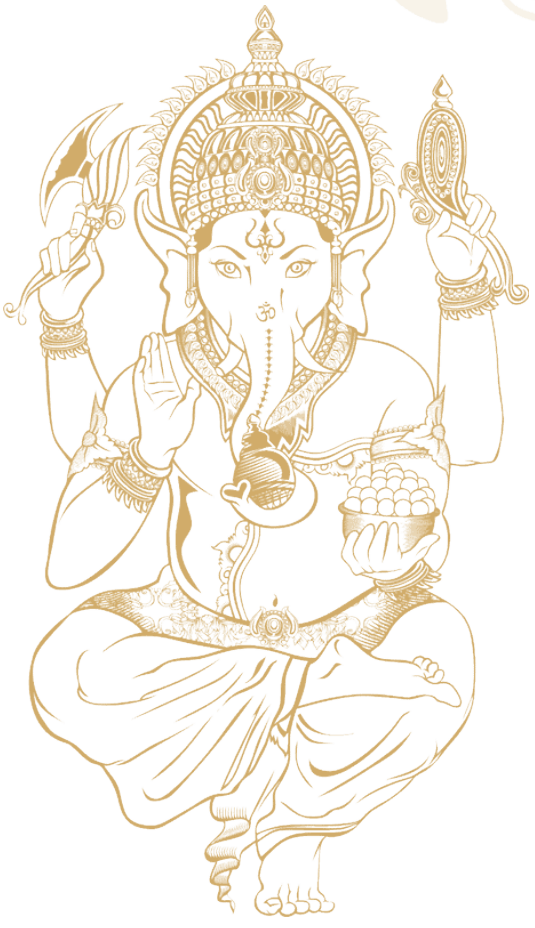

Sri Narayan Bahethi

19 Sep 1950

09:52 PM

Kolkata

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121709201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**19/09/1950**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**21:52:00 घंटे**
इष्ट	41:09:15 घटी
स्थान	**Kolkata**
राज्य	West Bengal
देश	India

अक्षांश	22:34:00 उत्तर
रेखांश	88:21:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:23:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	22:15:24 घंटे
वेलान्तर	00:05:57 घंटे
साम्पातिक काल	22:07:24 घंटे
सूर्योदय	05:24:17 घंटे
सूर्यास्त	17:36:37 घंटे
दिनमान	12:12:19 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	02:59:12 कन्या
लग्न के अंश	19:57:32 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पूर्वाषाढ़ा - 1**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	सौभाग्य
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भू-भूपेन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1872	भाद्रपद	28
पंजाबी	संवत : 2007	आश्विन	4
बंगाली	सन् : 1357	आश्विन	3
तमिल	संवत : 2007	पुरुटासी	3
केरल	कोल्लम : 1126	कन्नी	3
नेपाली	संवत : 2007	आश्विन	4
चैत्रादि	संवत : 2007	भाद्रपद	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2007	भाद्रपद	शुक्ल 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 13:24:39
जन्म तिथि _____: 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:28:07 घंटे
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____: 11:21:15 घंटे
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 13:24:39 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 00:59:40
भभोग _____: 57:50:26
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 19 वर्ष 7 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

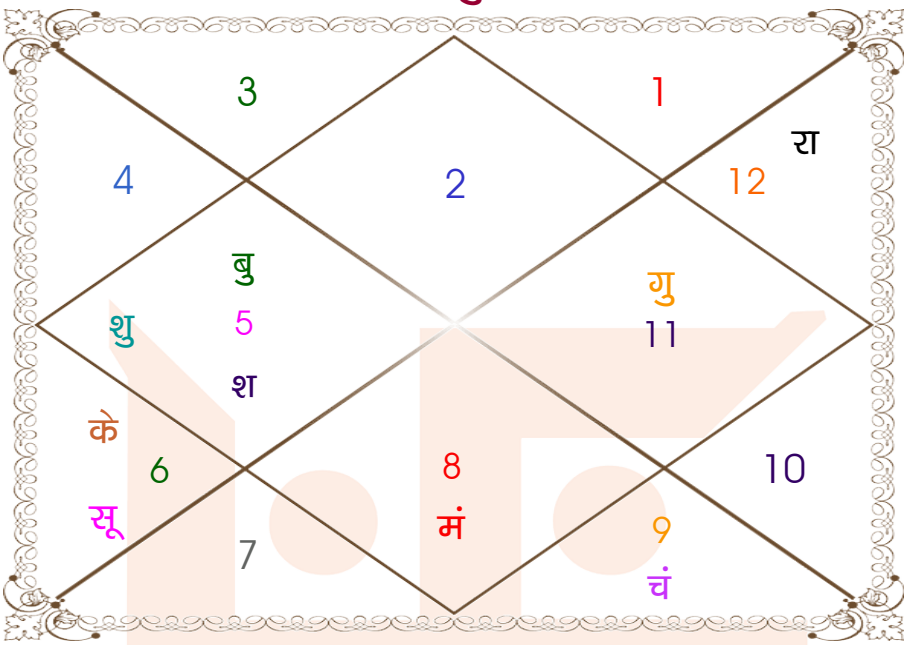

चन्द्र कुंडली

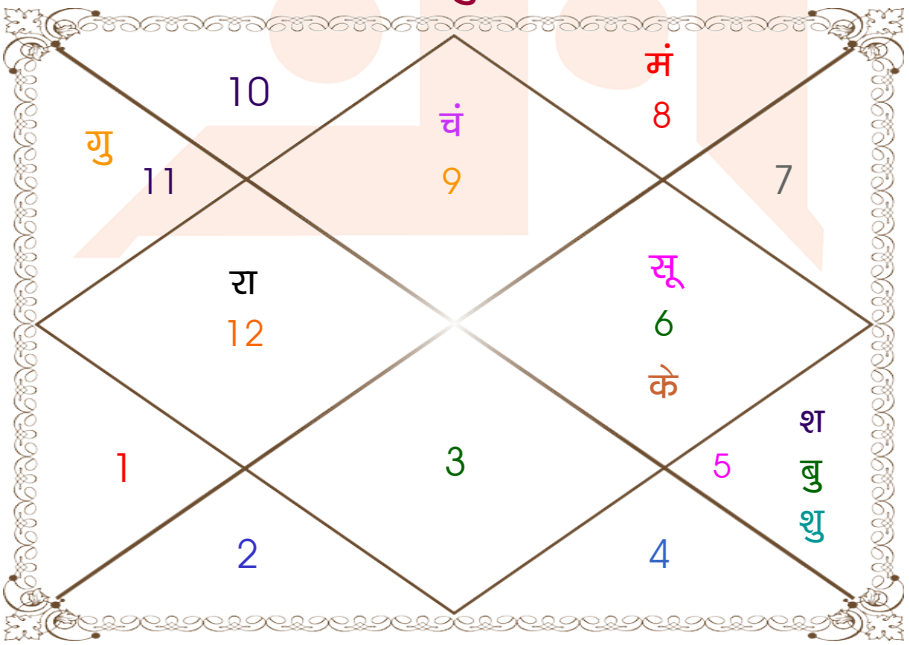

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

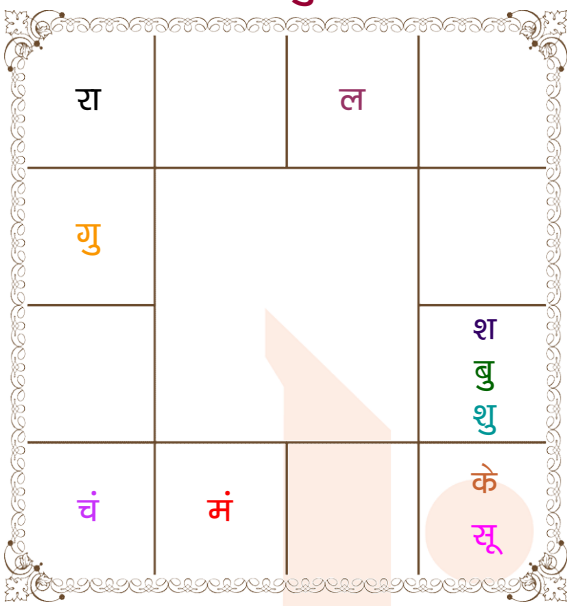

लग्न कुंडली

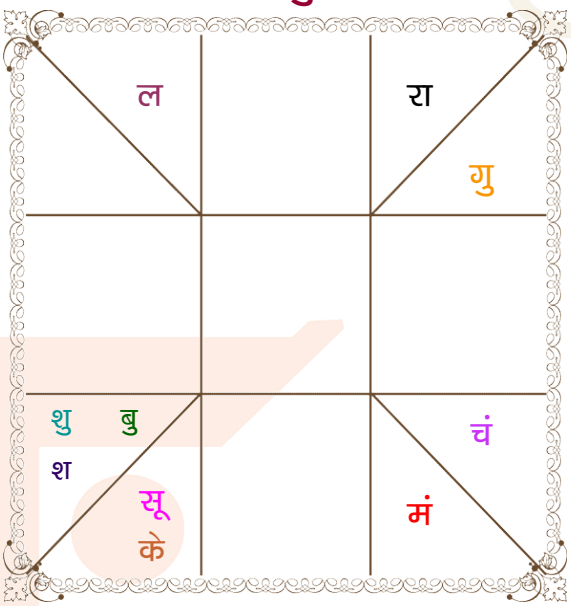

विंशोत्तरी
शुक्र 19वर्ष 7मा 25दि

शुक्र

19/09/1950

16/05/2070

शुक्र	16/05/1970
सूर्य	15/05/1976
चन्द्र	16/05/1986
मंगल	16/05/1993
राहु	16/05/2011
गुरु	16/05/2027
शनि	16/05/2046
बुध	16/05/2063
केतु	16/05/2070

योगिनी
सिद्धा 6वर्ष 10मा 16दि

सिद्धा

06/08/2022

06/08/2029

सिद्धा	16/12/2023
संकटा	06/07/2025
मंगला	15/09/2025
पिंगला	04/02/2026
धान्या	06/09/2026
भ्रामरी	17/06/2027
भद्रिका	06/06/2028
उल्का	06/08/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	19:57:32	356:35:16	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	---
सूर्य			कन्या	02:59:12	00:58:37	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	सम राशि
चंद्र			धनु	13:33:52	13:55:58	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
मंगल			वृश्चि	02:36:04	00:41:01	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	स्वराशि
बुध	व	अ	सिंह	28:19:29	00:56:03	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
गुरु	व		कुंभ	06:20:02	00:06:13	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	सम राशि
शुक्र			सिंह	18:43:36	01:14:23	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
शनि		अ	सिंह	29:57:27	00:07:29	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	05:13:05	00:00:11	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
केतु	व		कन्या	05:13:05	00:00:11	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			मिथु	16:00:57	00:01:22	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	---
नेप			कन्या	23:08:38	00:02:07	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	सूर्य	---
प्लूटो			कर्क	25:48:32	00:01:32	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	---
दशम भाव			कुंभ	06:34:52	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:10:08

लग्न-चलित

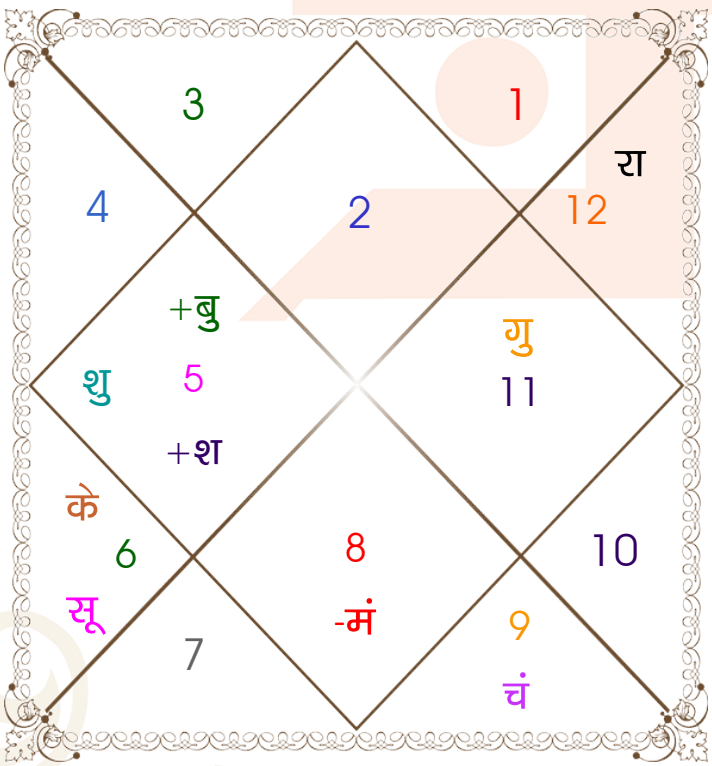

चन्द्र कुंडली

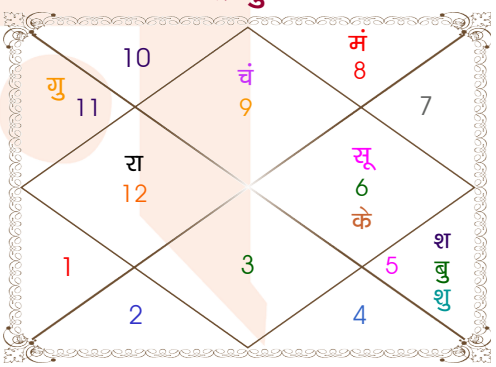

नवमांश कुंडली

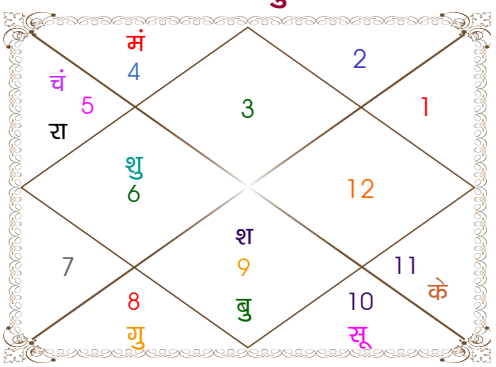

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	02:43:45	वृष	19:57:32
2	मिथुन	02:43:45	मिथुन	15:29:58
3	मिथुन	28:16:12	कर्क	11:02:25
4	कर्क	23:48:38	सिंह	06:34:52
5	सिंह	23:48:38	कन्या	11:02:25
6	कन्या	28:16:12	तुला	15:29:58
7	वृश्चिक	02:43:45	वृश्चिक	19:57:32
8	धनु	02:43:45	धनु	15:29:58
9	धनु	28:16:12	मकर	11:02:25
10	मकर	23:48:38	कुम्भ	06:34:52
11	कुम्भ	23:48:38	मीन	11:02:25
12	मीन	28:16:12	मेष	15:29:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	19:57:32
2	मिथुन	14:49:03
3	कर्क	09:15:00
4	सिंह	06:34:52
5	कन्या	08:58:44
6	तुला	15:06:08
7	वृश्चिक	19:57:32
8	धनु	14:49:03
9	मकर	09:15:00
10	कुम्भ	06:34:52
11	मीन	08:58:44
12	मेष	15:06:08

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

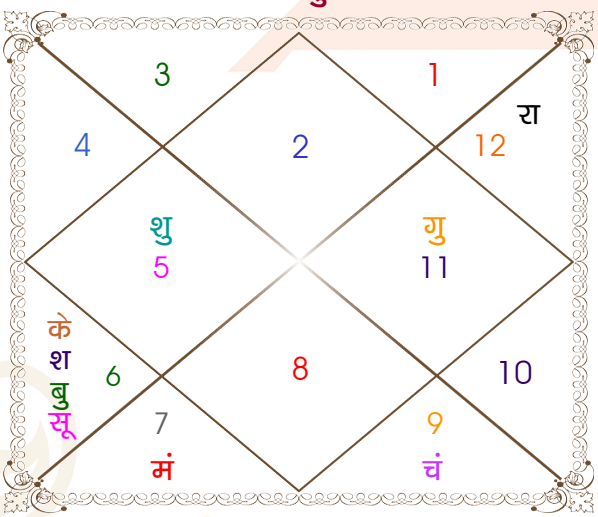

भाव कुंडली

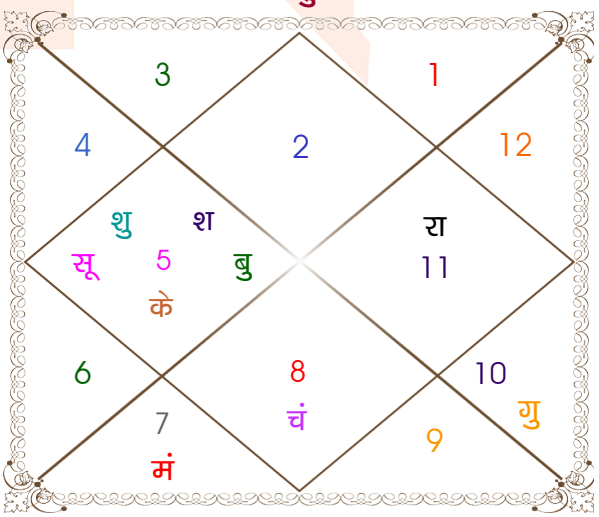

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	मृत	शक्त	नेत्रपाणि	2.47	36 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	निपीदित	कौतुक	2.43	26 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	मृत	स्वस्थ	नेत्रपाणि	3.94	30 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	मृत	विकल	नेत्रपाणि	0.00	63 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	निपीदित	गमन	0.61	28 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	वृद्ध	खल	नेत्रपाणि	1.70	43 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	विकल	नेत्रपाणि	3.61	48 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	निपीदित	कौतुक	0.00	33 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	नेत्रपाणि	0.00	33 %
कुल						14.76	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

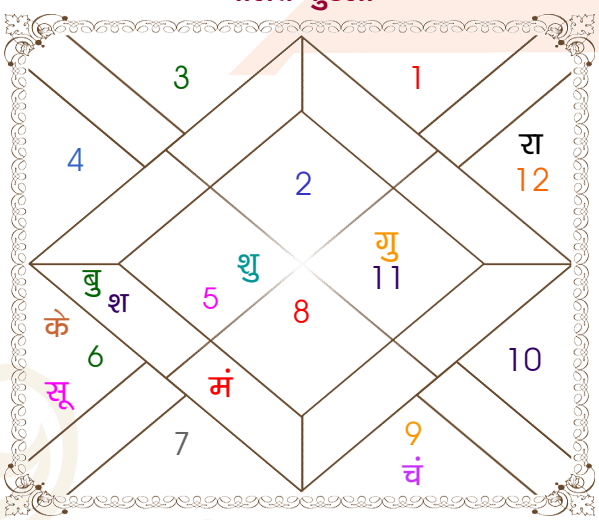

लग्न-चलित

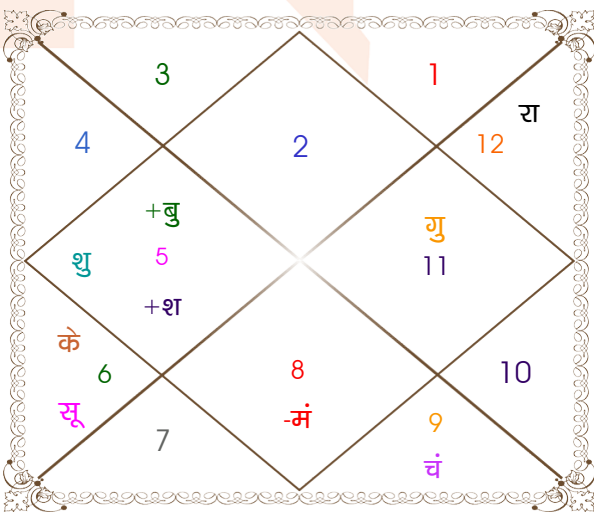

सुदर्शन चक्र

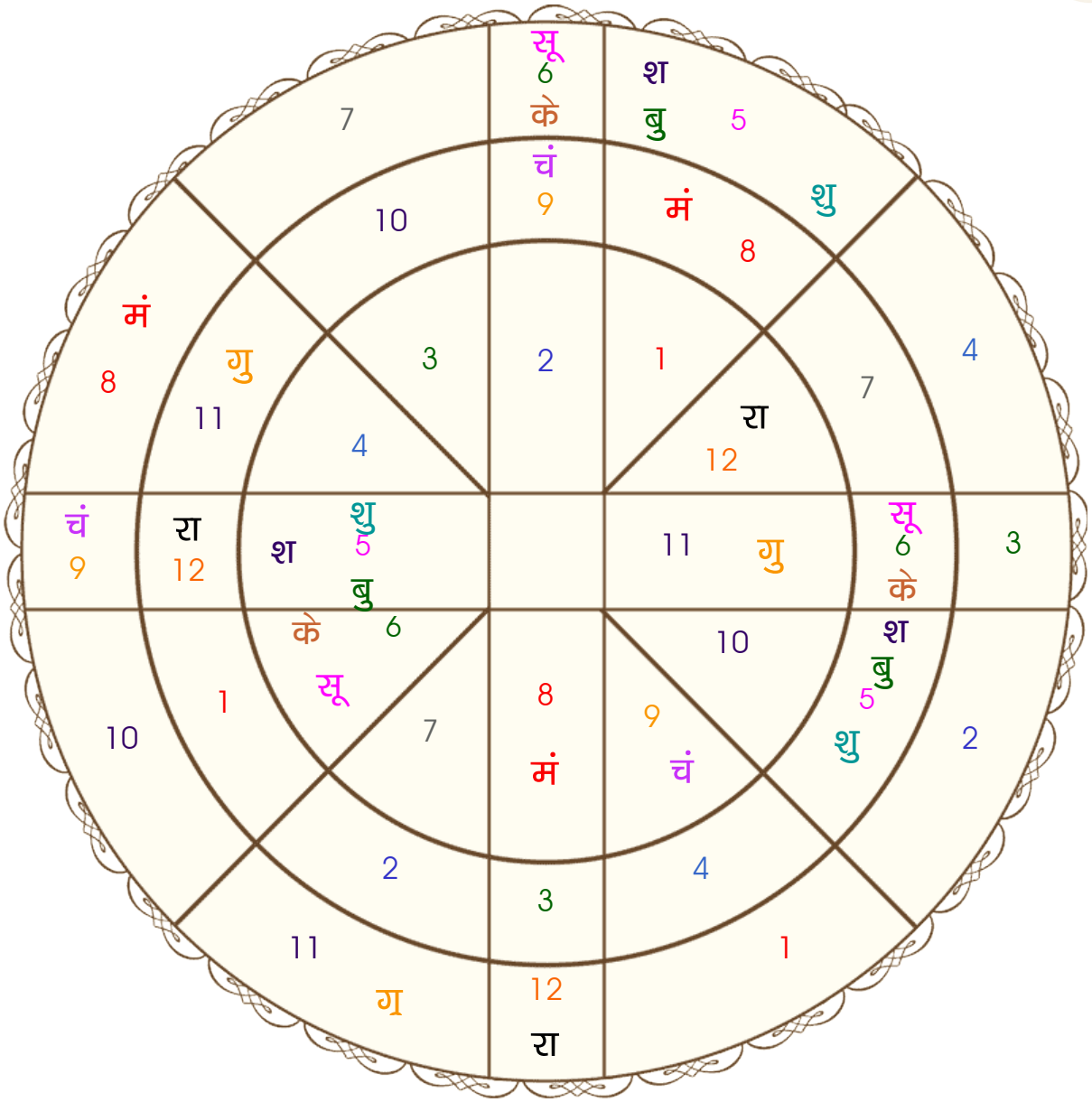

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शुक्र 19 वर्ष 6 मास 0 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	03:05:14	बुध	सूर्य	शनि	शनि
चंद्र		धनु	13:39:53	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र
मंगल		वृश्चि	02:42:06	मंगल	गुरु	राहु	शुक्र
बुध	व	सिंह	28:25:31	सूर्य	सूर्य	चंद्र	सूर्य
गुरु	व	कुंभ	06:26:04	शनि	मंगल	चंद्र	शुक्र
शुक्र		सिंह	18:49:38	सूर्य	शुक्र	राहु	शनि
शनि		कन्या	00:03:29	बुध	सूर्य	राहु	शनि
राहु	व	मीन	05:19:07	गुरु	शनि	शनि	गुरु
केतु	व	कन्या	05:19:07	बुध	सूर्य	बुध	बुध
हर्ष		मिथु	16:06:59	बुध	राहु	शुक्र	राहु
नेप		कन्या	23:14:40	बुध	चंद्र	सूर्य	शुक्र
प्लूटो		कर्क	25:54:34	चंद्र	बुध	राहु	चंद्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	20:03:34	शुक्र	चंद्र	केतु	राहु
2	मिथु	14:55:05	बुध	राहु	केतु	गुरु
3	कर्क	09:21:02	चंद्र	शनि	शुक्र	गुरु
4	सिंह	06:40:53	सूर्य	केतु	राहु	बुध
5	कन्या	09:04:46	बुध	सूर्य	शुक्र	गुरु
6	तुला	15:12:10	शुक्र	राहु	केतु	बुध
7	वृश्चि	20:03:34	मंगल	बुध	शुक्र	मंगल
8	धनु	14:55:05	गुरु	शुक्र	शुक्र	शनि
9	मक	09:21:02	शनि	सूर्य	शुक्र	शनि
10	कुंभ	06:40:53	शनि	राहु	राहु	राहु
11	मीन	09:04:46	गुरु	शनि	शुक्र	राहु
12	मेष	15:12:10	मंगल	शुक्र	शुक्र	बुध

के.पी. अयनांश : 23:04:06

फॉरच्युना : कन्या 00:38:14

लग्न कुंडली

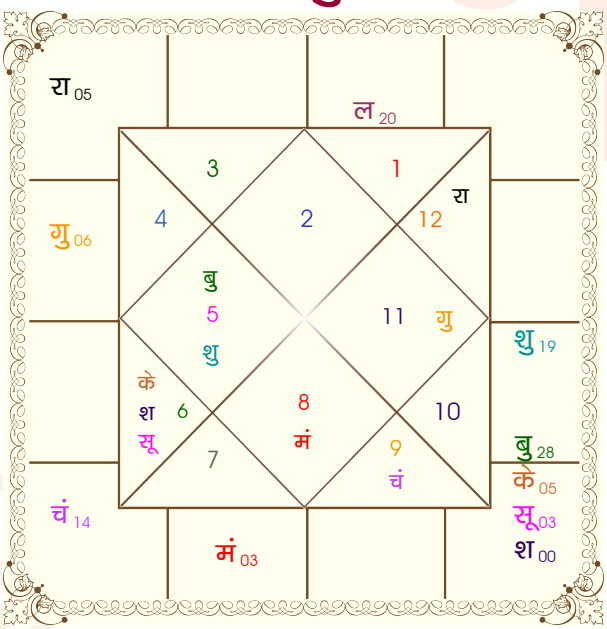

भाव कुंडली

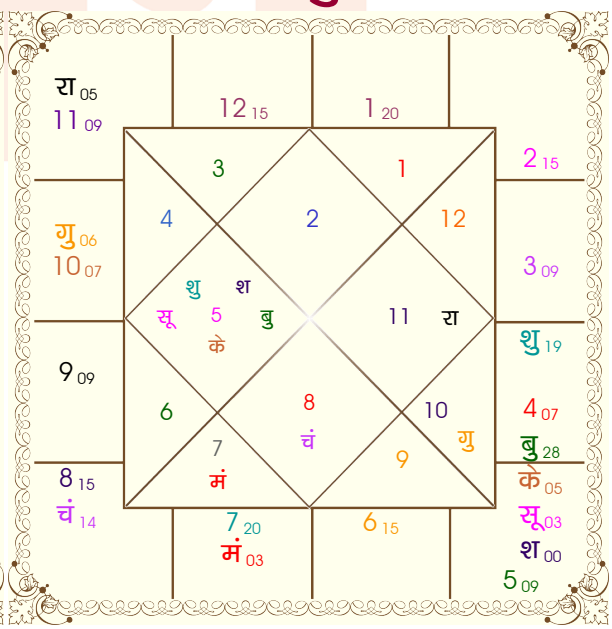

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- शुक्र,
2	बुध-
3	चंद्र-
4	सूर्य+ चंद्र, बुध+ शुक्र+ शनि+ राहु, केतु+
5	बुध-
6	चंद्र- मंगल, गुरु, शुक्र,
7	चंद्र, मंगल- गुरु-
8	मंगल- गुरु-
9	मंगल, गुरु, शनि- राहु-
10	शनि- राहु+
11	मंगल- गुरु-
12	मंगल- गुरु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4+
चंद्र	1- 3- 4, 6- 7,
मंगल	6, 7- 8- 9, 11- 12-
बुध	2- 4+ 5-
गुरु	6, 7- 8- 9, 11- 12-
शुक्र	1, 4+ 6,
शनि	4+ 9- 10-
राहु	4, 9- 10+
केतु	4+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	चं शु	शु
2	--	--	--	बु
3	--	--	--	चं
4	सू चं बु शु श रा के	सू बु शु श के	सू बु श के	सू
5	--	--	--	बु
6	गु	मं	चं शु	शु
7	--	चं	गु	मं
8	--	--	मं	गु
9	मं	गु	रा	श
10	--	रा	रा	श
11	--	--	मं	गु
12	--	--	गु	मं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	4	5,9	कन्या	4
चंद्र	3	1	धनु	7
मंगल	7,12	---	वृश्चिक	6
बुध	2,5	7	सिंह	4
गुरु	8,11	---	कुम्भ	9
शुक्र	1,6	8,12	सिंह	4
शनि	9,10	3,11	कन्या	4
राहु	---	2,6,10	मीन	10
केतु	---	4	कन्या	4

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4	5,9	4	9,10	3,11	4
चंद्र	1,6	8,12	4	1,6	8,12	4
मंगल	8,11	---	9	---	2,6,10	10
बुध	4	5,9	4	3	1	7
गुरु	7,12	---	6	3	1	7
शुक्र	1,6	8,12	4	---	2,6,10	10
शनि	4	5,9	4	---	2,6,10	10
राहु	9,10	3,11	4	9,10	3,11	4
केतु	4	5,9	4	2,5	7	4

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	152.99	253.56	212.60	148.32	306.33	138.73	149.96	335.22	155.22	76.02	173.14	115.81
सूर्य	--	--	तृती	युति	--	युति	युति	सप्त	युति	--	--	--
152.99	0.00	0.00	2.98	8.83	0.00	0.77	9.50	9.73	9.73	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
253.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.67	0.00	0.00
मंगल	--	नवां	--	--	4था	--	--	पंच	--	8वां	--	--
212.60	0.00	0.06	0.00	0.00	9.25	0.00	0.00	2.32	0.00	1.65	0.00	0.00
बुध	युति	--	तृती	--	--	युति	युति	सप्त	युति	--	--	--
148.32	8.83	0.00	1.31	0.00	0.00	5.36	9.85	7.51	7.51	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	5वां	9वां	सप्त
306.33	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.70	0.00	0.00	0.00	5.29	1.88	4.52
शुक्र	युति	पंच	--	युति	सप्त	--	युति	--	--	--	--	--
138.73	0.77	0.65	0.00	5.36	2.70	0.00	3.85	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	युति	--	युति	--	सप्त	युति	--	--	--
149.96	9.50	0.00	9.62	9.85	0.00	3.85	0.00	8.52	8.52	0.00	0.00	0.00
राहु	सप्त	--	--	सप्त	--	--	सप्त	--	सप्त	--	--	--
335.22	9.73	0.00	0.00	7.51	0.00	0.00	8.52	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	युति	--	तृती	युति	--	--	युति	सप्त	--	--	--	--
155.22	9.73	0.00	2.32	7.51	0.00	0.00	8.52	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	--	पंचा	--	तृती	--	--	--	--	--	नवां
76.02	0.00	9.67	0.00	0.88	0.00	2.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.95
नेप	--	--	नवां	--	--	--	--	--	--	--	--	--
173.14	0.00	0.00	0.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	नवां	--	तृती	--
115.81	0.00	0.00	0.00	0.00	4.52	0.00	0.00	0.00	0.60	0.00	2.30	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	49.96	75.50	101.04	126.58	161.04	195.50	229.96	255.50	281.04	306.58	341.04	15.50
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
152.99	0.00	0.00	0.00	0.00	6.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.65	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच
253.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80	0.00	0.00	2.37	2.62
मंगल	8वां	8वां	--	--	--	--	--	--	--	4था	--	--
212.60	2.44	2.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.14	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
148.32	0.00	0.00	0.00	0.00	2.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.37	0.00
गुरु	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--
306.33	0.00	5.74	0.00	10.00	0.00	5.74	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
138.73	0.00	0.00	0.00	2.94	0.00	0.00	2.85	1.99	0.00	2.94	0.00	0.00
शनि	10वा	--	--	--	युति	3रा	--	--	--	--	सप्त	--
149.96	5.00	0.00	0.00	0.00	3.99	0.57	0.00	0.00	0.00	0.00	3.99	0.00
राहु	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां
335.22	0.00	0.00	0.14	0.00	8.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.20	0.90
केतु	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--
155.22	0.00	0.00	0.00	0.00	8.20	0.90	0.00	0.00	0.00	0.00	8.20	0.00
हर्ष	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
76.02	0.00	9.99	0.00	0.00	0.79	2.97	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	--	--
173.14	0.00	0.00	0.00	0.00	2.99	0.00	2.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	युति	अष्ट	--	पंच	--	सप्त	सप्त	--	--
115.81	0.00	0.00	0.24	4.28	0.93	0.00	0.12	0.00	0.24	4.28	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	49.96	74.82	99.25	126.58	158.98	195.10	229.96	254.82	279.25	306.58	338.98	15.10
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
152.99	0.00	0.00	0.00	0.00	8.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.09	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच
253.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	0.00	0.00	1.09	2.76
मंगल	8वां	8वां	--	--	--	--	--	--	--	4था	--	--
212.60	2.44	2.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.14	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
148.32	0.00	0.00	0.00	0.00	4.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.40	0.00
गुरु	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--
306.33	0.00	6.31	0.00	10.00	0.00	6.07	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
138.73	0.00	0.00	0.00	2.94	0.00	0.00	2.85	1.56	0.00	2.94	0.00	0.00
शनि	10वा	10वा	--	--	युति	3रा	--	--	--	--	सप्त	--
149.96	5.00	0.15	0.00	0.00	5.86	0.15	0.00	0.00	0.00	0.00	5.86	0.00
राहु	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां
335.22	0.00	0.00	1.48	0.00	9.23	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.23	0.98
केतु	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--
155.22	0.00	0.00	0.00	0.00	9.23	0.98	0.00	0.00	0.00	0.00	9.23	0.00
हर्ष	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
76.02	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	2.91	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	--	--
173.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.87	0.00	2.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	युति	--	--	पंच	--	--	सप्त	--	--
115.81	0.00	0.00	0.00	4.28	0.00	0.00	0.12	0.00	0.00	4.28	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

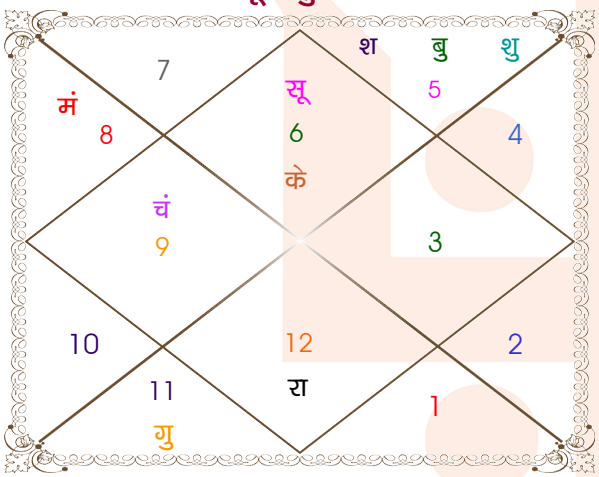

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

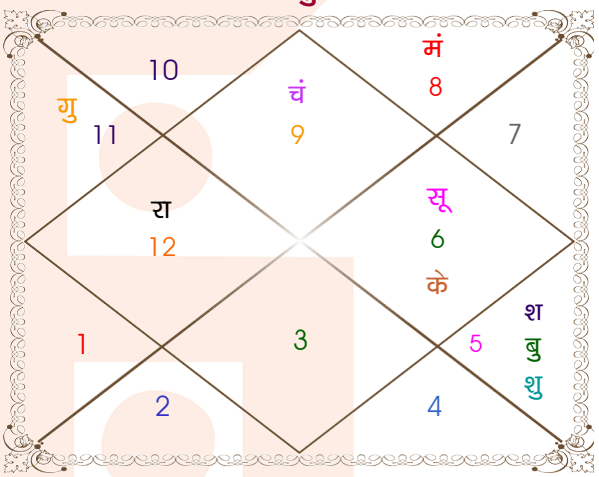

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

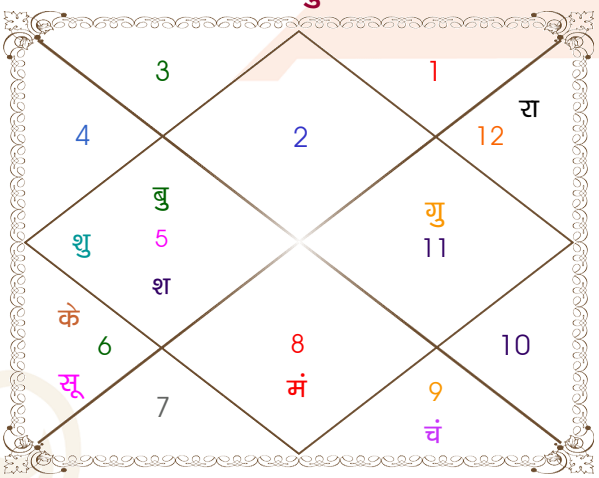

देह विचारः

होरा कुंडली

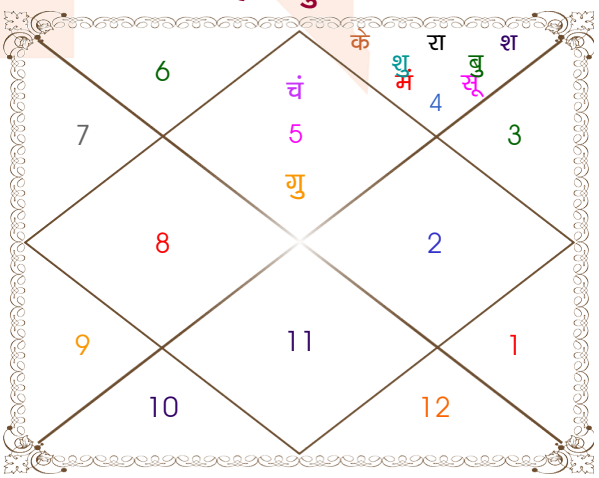

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

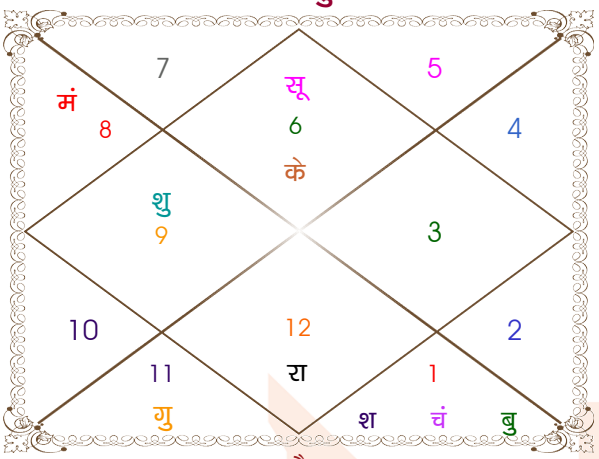

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

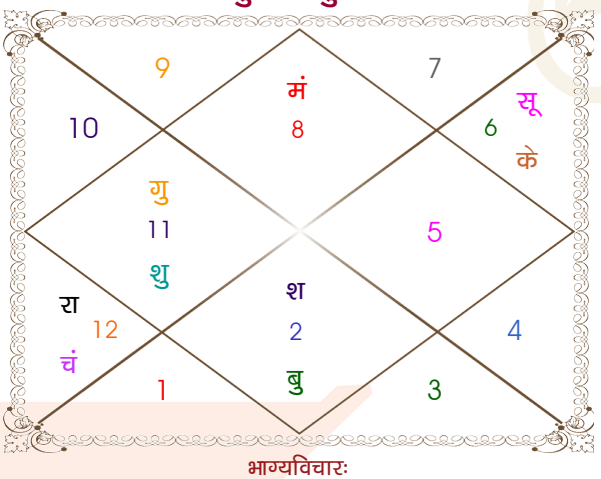

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

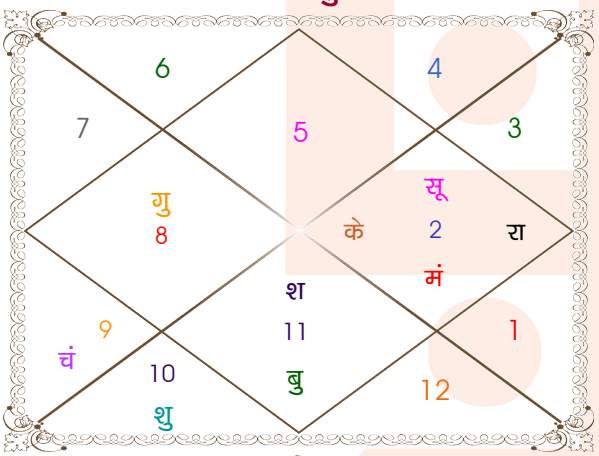

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

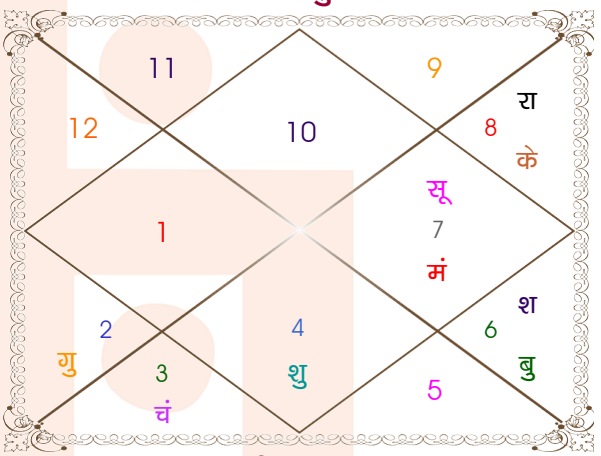

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

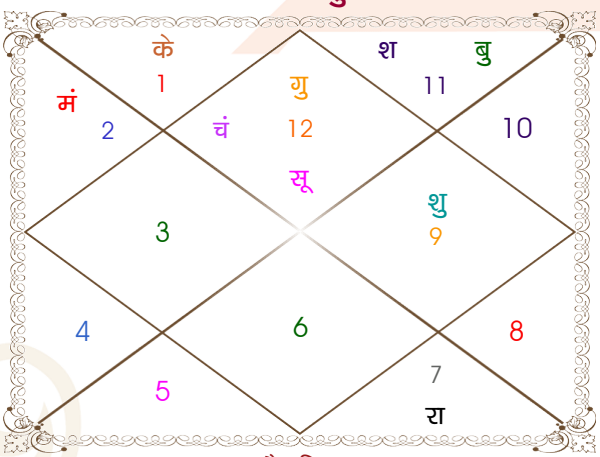

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

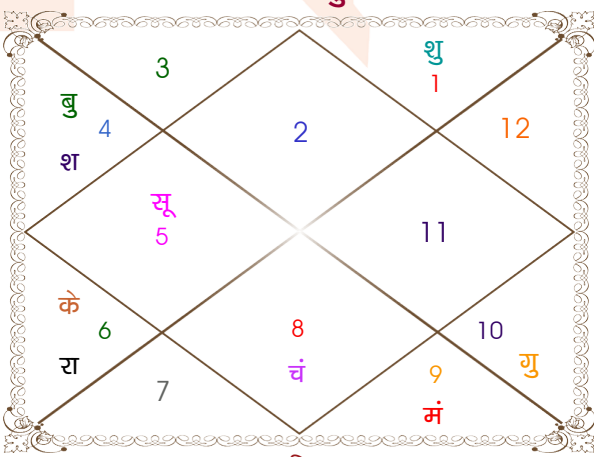

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

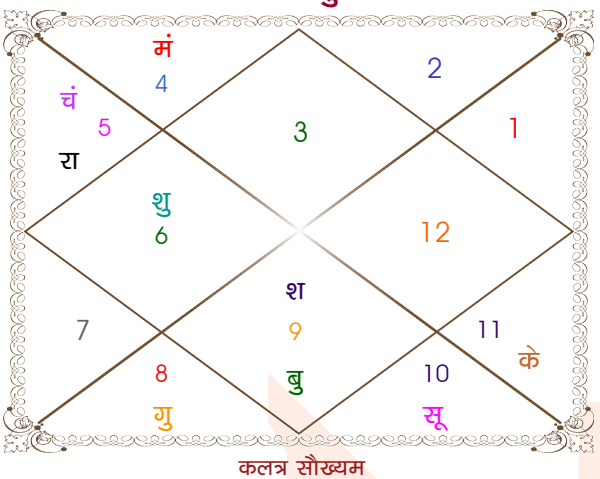

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

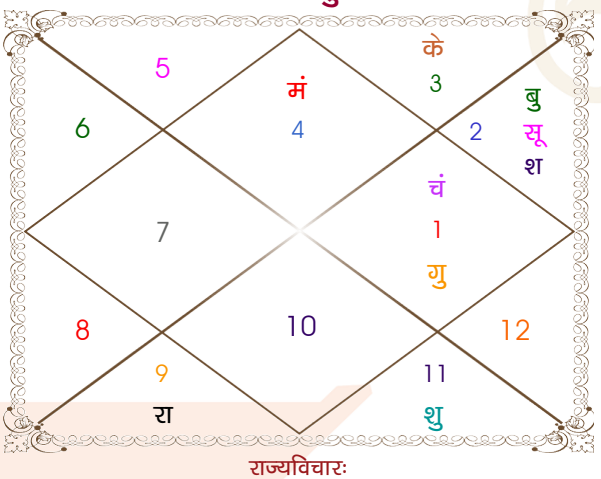

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

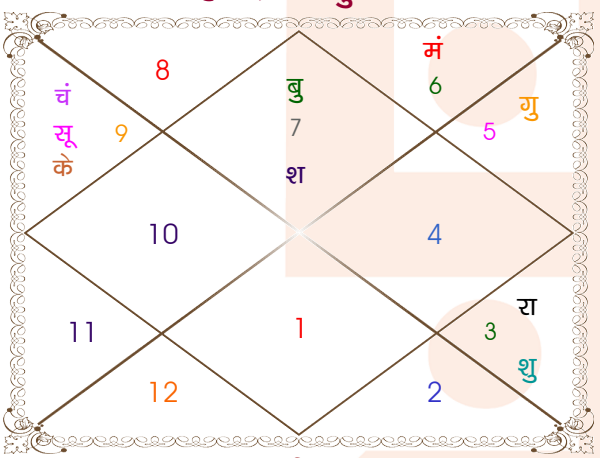

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

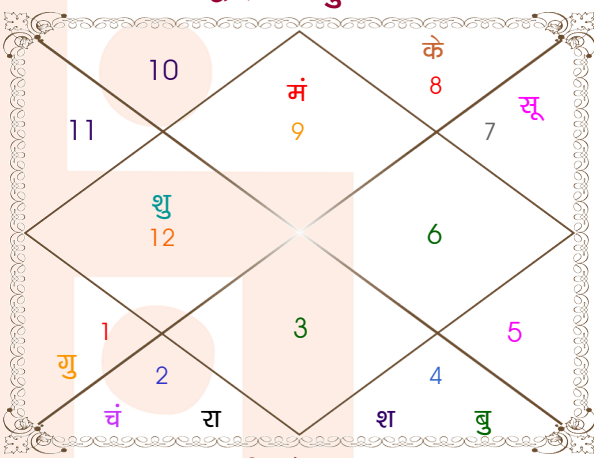

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

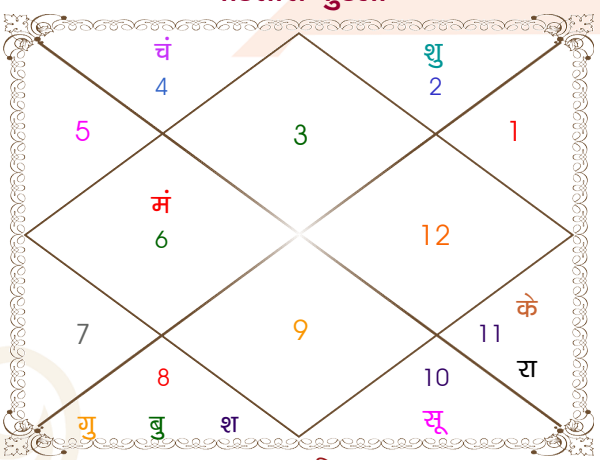

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

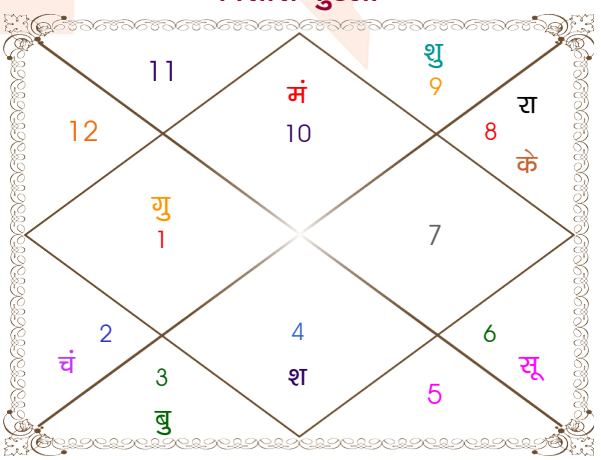

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

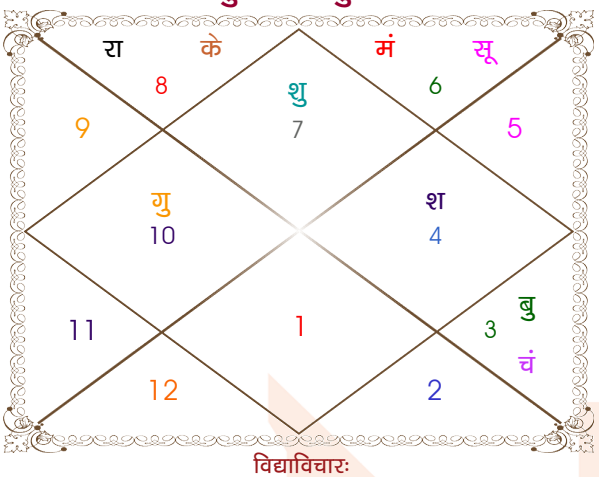

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

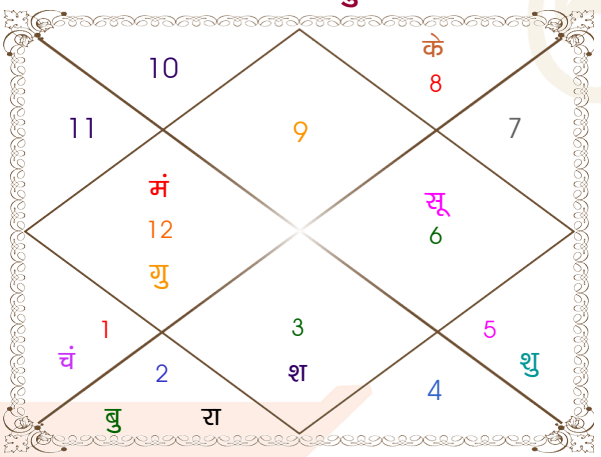

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

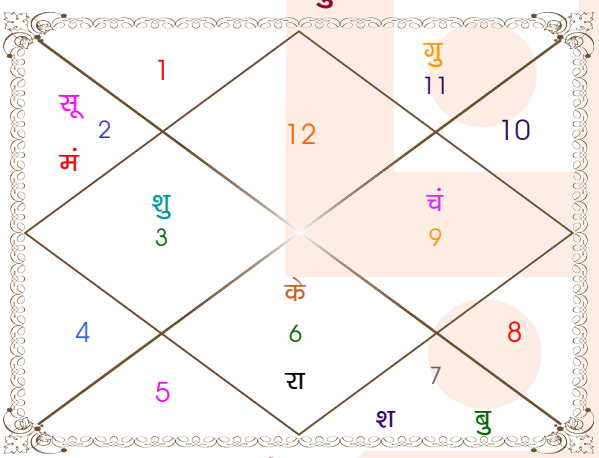

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

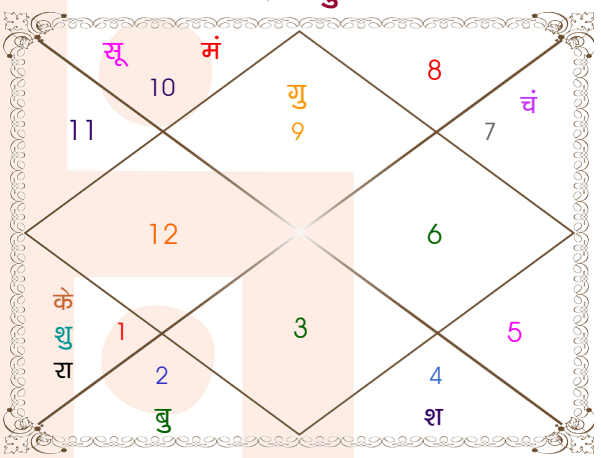

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

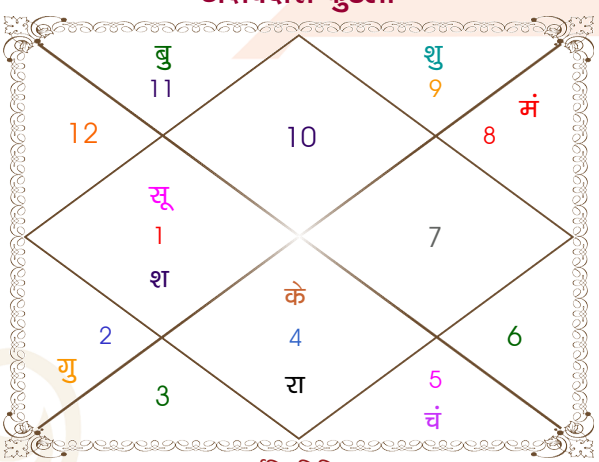

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

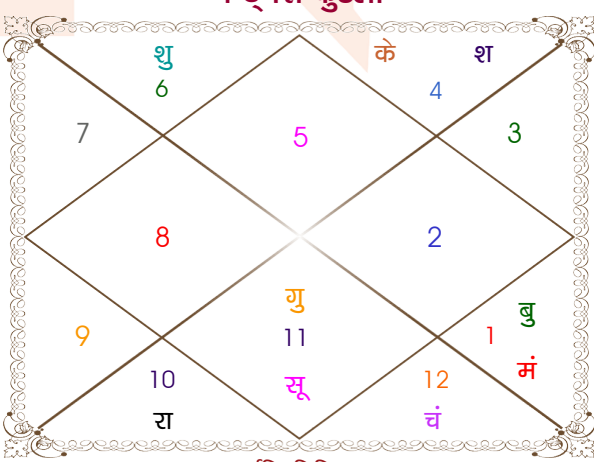

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	कन्या	धनु	वृश्चि	सिंह	कुंभ	सिंह	सिंह	मीन	कन्या
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कन्या	कन्या	मेष	वृश्चि	मेष	कुंभ	धनु	मेष	मीन	कन्या
चतुर्थांश	वृश्चि	कन्या	मीन	वृश्चि	वृष	कुंभ	कुंभ	वृष	मीन	कन्या
सप्तमांश	मीन	मीन	मीन	वृष	कुंभ	मीन	धनु	कुंभ	तुला	मेष
नवमांश	मिथु	मक	सिंह	कर्क	धनु	वृश्चि	कन्या	धनु	सिंह	कुंभ
दशमांश	कर्क	वृष	मेष	कर्क	वृष	मेष	कुंभ	वृष	धनु	मिथु
द्वादशांश	धनु	तुला	वृष	धनु	कर्क	मेष	मीन	कर्क	वृष	वृश्चि
षोडशांश	मिथु	मक	कर्क	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	वृष	वृश्चि	कुंभ	कुंभ
विंशांश	मक	कन्या	वृष	मक	मिथु	मेष	धनु	कर्क	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	तुला	कन्या	मिथु	कन्या	मिथु	मक	तुला	कर्क	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	धनु	कन्या	मेष	मीन	वृष	मीन	सिंह	मिथु	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	मीन	वृष	धनु	वृष	तुला	कुंभ	मिथु	तुला	कन्या	कन्या
खवेदांश	धनु	मक	तुला	मक	वृष	धनु	मेष	कर्क	मेष	मेष
अक्षवेदांश	मक	मेष	सिंह	वृश्चि	कुंभ	वृष	धनु	मेष	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	सिंह	कुंभ	मीन	मेष	मेष	कुंभ	कन्या	कर्क	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	7 कल्पवृक्ष
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	2 भेदक
गुरु	0 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.30	15.25	18.85	11.65	11.15	8.60	8.25	11.10	13.55
सप्तवर्ग	12.80	15.18	18.28	10.70	12.50	8.38	9.58	10.73	14.05
दशवर्ग	11.73	15.23	17.90	12.00	11.50	9.70	8.53	10.90	13.08
षोडशवर्ग	12.23	15.45	17.58	12.68	11.65	10.68	8.05	10.10	12.83

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	12	14	32	54	10	13	43
सप्तवर्गज बल	83	109	158	56	94	36	60
ओजयुग्मक बल	0	0	0	30	15	15	30
केन्द्र बल	30	30	60	60	60	60	60
द्रेष्काण बल	15	0	15	0	15	0	0
कुल स्थान बल	140	152	264	201	194	123	193
कुल दिग्बल	9	18	29	27	25	56	33
नतोन्नत बल	8	52	52	60	8	8	52
पक्ष बल	26	67	26	26	34	34	26
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	64	60	5	34	15	39	26
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	114	179	128	121	147	201	105
कुल चेष्टाबल	0	0	27	45	52	9	3
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	17	-22	-5	17	-12	19	17
कुल षट्बल	339	378	460	436	441	450	360
रूप षट्बल	5.7	6.3	7.7	7.3	7.3	7.5	6.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.0	1.5	1.0	1.1	1.4	1.2
संबंधित पद	4	6	1	7	5	2	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	19.65	21.29	28.94	49.26	23.30	10.42	11.73
कष्ट फल	37.00	35.08	30.85	9.26	19.94	49.32	30.79

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	450	436	378	339	436	450	460	441	360	360	441	460
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	41	44	15	65	47	64	28	24	3	9	46	50
कुल भाव बल	521	530	442	404	503	524	548	504	413	399	497	550
रूप भाव बल	8.7	8.8	7.4	6.7	8.4	8.7	9.1	8.4	6.9	6.6	8.3	9.2
संबंधित पद	5	3	9	11	7	4	2	6	10	12	8	1

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

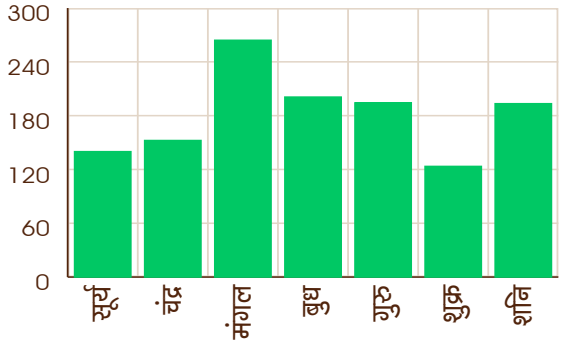

दिग्बल

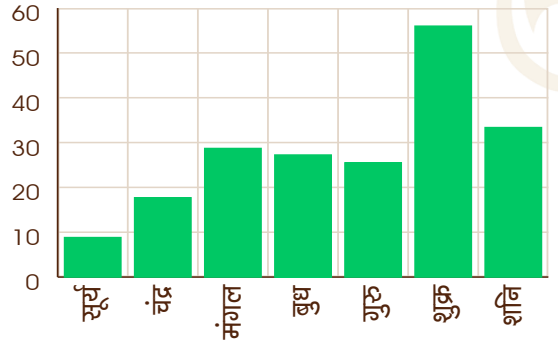

कालबल

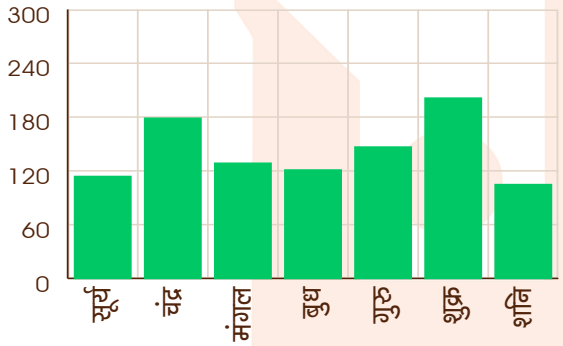

चेष्टाबल

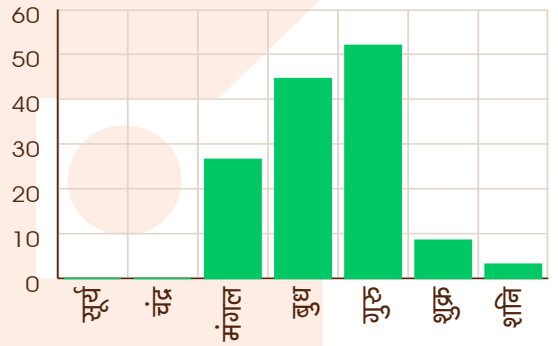

नैसर्गिक बल

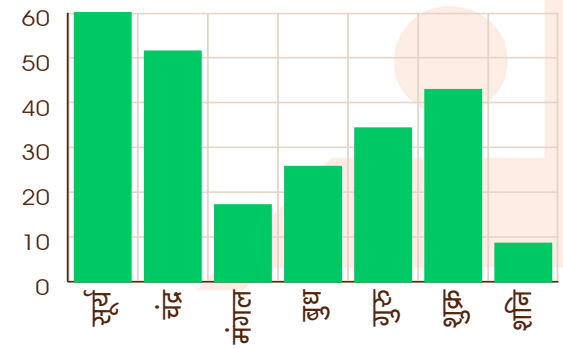

दृग्बल

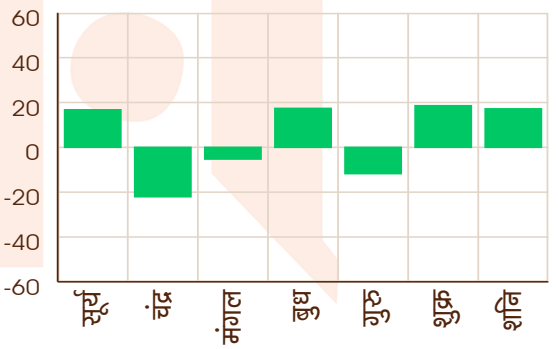

रूप षट्बल

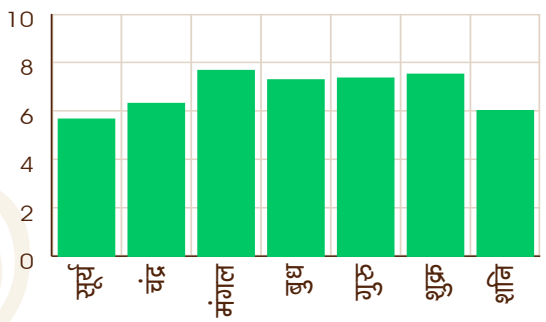

न्यूनतम षट्बल

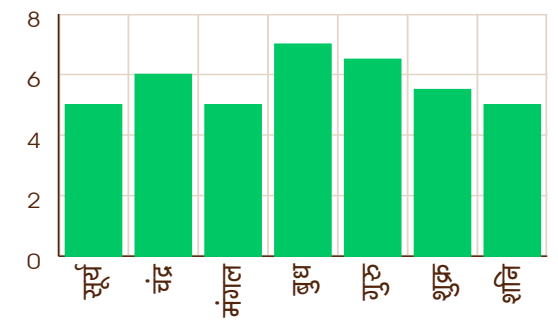

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

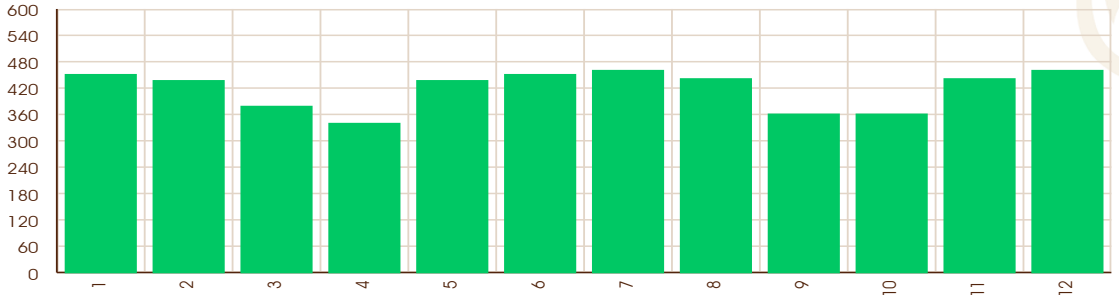

भावदिग्बल

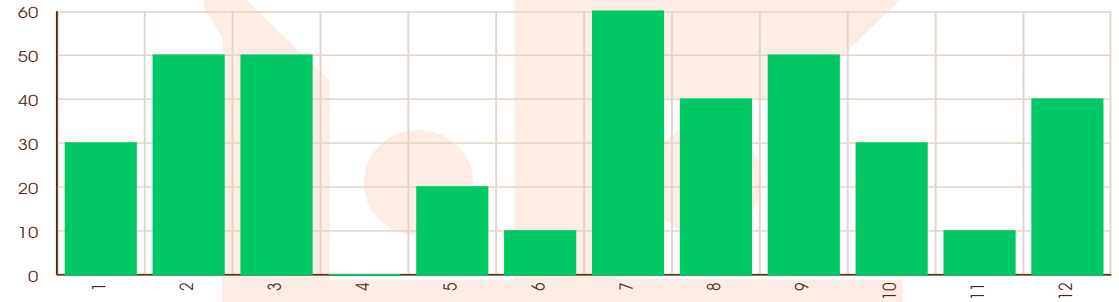

भावदृष्टि बल

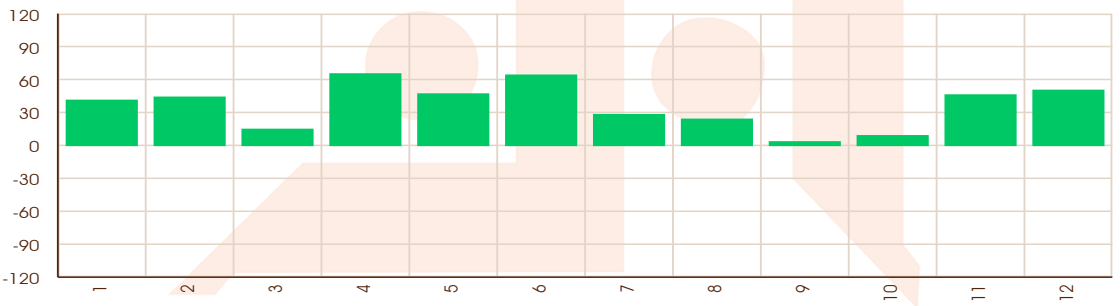

भाव बल

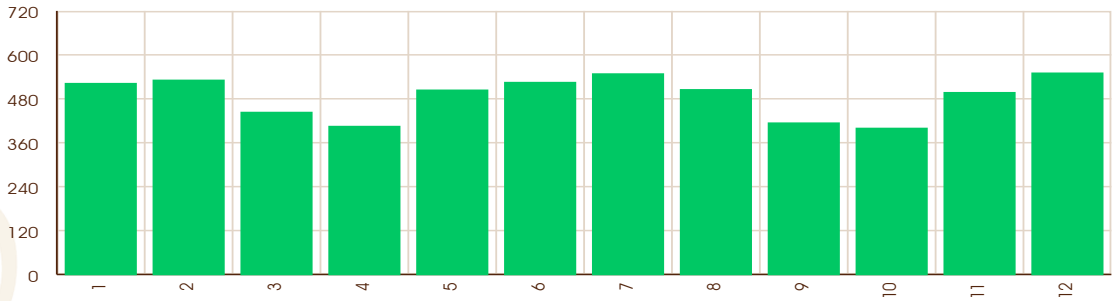

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

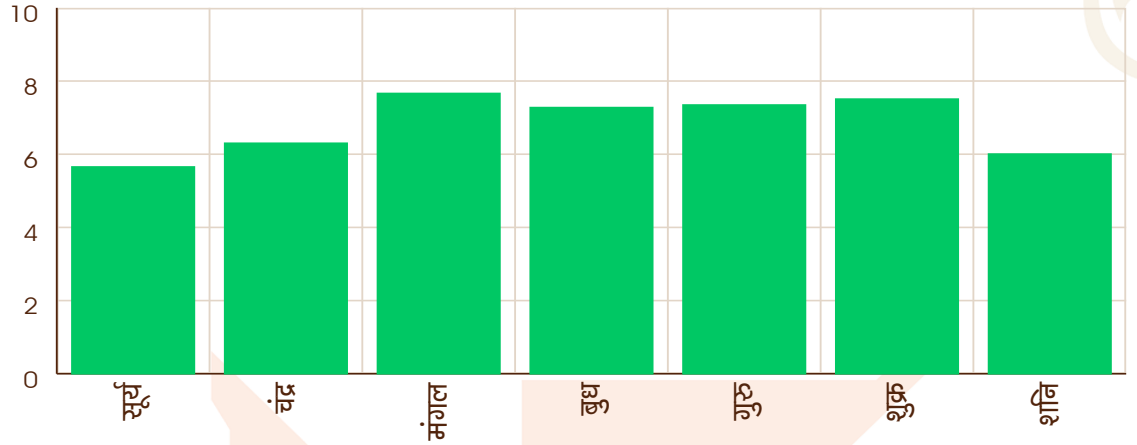

इष्ट - कष्ट फल

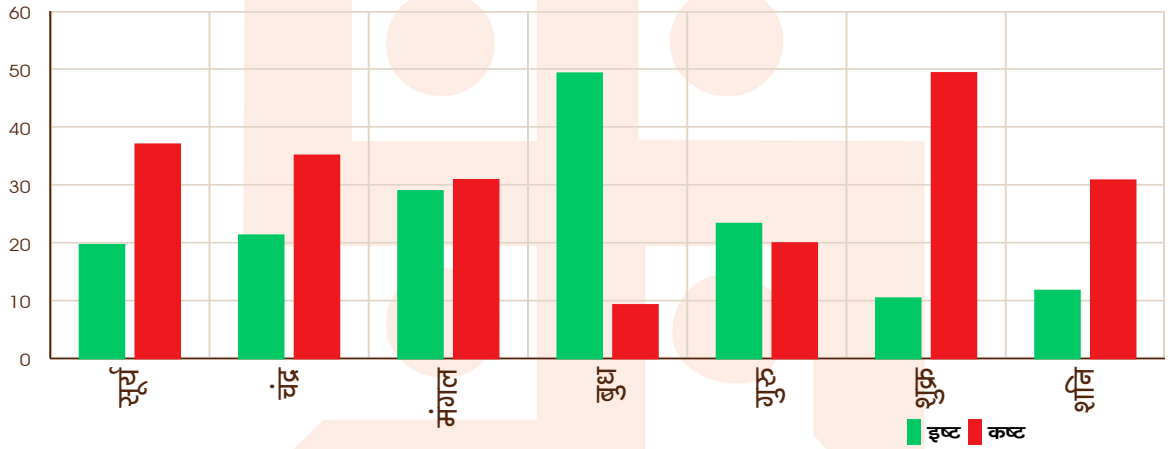

रूप भाव बल

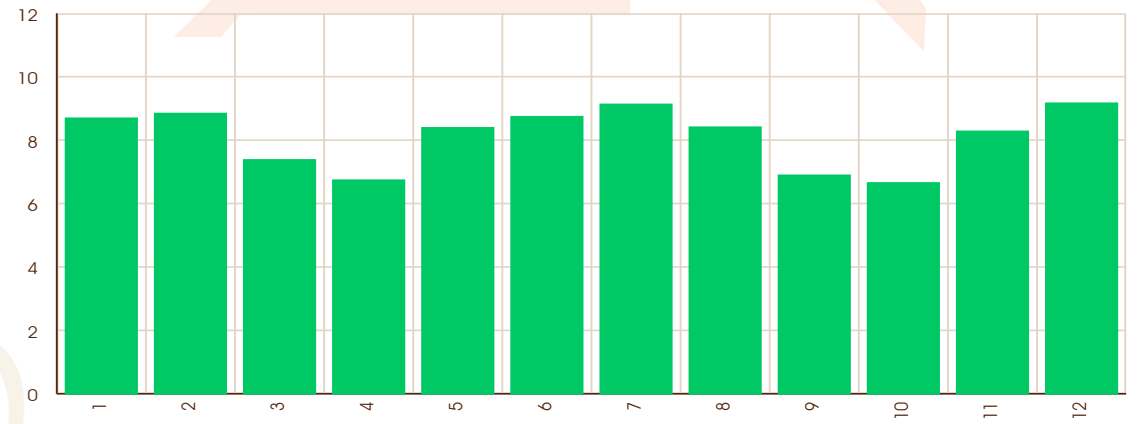

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	19:57:32	--	--	रोहिणी	3	4
गुलिक	गु	मेष	02:58:59	--	--	अश्विनी	1	1
काल	का	मेष	29:39:06	--	--	कृतिका	1	3
मृत्यु	मृ	मिथु	13:06:45	--	--	आर्द्रा	2	6
यमघंटक	यम	कर्क	22:11:56	--	--	आश्लेषा	2	9
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	02:56:14	--	--	पुनर्वसु	4	7
धूम	धू	मक	16:19:12	--	मूल	श्रवण	2	22
व्यतिपात	व्य	मिथु	13:40:48	--	मूल	आर्द्रा	3	6
परिवेश	परि	धनु	13:40:48	नीच	मूल	पूर्वाषाढ़ा	1	20
इन्द्रचाप	इ	कर्क	16:19:12	--	मूल	पुष्य	4	8
उपकेतु	उप	सिंह	02:59:12	नीच	--	मघा	1	10

प्राणपद	:	कन्या	21:29:19	कारकाँश लग्न	:	धनु	29:37:07
भाव लग्न	:	मक	26:53:02	होरा लग्न	:	तुला	03:48:32
घटी लग्न	:	कुंभ	07:36:44	वर्णद लग्न	:	सिंह	06:13:56

उपग्रह कुंडली

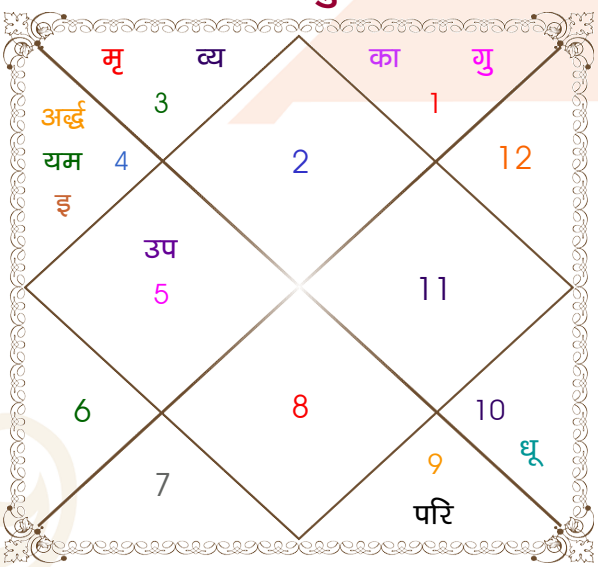

आरूढ़ कुंडली

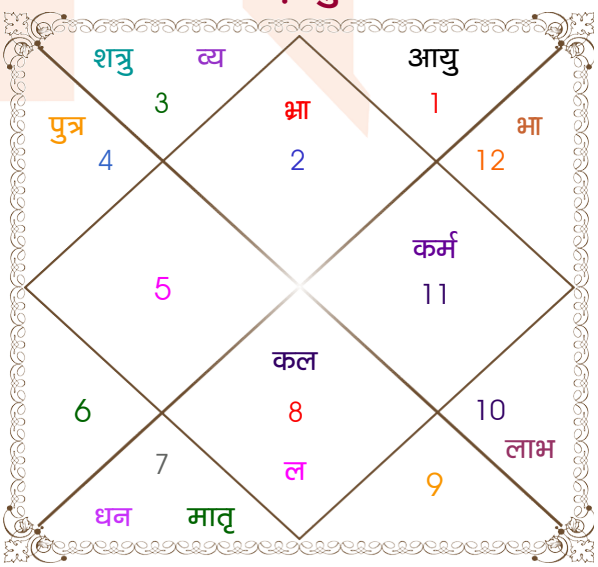

षन्नाडी चक्र

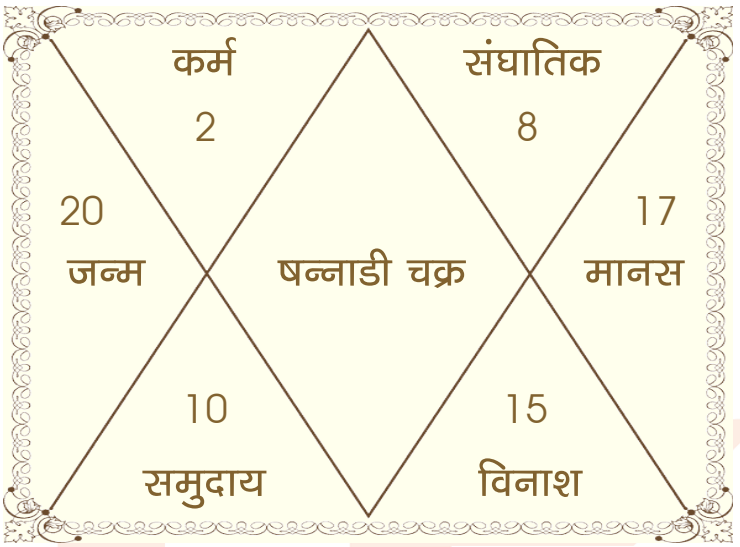

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	4	5	2	4	2	5	3	4	5	5	6	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	6	2	6	5	3	4	5	2	4	3	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
कुल	4	3	4	5	3	1	4	5	4	2	1	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
कुल	6	5	4	3	5	4	4	4	3	6	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
कुल	3	3	5	6	6	2	5	6	4	5	6	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	1	0	1	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	4	4	6	4	6	4	2	4	6	3	5	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	2	2	5	0	3	5	2	4	3	3	5	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	4	3	6	4	5	7	3	3	4	4	2	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	5	5	2	2	5	0	3	5	2	4	39
गुरु	5	6	6	2	5	6	4	5	6	5	3	3	56
मंगल	1	4	5	4	2	1	3	4	3	4	5	3	39
सूर्य	4	5	5	6	3	4	5	2	4	2	5	3	48
शुक्र	6	3	5	4	4	4	6	4	6	4	2	4	52
बुध	3	6	5	5	6	5	4	3	5	4	4	4	54
चंद्र	3	4	5	2	4	3	5	4	6	2	6	5	49
बिन्दु	25	31	36	28	26	25	32	22	33	26	27	26	337
रेखा	31	25	20	28	30	31	24	34	23	30	29	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	3	5	0	0	3	0	1	3	0	4	21
गुरु	0	1	3	0	0	1	1	3	1	0	0	1	11
मंगल	0	3	2	1	1	0	0	1	2	3	2	0	15
सूर्य	1	3	0	4	0	2	0	0	1	0	0	1	12
शुक्र	2	0	3	0	0	1	4	0	2	1	0	0	13
बुध	0	2	1	2	3	1	0	0	2	0	0	1	12
चंद्र	0	2	0	0	1	1	0	2	3	0	1	3	13
रेखा	4	12	12	12	5	6	8	6	12	7	3	10	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	3	5	0	0	2	0	1	3	0	3	19
गुरु	0	0	2	0	0	1	0	3	1	0	0	0	7
मंगल	0	3	2	1	1	0	0	1	2	1	2	0	13
सूर्य	1	3	0	4	0	2	0	0	1	0	0	0	11
शुक्र	2	0	2	0	0	1	4	0	2	1	0	0	12
बुध	0	2	0	2	3	1	0	0	2	0	0	0	10
चंद्र	0	2	0	0	1	1	0	2	3	0	1	0	10
रेखा	4	11	9	12	5	6	6	6	12	5	3	3	82

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	72	89	113	81	54	86	135
ग्रह पिंड	15	63	55	66	34	15	5
शोध्य पिंड	87	152	168	147	88	101	140

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

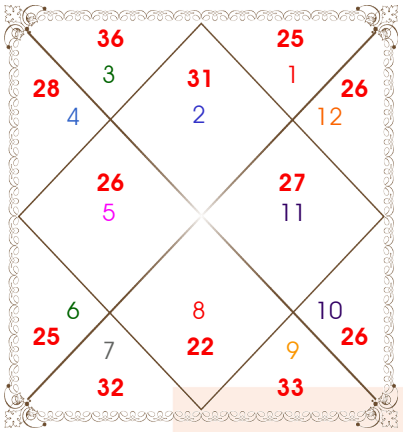

सूर्य का अष्टकवर्ग

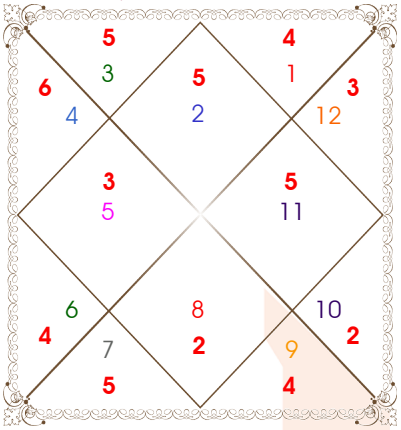

चंद्र का अष्टकवर्ग

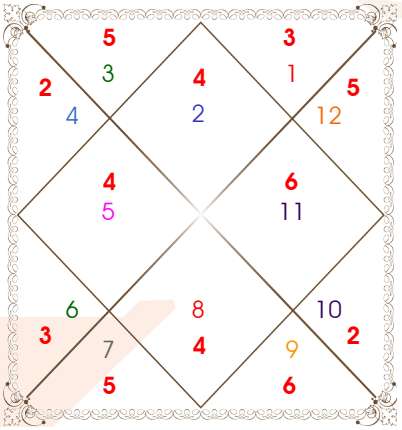

मंगल का अष्टकवर्ग

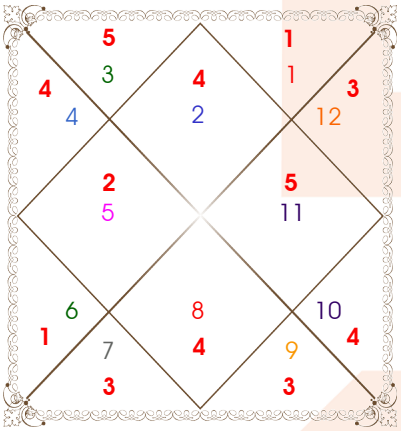

बुध का अष्टकवर्ग

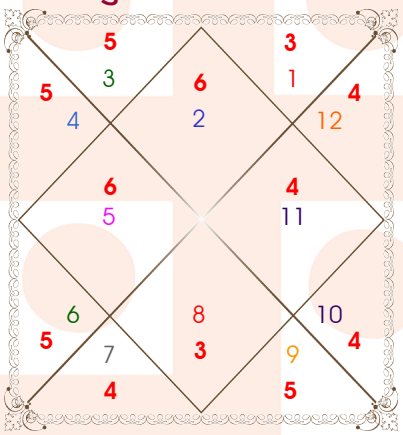

गुरू का अष्टकवर्ग

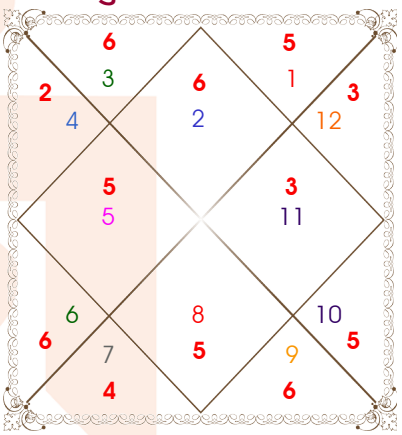

शुक्र का अष्टकवर्ग

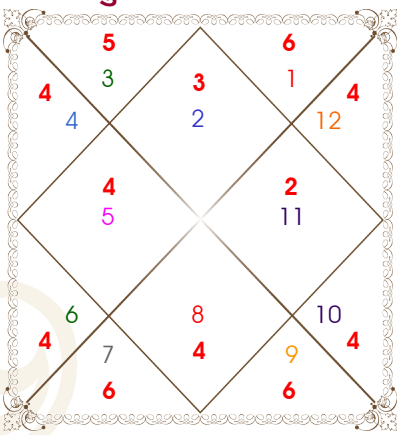

शनि का अष्टकवर्ग

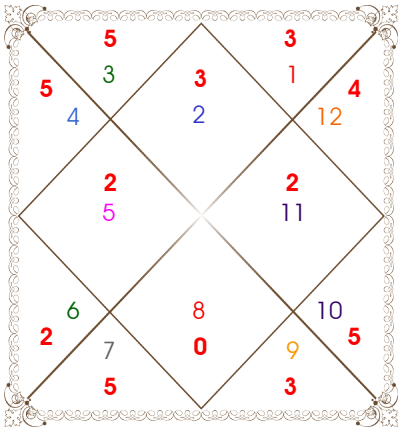

लग्न का अष्टकवर्ग

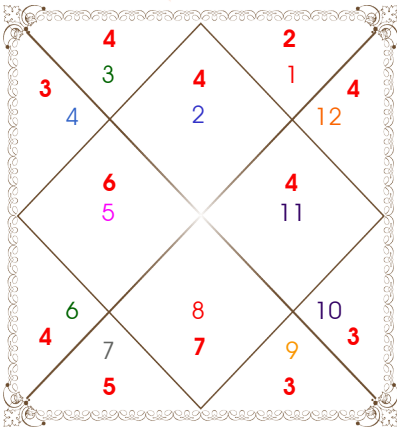

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

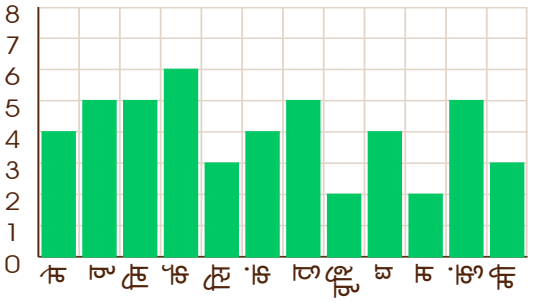

चन्द्र

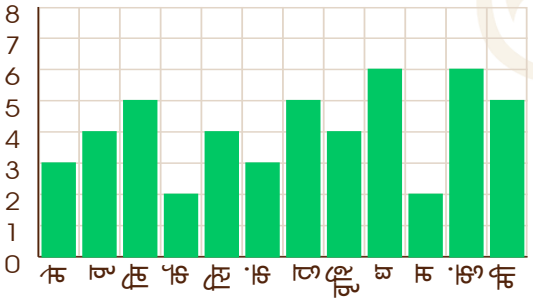

मंगल

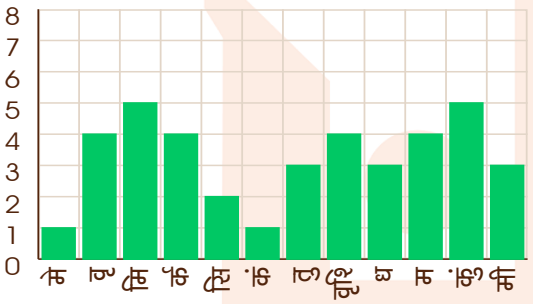

बुध

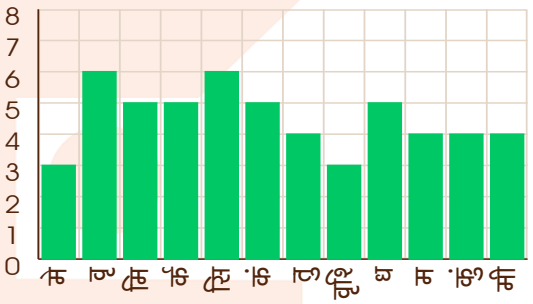

गुरु

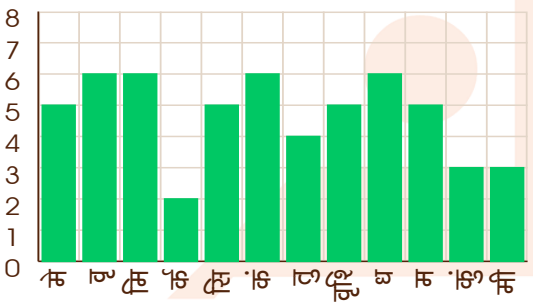

शुक्र

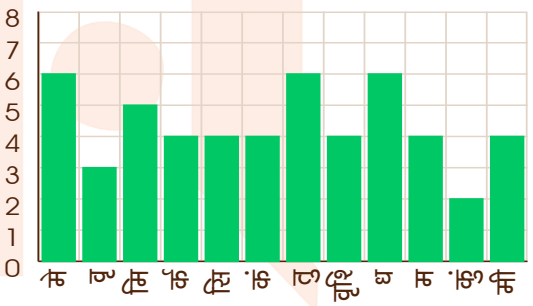

शनि

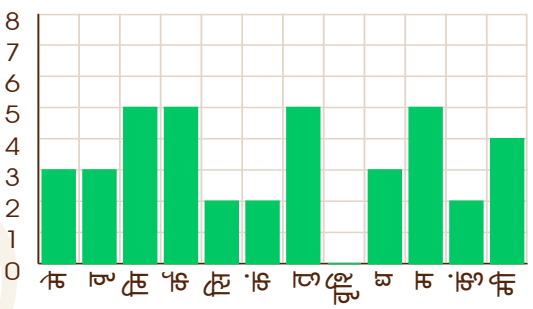

लग्न

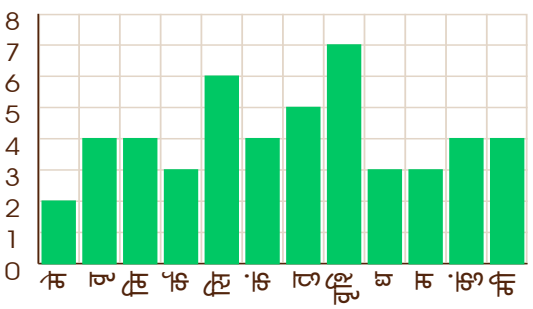

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

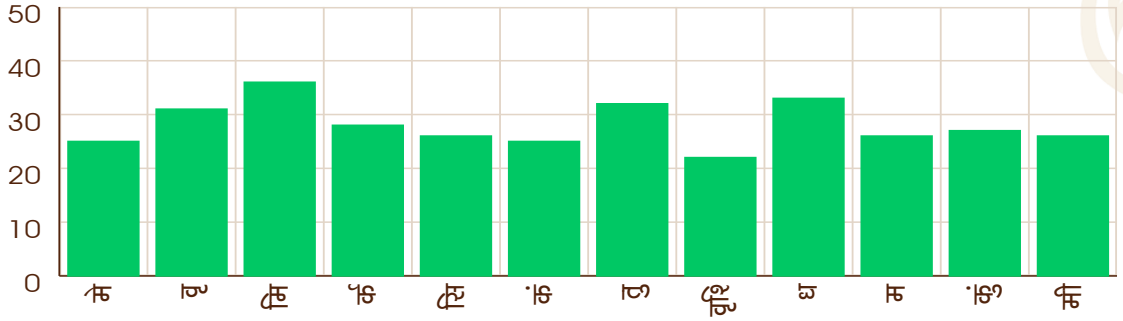

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

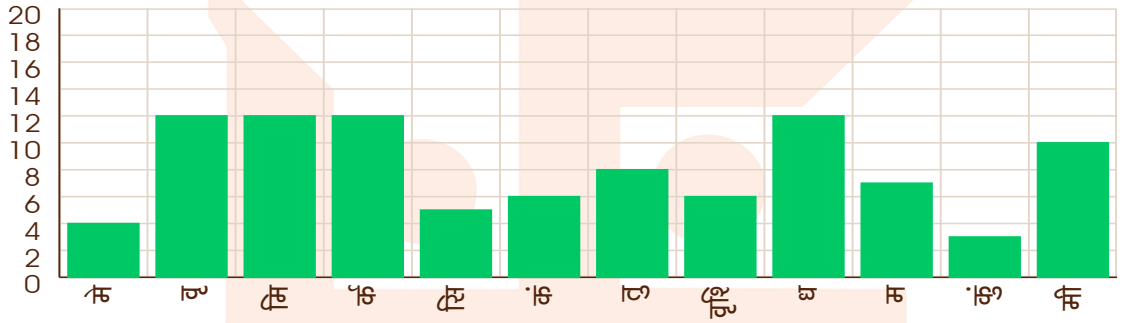

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

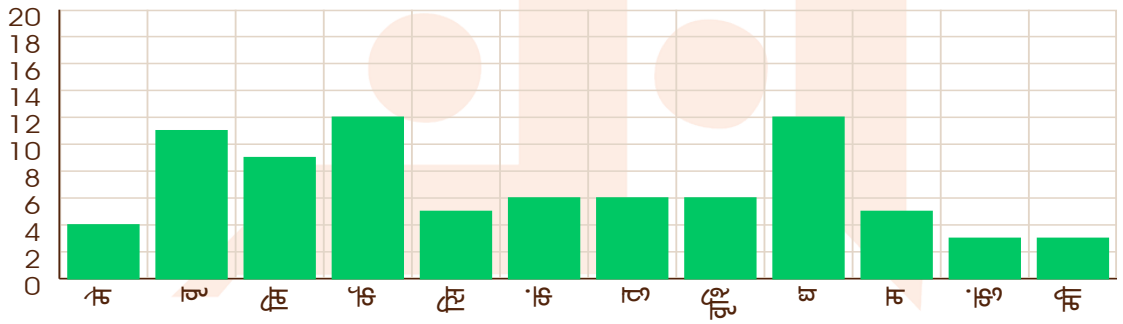

शोध्य पिंड

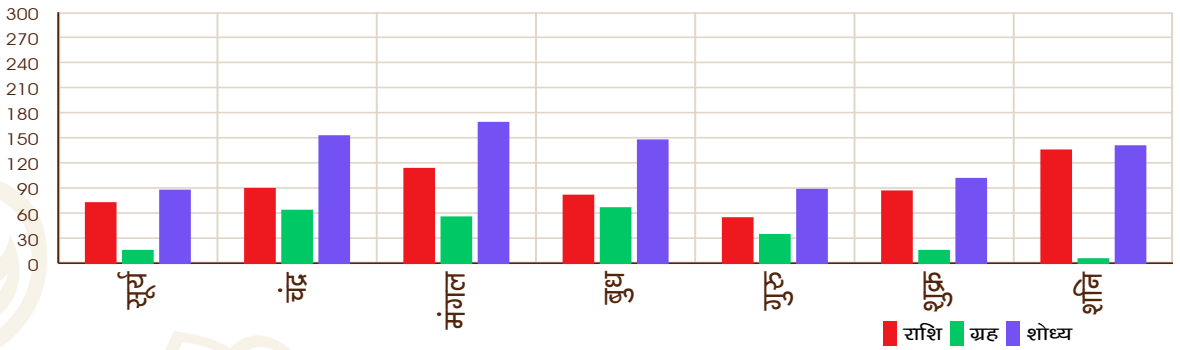

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 19 वर्ष 7 मास 25 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
19/09/1950		16/05/1970		15/05/1976		16/05/1986		16/05/1993	
16/05/1970		15/05/1976		16/05/1986		16/05/1993		16/05/2011	
शुक्र	14/09/1953	सूर्य	02/09/1970	चंद्र	16/03/1977	मंगल	12/10/1986	राहु	27/01/1996
सूर्य	15/09/1954	चंद्र	04/03/1971	मंगल	15/10/1977	राहु	31/10/1987	गुरु	21/06/1998
चंद्र	15/05/1956	मंगल	10/07/1971	राहु	16/04/1979	गुरु	05/10/1988	शनि	27/04/2001
मंगल	15/07/1957	राहु	03/06/1972	गुरु	15/08/1980	शनि	14/11/1989	बुध	15/11/2003
राहु	15/07/1960	गुरु	22/03/1973	शनि	16/03/1982	बुध	11/11/1990	केतु	02/12/2004
गुरु	16/03/1963	शनि	04/03/1974	बुध	15/08/1983	केतु	10/04/1991	शुक्र	03/12/2007
शनि	16/05/1966	बुध	08/01/1975	केतु	15/03/1984	शुक्र	09/06/1992	सूर्य	27/10/2008
बुध	16/03/1969	केतु	16/05/1975	शुक्र	14/11/1985	सूर्य	15/10/1992	चंद्र	28/04/2010
केतु	16/05/1970	शुक्र	15/05/1976	सूर्य	16/05/1986	चंद्र	16/05/1993	मंगल	16/05/2011

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
16/05/2011		16/05/2027		16/05/2046		16/05/2063		16/05/2070	
16/05/2027		16/05/2046		16/05/2063		16/05/2070		00/00/0000	
गुरु	03/07/2013	शनि	19/05/2030	बुध	12/10/2048	केतु	12/10/2063	शुक्र	19/09/2070
शनि	15/01/2016	बुध	26/01/2033	केतु	09/10/2049	शुक्र	11/12/2064		00/00/0000
बुध	22/04/2018	केतु	07/03/2034	शुक्र	09/08/2052	सूर्य	18/04/2065		00/00/0000
केतु	28/03/2019	शुक्र	06/05/2037	सूर्य	15/06/2053	चंद्र	17/11/2065		00/00/0000
शुक्र	26/11/2021	सूर्य	18/04/2038	चंद्र	14/11/2054	मंगल	15/04/2066		00/00/0000
सूर्य	15/09/2022	चंद्र	18/11/2039	मंगल	12/11/2055	राहु	04/05/2067		00/00/0000
चंद्र	15/01/2024	मंगल	27/12/2040	राहु	31/05/2058	गुरु	09/04/2068		00/00/0000
मंगल	21/12/2024	राहु	03/11/2043	गुरु	05/09/2060	शनि	19/05/2069		00/00/0000
राहु	16/05/2027	गुरु	16/05/2046	शनि	16/05/2063	बुध	16/05/2070		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 19 वर्ष 7 मा 26 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
19/09/1950		14/09/1953		15/09/1954		15/05/1956		15/07/1957	
14/09/1953		15/09/1954		15/05/1956		15/07/1957		15/07/1960	
शुक्र	05/12/1950	सूर्य	03/10/1953	चंद्र	04/11/1954	मंगल	09/06/1956	राहु	27/12/1957
सूर्य	04/02/1951	चंद्र	02/11/1953	मंगल	10/12/1954	राहु	12/08/1956	गुरु	22/05/1958
चंद्र	16/05/1951	मंगल	23/11/1953	राहु	11/03/1955	गुरु	08/10/1956	शनि	11/11/1958
मंगल	26/07/1951	राहु	17/01/1954	गुरु	31/05/1955	शनि	14/12/1956	बुध	16/04/1959
राहु	25/01/1952	गुरु	07/03/1954	शनि	05/09/1955	बुध	13/02/1957	केतु	19/06/1959
गुरु	05/07/1952	शनि	04/05/1954	बुध	30/11/1955	केतु	10/03/1957	शुक्र	18/12/1959
शनि	14/01/1953	बुध	24/06/1954	केतु	04/01/1956	शुक्र	20/05/1957	सूर्य	11/02/1960
बुध	05/07/1953	केतु	16/07/1954	शुक्र	15/04/1956	सूर्य	10/06/1957	चंद्र	12/05/1960
केतु	14/09/1953	शुक्र	15/09/1954	सूर्य	15/05/1956	चंद्र	15/07/1957	मंगल	15/07/1960

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
15/07/1960		16/03/1963		16/05/1966		16/03/1969		16/05/1970	
16/03/1963		16/05/1966		16/03/1969		16/05/1970		02/09/1970	
गुरु	22/11/1960	शनि	15/09/1963	बुध	09/10/1966	केतु	10/04/1969	सूर्य	21/05/1970
शनि	25/04/1961	बुध	26/02/1964	केतु	09/12/1966	शुक्र	20/06/1969	चंद्र	30/05/1970
बुध	10/09/1961	केतु	04/05/1964	शुक्र	30/05/1967	सूर्य	11/07/1969	मंगल	06/06/1970
केतु	06/11/1961	शुक्र	12/11/1964	सूर्य	21/07/1967	चंद्र	15/08/1969	राहु	22/06/1970
शुक्र	17/04/1962	सूर्य	09/01/1965	चंद्र	15/10/1967	मंगल	09/09/1969	गुरु	07/07/1970
सूर्य	05/06/1962	चंद्र	16/04/1965	मंगल	15/12/1967	राहु	12/11/1969	शनि	24/07/1970
चंद्र	25/08/1962	मंगल	22/06/1965	राहु	18/05/1968	गुरु	08/01/1970	बुध	09/08/1970
मंगल	21/10/1962	राहु	13/12/1965	गुरु	03/10/1968	शनि	16/03/1970	केतु	15/08/1970
राहु	16/03/1963	गुरु	16/05/1966	शनि	16/03/1969	बुध	16/05/1970	शुक्र	02/09/1970

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
02/09/1970		04/03/1971		10/07/1971		03/06/1972		22/03/1973	
04/03/1971		10/07/1971		03/06/1972		22/03/1973		04/03/1974	
चंद्र	18/09/1970	मंगल	12/03/1971	राहु	28/08/1971	गुरु	12/07/1972	शनि	16/05/1973
मंगल	28/09/1970	राहु	31/03/1971	गुरु	11/10/1971	शनि	27/08/1972	बुध	04/07/1973
राहु	26/10/1970	गुरु	17/04/1971	शनि	02/12/1971	बुध	07/10/1972	केतु	24/07/1973
गुरु	19/11/1970	शनि	07/05/1971	बुध	18/01/1972	केतु	24/10/1972	शुक्र	20/09/1973
शनि	18/12/1970	बुध	25/05/1971	केतु	06/02/1972	शुक्र	12/12/1972	सूर्य	07/10/1973
बुध	13/01/1971	केतु	02/06/1971	शुक्र	01/04/1972	सूर्य	27/12/1972	चंद्र	05/11/1973
केतु	23/01/1971	शुक्र	23/06/1971	सूर्य	17/04/1972	चंद्र	20/01/1973	मंगल	26/11/1973
शुक्र	23/02/1971	सूर्य	29/06/1971	चंद्र	14/05/1972	मंगल	06/02/1973	राहु	17/01/1974
सूर्य	04/03/1971	चंद्र	10/07/1971	मंगल	03/06/1972	राहु	22/03/1973	गुरु	04/03/1974

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
04/03/1974		08/01/1975		16/05/1975		15/05/1976		16/03/1977	
08/01/1975		16/05/1975		15/05/1976		16/03/1977		15/10/1977	
बुध	17/04/1974	केतु	16/01/1975	शुक्र	16/07/1975	चंद्र	10/06/1976	मंगल	28/03/1977
केतु	05/05/1974	शुक्र	06/02/1975	सूर्य	03/08/1975	मंगल	27/06/1976	राहु	29/04/1977
शुक्र	26/06/1974	सूर्य	12/02/1975	चंद्र	03/09/1975	राहु	12/08/1976	गुरु	28/05/1977
सूर्य	11/07/1974	चंद्र	23/02/1975	मंगल	24/09/1975	गुरु	22/09/1976	शनि	30/06/1977
चंद्र	06/08/1974	मंगल	03/03/1975	राहु	18/11/1975	शनि	09/11/1976	बुध	30/07/1977
मंगल	24/08/1974	राहु	22/03/1975	गुरु	05/01/1976	बुध	22/12/1976	केतु	12/08/1977
राहु	10/10/1974	गुरु	08/04/1975	शनि	03/03/1976	केतु	09/01/1977	शुक्र	16/09/1977
गुरु	20/11/1974	शनि	28/04/1975	बुध	24/04/1976	शुक्र	01/03/1977	सूर्य	27/09/1977
शनि	08/01/1975	बुध	16/05/1975	केतु	15/05/1976	सूर्य	16/03/1977	चंद्र	15/10/1977

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
15/10/1977		16/04/1979		15/08/1980		16/03/1982		15/08/1983	
16/04/1979		15/08/1980		16/03/1982		15/08/1983		15/03/1984	
राहु	05/01/1978	गुरु	20/06/1979	शनि	14/11/1980	बुध	28/05/1982	केतु	28/08/1983
गुरु	19/03/1978	शनि	05/09/1979	बुध	04/02/1981	केतु	27/06/1982	शुक्र	02/10/1983
शनि	14/06/1978	बुध	13/11/1979	केतु	10/03/1981	शुक्र	22/09/1982	सूर्य	13/10/1983
बुध	30/08/1978	केतु	11/12/1979	शुक्र	14/06/1981	सूर्य	18/10/1982	चंद्र	31/10/1983
केतु	01/10/1978	शुक्र	01/03/1980	सूर्य	13/07/1981	चंद्र	30/11/1982	मंगल	12/11/1983
शुक्र	01/01/1979	सूर्य	26/03/1980	चंद्र	30/08/1981	मंगल	30/12/1982	राहु	14/12/1983
सूर्य	28/01/1979	चंद्र	05/05/1980	मंगल	03/10/1981	राहु	18/03/1983	गुरु	12/01/1984
चंद्र	15/03/1979	मंगल	03/06/1980	राहु	29/12/1981	गुरु	26/05/1983	शनि	14/02/1984
मंगल	16/04/1979	राहु	15/08/1980	गुरु	16/03/1982	शनि	15/08/1983	बुध	15/03/1984

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
15/03/1984		14/11/1985		16/05/1986		12/10/1986		31/10/1987	
14/11/1985		16/05/1986		12/10/1986		31/10/1987		05/10/1988	
शुक्र	25/06/1984	सूर्य	23/11/1985	मंगल	25/05/1986	राहु	09/12/1986	गुरु	15/12/1987
सूर्य	25/07/1984	चंद्र	09/12/1985	राहु	16/06/1986	गुरु	29/01/1987	शनि	07/02/1988
चंद्र	14/09/1984	मंगल	19/12/1985	गुरु	06/07/1986	शनि	30/03/1987	बुध	26/03/1988
मंगल	20/10/1984	राहु	16/01/1986	शनि	29/07/1986	बुध	24/05/1987	केतु	15/04/1988
राहु	19/01/1985	गुरु	09/02/1986	बुध	20/08/1986	केतु	15/06/1987	शुक्र	11/06/1988
गुरु	10/04/1985	शनि	10/03/1986	केतु	28/08/1986	शुक्र	18/08/1987	सूर्य	28/06/1988
शनि	15/07/1985	बुध	05/04/1986	शुक्र	22/09/1986	सूर्य	06/09/1987	चंद्र	26/07/1988
बुध	10/10/1985	केतु	15/04/1986	सूर्य	30/09/1986	चंद्र	08/10/1987	मंगल	15/08/1988
केतु	14/11/1985	शुक्र	16/05/1986	चंद्र	12/10/1986	मंगल	31/10/1987	राहु	05/10/1988

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
05/10/1988		14/11/1989		11/11/1990		10/04/1991		09/06/1992	
14/11/1989		11/11/1990		10/04/1991		09/06/1992		15/10/1992	
शनि	09/12/1988	बुध	05/01/1990	केतु	20/11/1990	शुक्र	20/06/1991	सूर्य	15/06/1992
बुध	04/02/1989	केतु	26/01/1990	शुक्र	15/12/1990	सूर्य	11/07/1991	चंद्र	26/06/1992
केतु	27/02/1989	शुक्र	27/03/1990	सूर्य	22/12/1990	चंद्र	15/08/1991	मंगल	03/07/1992
शुक्र	06/05/1989	सूर्य	14/04/1990	चंद्र	04/01/1991	मंगल	09/09/1991	राहु	22/07/1992
सूर्य	26/05/1989	चंद्र	14/05/1990	मंगल	13/01/1991	राहु	12/11/1991	गुरु	08/08/1992
चंद्र	29/06/1989	मंगल	04/06/1990	राहु	04/02/1991	गुरु	08/01/1992	शनि	29/08/1992
मंगल	23/07/1989	राहु	29/07/1990	गुरु	24/02/1991	शनि	15/03/1992	बुध	16/09/1992
राहु	21/09/1989	गुरु	15/09/1990	शनि	19/03/1991	बुध	15/05/1992	केतु	23/09/1992
गुरु	14/11/1989	शनि	11/11/1990	बुध	10/04/1991	केतु	09/06/1992	शुक्र	15/10/1992

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
15/10/1992		16/05/1993		27/01/1996		21/06/1998		27/04/2001	
16/05/1993		27/01/1996		21/06/1998		27/04/2001		15/11/2003	
चंद्र	01/11/1992	राहु	11/10/1993	गुरु	23/05/1996	शनि	03/12/1998	बुध	06/09/2001
मंगल	14/11/1992	गुरु	19/02/1994	शनि	08/10/1996	बुध	30/04/1999	केतु	31/10/2001
राहु	16/12/1992	शनि	25/07/1994	बुध	10/02/1997	केतु	29/06/1999	शुक्र	04/04/2002
गुरु	13/01/1993	बुध	12/12/1994	केतु	02/04/1997	शुक्र	20/12/1999	सूर्य	20/05/2002
शनि	16/02/1993	केतु	07/02/1995	शुक्र	26/08/1997	सूर्य	10/02/2000	चंद्र	06/08/2002
बुध	18/03/1993	शुक्र	22/07/1995	सूर्य	09/10/1997	चंद्र	07/05/2000	मंगल	29/09/2002
केतु	30/03/1993	सूर्य	09/09/1995	चंद्र	21/12/1997	मंगल	06/07/2000	राहु	16/02/2003
शुक्र	05/05/1993	चंद्र	30/11/1995	मंगल	10/02/1998	राहु	10/12/2000	गुरु	20/06/2003
सूर्य	16/05/1993	मंगल	27/01/1996	राहु	21/06/1998	गुरु	27/04/2001	शनि	15/11/2003

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
15/11/2003		02/12/2004		03/12/2007		27/10/2008		28/04/2010	
02/12/2004		03/12/2007		27/10/2008		28/04/2010		16/05/2011	
केतु	07/12/2003	शुक्र	03/06/2005	सूर्य	19/12/2007	चंद्र	11/12/2008	मंगल	20/05/2010
शुक्र	09/02/2004	सूर्य	28/07/2005	चंद्र	16/01/2008	मंगल	12/01/2009	राहु	17/07/2010
सूर्य	28/02/2004	चंद्र	27/10/2005	मंगल	04/02/2008	राहु	05/04/2009	गुरु	06/09/2010
चंद्र	31/03/2004	मंगल	30/12/2005	राहु	24/03/2008	गुरु	17/06/2009	शनि	05/11/2010
मंगल	23/04/2004	राहु	12/06/2006	गुरु	07/05/2008	शनि	11/09/2009	बुध	30/12/2010
राहु	19/06/2004	गुरु	05/11/2006	शनि	28/06/2008	बुध	28/11/2009	केतु	21/01/2011
गुरु	09/08/2004	शनि	28/04/2007	बुध	14/08/2008	केतु	30/12/2009	शुक्र	26/03/2011
शनि	09/10/2004	बुध	30/09/2007	केतु	02/09/2008	शुक्र	31/03/2010	सूर्य	14/04/2011
बुध	02/12/2004	केतु	03/12/2007	शुक्र	27/10/2008	सूर्य	28/04/2010	चंद्र	16/05/2011

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
16/05/2011		03/07/2013		15/01/2016		22/04/2018		28/03/2019	
03/07/2013		15/01/2016		22/04/2018		28/03/2019		26/11/2021	
गुरु	28/08/2011	शनि	27/11/2013	बुध	11/05/2016	केतु	11/05/2018	शुक्र	07/09/2019
शनि	29/12/2011	बुध	07/04/2014	केतु	28/06/2016	शुक्र	07/07/2018	सूर्य	25/10/2019
बुध	18/04/2012	केतु	31/05/2014	शुक्र	13/11/2016	सूर्य	24/07/2018	चंद्र	15/01/2020
केतु	02/06/2012	शुक्र	01/11/2014	सूर्य	25/12/2016	चंद्र	22/08/2018	मंगल	11/03/2020
शुक्र	10/10/2012	सूर्य	17/12/2014	चंद्र	04/03/2017	मंगल	11/09/2018	राहु	05/08/2020
सूर्य	18/11/2012	चंद्र	04/03/2015	मंगल	21/04/2017	राहु	01/11/2018	गुरु	12/12/2020
चंद्र	22/01/2013	मंगल	27/04/2015	राहु	23/08/2017	गुरु	16/12/2018	शनि	16/05/2021
मंगल	08/03/2013	राहु	13/09/2015	गुरु	11/12/2017	शनि	08/02/2019	बुध	01/10/2021
राहु	03/07/2013	गुरु	15/01/2016	शनि	22/04/2018	बुध	28/03/2019	केतु	26/11/2021

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
26/11/2021		15/09/2022		15/01/2024		21/12/2024		16/05/2027	
15/09/2022		15/01/2024		21/12/2024		16/05/2027		19/05/2030	
सूर्य	11/12/2021	चंद्र	25/10/2022	मंगल	04/02/2024	राहु	01/05/2025	शनि	06/11/2027
चंद्र	04/01/2022	मंगल	23/11/2022	राहु	26/03/2024	गुरु	26/08/2025	बुध	10/04/2028
मंगल	21/01/2022	राहु	04/02/2023	गुरु	10/05/2024	शनि	12/01/2026	केतु	13/06/2028
राहु	06/03/2022	गुरु	10/04/2023	शनि	03/07/2024	बुध	16/05/2026	शुक्र	13/12/2028
गुरु	14/04/2022	शनि	26/06/2023	बुध	20/08/2024	केतु	06/07/2026	सूर्य	06/02/2029
शनि	30/05/2022	बुध	03/09/2023	केतु	09/09/2024	शुक्र	29/11/2026	चंद्र	08/05/2029
बुध	11/07/2022	केतु	01/10/2023	शुक्र	05/11/2024	सूर्य	12/01/2027	मंगल	12/07/2029
केतु	28/07/2022	शुक्र	21/12/2023	सूर्य	22/11/2024	चंद्र	26/03/2027	राहु	23/12/2029
शुक्र	15/09/2022	सूर्य	15/01/2024	चंद्र	21/12/2024	मंगल	16/05/2027	गुरु	19/05/2030

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
19/05/2030		26/01/2033		07/03/2034		06/05/2037		18/04/2038	
26/01/2033		07/03/2034		06/05/2037		18/04/2038		18/11/2039	
बुध	05/10/2030	केतु	19/02/2033	शुक्र	16/09/2034	सूर्य	24/05/2037	चंद्र	06/06/2038
केतु	02/12/2030	शुक्र	27/04/2033	सूर्य	12/11/2034	चंद्र	22/06/2037	मंगल	09/07/2038
शुक्र	14/05/2031	सूर्य	17/05/2033	चंद्र	17/02/2035	मंगल	12/07/2037	राहु	04/10/2038
सूर्य	03/07/2031	चंद्र	20/06/2033	मंगल	25/04/2035	राहु	02/09/2037	गुरु	20/12/2038
चंद्र	22/09/2031	मंगल	14/07/2033	राहु	16/10/2035	गुरु	18/10/2037	शनि	22/03/2039
मंगल	19/11/2031	राहु	12/09/2033	गुरु	18/03/2036	शनि	12/12/2037	बुध	12/06/2039
राहु	14/04/2032	गुरु	05/11/2033	शनि	17/09/2036	बुध	30/01/2038	केतु	15/07/2039
गुरु	23/08/2032	शनि	09/01/2034	बुध	28/02/2037	केतु	20/02/2038	शुक्र	20/10/2039
शनि	26/01/2033	बुध	07/03/2034	केतु	06/05/2037	शुक्र	18/04/2038	सूर्य	18/11/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
18/11/2039		27/12/2040		03/11/2043		16/05/2046		12/10/2048	
27/12/2040		03/11/2043		16/05/2046		12/10/2048		09/10/2049	
मंगल	11/12/2039	राहु	01/06/2041	गुरु	05/03/2044	बुध	17/09/2046	केतु	02/11/2048
राहु	10/02/2040	गुरु	18/10/2041	शनि	29/07/2044	केतु	08/11/2046	शुक्र	01/01/2049
गुरु	04/04/2040	शनि	31/03/2042	बुध	08/12/2044	शुक्र	03/04/2047	सूर्य	19/01/2049
शनि	07/06/2040	बुध	26/08/2042	केतु	31/01/2045	सूर्य	17/05/2047	चंद्र	18/02/2049
बुध	04/08/2040	केतु	26/10/2042	शुक्र	04/07/2045	चंद्र	30/07/2047	मंगल	11/03/2049
केतु	27/08/2040	शुक्र	17/04/2043	सूर्य	19/08/2045	मंगल	19/09/2047	राहु	05/05/2049
शुक्र	03/11/2040	सूर्य	08/06/2043	चंद्र	04/11/2045	राहु	29/01/2048	गुरु	22/06/2049
सूर्य	23/11/2040	चंद्र	03/09/2043	मंगल	28/12/2045	गुरु	25/05/2048	शनि	18/08/2049
चंद्र	27/12/2040	मंगल	03/11/2043	राहु	16/05/2046	शनि	12/10/2048	बुध	09/10/2049

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
09/10/2049		09/08/2052		15/06/2053		14/11/2054		12/11/2055	
09/08/2052		15/06/2053		14/11/2054		12/11/2055		31/05/2058	
शुक्र	30/03/2050	सूर्य	24/08/2052	चंद्र	28/07/2053	मंगल	06/12/2054	राहु	30/03/2056
सूर्य	21/05/2050	चंद्र	19/09/2052	मंगल	27/08/2053	राहु	29/01/2055	गुरु	02/08/2056
चंद्र	15/08/2050	मंगल	07/10/2052	राहु	13/11/2053	गुरु	18/03/2055	शनि	27/12/2056
मंगल	15/10/2050	राहु	23/11/2052	गुरु	21/01/2054	शनि	15/05/2055	बुध	08/05/2057
राहु	19/03/2051	गुरु	03/01/2053	शनि	13/04/2054	बुध	05/07/2055	केतु	01/07/2057
गुरु	04/08/2051	शनि	21/02/2053	बुध	25/06/2054	केतु	26/07/2055	शुक्र	04/12/2057
शनि	15/01/2052	बुध	06/04/2053	केतु	25/07/2054	शुक्र	24/09/2055	सूर्य	19/01/2058
बुध	09/06/2052	केतु	24/04/2053	शुक्र	20/10/2054	सूर्य	13/10/2055	चंद्र	07/04/2058
केतु	09/08/2052	शुक्र	15/06/2053	सूर्य	14/11/2054	चंद्र	12/11/2055	मंगल	31/05/2058

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
31/05/2058		05/09/2060		16/05/2063		12/10/2063		11/12/2064	
05/09/2060		16/05/2063		12/10/2063		11/12/2064		18/04/2065	
गुरु	18/09/2058	शनि	08/02/2061	केतु	25/05/2063	शुक्र	22/12/2063	सूर्य	18/12/2064
शनि	28/01/2059	बुध	27/06/2061	शुक्र	19/06/2063	सूर्य	13/01/2064	चंद्र	28/12/2064
बुध	25/05/2059	केतु	23/08/2061	सूर्य	26/06/2063	चंद्र	17/02/2064	मंगल	05/01/2065
केतु	12/07/2059	शुक्र	03/02/2062	चंद्र	09/07/2063	मंगल	13/03/2064	राहु	24/01/2065
शुक्र	27/11/2059	सूर्य	24/03/2062	मंगल	17/07/2063	राहु	16/05/2064	गुरु	10/02/2065
सूर्य	08/01/2060	चंद्र	14/06/2062	राहु	09/08/2063	गुरु	12/07/2064	शनि	02/03/2065
चंद्र	17/03/2060	मंगल	11/08/2062	गुरु	29/08/2063	शनि	17/09/2064	बुध	20/03/2065
मंगल	04/05/2060	राहु	05/01/2063	शनि	21/09/2063	बुध	17/11/2064	केतु	28/03/2065
राहु	05/09/2060	गुरु	16/05/2063	बुध	12/10/2063	केतु	11/12/2064	शुक्र	18/04/2065

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - राहु - बुध		गुरु - राहु - केतु		गुरु - राहु - शुक्र		गुरु - राहु - सूर्य	
12/01/2026 04:21		16/05/2026 08:47		06/07/2026 12:02		29/11/2026 14:26	
16/05/2026 08:47		06/07/2026 12:02		29/11/2026 14:26		12/01/2027 10:21	
बुध	29/01/2026 18:34	केतु	19/05/2026 08:22	शुक्र	30/07/2026 20:26	सूर्य	01/12/2026 19:01
केतु	06/02/2026 00:26	शुक्र	27/05/2026 20:55	सूर्य	07/08/2026 03:45	चंद्र	05/12/2026 10:41
शुक्र	26/02/2026 17:10	सूर्य	30/05/2026 10:17	चंद्र	19/08/2026 07:57	मंगल	08/12/2026 00:03
सूर्य	04/03/2026 22:12	चंद्र	03/06/2026 16:33	मंगल	27/08/2026 20:29	राहु	14/12/2026 13:50
चंद्र	15/03/2026 06:34	मंगल	06/06/2026 16:08	राहु	18/09/2026 18:27	गुरु	20/12/2026 10:05
मंगल	22/03/2026 12:25	राहु	14/06/2026 08:13	गुरु	08/10/2026 05:58	शनि	27/12/2026 08:39
राहु	10/04/2026 03:29	गुरु	21/06/2026 03:51	शनि	31/10/2026 09:09	बुध	02/01/2027 13:40
गुरु	26/04/2026 16:53	शनि	29/06/2026 06:10	बुध	21/11/2026 01:53	केतु	05/01/2027 03:02
शनि	16/05/2026 08:47	बुध	06/07/2026 12:02	केतु	29/11/2026 14:26	शुक्र	12/01/2027 10:21

गुरु - राहु - चंद्र		गुरु - राहु - मंगल		शनि - शनि - शनि		शनि - शनि - बुध	
12/01/2027 10:21		26/03/2027 11:33		16/05/2027 14:47		06/11/2027 14:12	
26/03/2027 11:33		16/05/2027 14:47		06/11/2027 14:12		10/04/2028 06:06	
चंद्र	18/01/2027 12:27	मंगल	29/03/2027 11:08	शनि	13/06/2027 03:54	बुध	28/11/2027 15:27
मंगल	22/01/2027 18:43	राहु	06/04/2027 03:13	बुध	07/07/2027 19:25	केतु	07/12/2027 17:23
राहु	02/02/2027 17:42	गुरु	12/04/2027 22:51	केतु	17/07/2027 22:59	शुक्र	02/01/2028 16:02
गुरु	12/02/2027 11:27	शनि	21/04/2027 01:10	शुक्र	15/08/2027 22:53	सूर्य	10/01/2028 10:50
शनि	24/02/2027 01:03	बुध	28/04/2027 07:01	सूर्य	24/08/2027 15:39	चंद्र	23/01/2028 10:09
बुध	06/03/2027 09:25	केतु	01/05/2027 06:37	चंद्र	08/09/2027 03:36	मंगल	01/02/2028 12:05
केतु	10/03/2027 15:41	शुक्र	09/05/2027 19:09	मंगल	18/09/2027 07:10	राहु	24/02/2028 20:28
शुक्र	22/03/2027 19:53	सूर्य	12/05/2027 08:31	राहु	14/10/2027 09:29	गुरु	16/03/2028 14:35
सूर्य	26/03/2027 11:33	चंद्र	16/05/2027 14:47	गुरु	06/11/2027 14:12	शनि	10/04/2028 06:06

शनि - शनि - केतु		शनि - शनि - शुक्र		शनि - शनि - सूर्य		शनि - शनि - चंद्र	
10/04/2028 06:06		13/06/2028 08:25		13/12/2028 11:35		06/02/2029 10:08	
13/06/2028 08:25		13/12/2028 11:35		06/02/2029 10:08		08/05/2029 23:44	
केतु	13/04/2028 23:50	शुक्र	13/07/2028 20:56	सूर्य	16/12/2028 05:31	चंद्र	14/02/2029 01:16
शुक्र	24/04/2028 16:13	सूर्य	23/07/2028 00:42	चंद्र	20/12/2028 19:24	मंगल	19/02/2029 09:28
सूर्य	27/04/2028 21:08	चंद्र	07/08/2028 06:58	मंगल	24/12/2028 00:19	राहु	05/03/2029 03:06
चंद्र	03/05/2028 05:20	मंगल	17/08/2028 23:21	राहु	01/01/2029 06:06	गुरु	17/03/2029 08:07
मंगल	06/05/2028 23:04	राहु	14/09/2028 10:38	गुरु	08/01/2029 13:54	शनि	31/03/2029 20:04
राहु	16/05/2028 13:49	गुरु	08/10/2028 20:39	शनि	17/01/2029 06:40	बुध	13/04/2029 19:23
गुरु	25/05/2028 02:55	शनि	06/11/2028 20:33	बुध	25/01/2029 01:28	केतु	19/04/2029 03:35
शनि	04/06/2028 06:29	बुध	02/12/2028 19:12	केतु	28/01/2029 06:23	शुक्र	04/05/2029 09:51
बुध	13/06/2028 08:25	केतु	13/12/2028 11:35	शुक्र	06/02/2029 10:08	सूर्य	08/05/2029 23:44

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शनि - मंगल	
08/05/2029 23:44	
12/07/2029 02:02	
मंगल	12/05/2029 17:28
राहु	22/05/2029 08:13
गुरु	30/05/2029 21:19
शनि	10/06/2029 00:53
बुध	19/06/2029 02:49
केतु	22/06/2029 20:33
शुक्र	03/07/2029 12:56
सूर्य	06/07/2029 17:51
चंद्र	12/07/2029 02:02

शनि - शनि - राहु	
12/07/2029 02:02	
23/12/2029 21:42	
राहु	05/08/2029 19:23
गुरु	27/08/2029 18:48
शनि	22/09/2029 21:07
बुध	16/10/2029 05:30
केतु	25/10/2029 20:15
शुक्र	22/11/2029 07:32
सूर्य	30/11/2029 13:19
चंद्र	14/12/2029 06:57
मंगल	23/12/2029 21:42

शनि - शनि - गुरु	
23/12/2029 21:42	
19/05/2030 09:50	
गुरु	12/01/2030 10:31
शनि	04/02/2030 15:14
बुध	25/02/2030 09:21
केतु	05/03/2030 22:28
शुक्र	30/03/2030 08:29
सूर्य	06/04/2030 16:18
चंद्र	18/04/2030 21:18
मंगल	27/04/2030 10:25
राहु	19/05/2030 09:50

शनि - बुध - बुध	
19/05/2030 09:50	
05/10/2030 16:29	
बुध	08/06/2030 03:23
केतु	16/06/2030 06:22
शुक्र	09/07/2030 11:28
सूर्य	16/07/2030 10:36
चंद्र	28/07/2030 01:10
मंगल	05/08/2030 04:09
राहु	26/08/2030 01:33
गुरु	13/09/2030 15:14
शनि	05/10/2030 16:29

शनि - बुध - केतु	
05/10/2030 16:29	
02/12/2030 00:52	
केतु	09/10/2030 00:46
शुक्र	18/10/2030 14:10
सूर्य	21/10/2030 10:59
चंद्र	26/10/2030 05:41
मंगल	29/10/2030 13:59
राहु	07/11/2030 04:26
गुरु	14/11/2030 19:57
शनि	23/11/2030 21:53
बुध	02/12/2030 00:52

शनि - बुध - शुक्र	
02/12/2030 00:52	
14/05/2031 21:23	
शुक्र	29/12/2030 08:17
सूर्य	06/01/2031 12:55
चंद्र	20/01/2031 04:37
मंगल	29/01/2031 18:01
राहु	23/02/2031 07:54
गुरु	17/03/2031 04:14
शनि	12/04/2031 02:53
बुध	05/05/2031 08:00
केतु	14/05/2031 21:23

शनि - बुध - सूर्य	
14/05/2031 21:23	
03/07/2031 01:09	
सूर्य	17/05/2031 08:23
चंद्र	21/05/2031 10:42
मंगल	24/05/2031 07:31
राहु	31/05/2031 16:28
गुरु	07/06/2031 05:47
शनि	15/06/2031 00:34
बुध	21/06/2031 23:42
केतु	24/06/2031 20:31
शुक्र	03/07/2031 01:09

शनि - बुध - चंद्र	
03/07/2031 01:09	
22/09/2031 23:25	
चंद्र	09/07/2031 21:00
मंगल	14/07/2031 15:42
राहु	26/07/2031 22:38
गुरु	06/08/2031 20:49
शनि	19/08/2031 20:08
बुध	31/08/2031 10:41
केतु	05/09/2031 05:23
शुक्र	18/09/2031 21:06
सूर्य	22/09/2031 23:25

शनि - बुध - मंगल	
22/09/2031 23:25	
19/11/2031 07:48	
मंगल	26/09/2031 07:42
राहु	04/10/2031 22:09
गुरु	12/10/2031 13:41
शनि	21/10/2031 15:36
बुध	29/10/2031 18:35
केतु	02/11/2031 02:53
शुक्र	11/11/2031 16:17
सूर्य	14/11/2031 13:06
चंद्र	19/11/2031 07:48

शनि - बुध - राहु	
19/11/2031 07:48	
14/04/2032 19:04	
राहु	11/12/2031 10:41
गुरु	31/12/2031 02:35
शनि	23/01/2032 10:58
बुध	13/02/2032 08:22
केतु	21/02/2032 22:50
शुक्र	17/03/2032 12:42
सूर्य	24/03/2032 21:40
चंद्र	06/04/2032 04:37
मंगल	14/04/2032 19:04

शनि - बुध - गुरु	
14/04/2032 19:04	
23/08/2032 21:05	
गुरु	02/05/2032 06:32
शनि	23/05/2032 00:39
बुध	10/06/2032 14:21
केतु	18/06/2032 05:52
शुक्र	10/07/2032 02:12
सूर्य	16/07/2032 15:30
चंद्र	27/07/2032 13:40
मंगल	04/08/2032 05:11
राहु	23/08/2032 21:05

शनि - बुध - शनि	
23/08/2032 21:05	
26/01/2033 12:59	
शनि	17/09/2032 12:36
बुध	09/10/2032 13:51
केतु	18/10/2032 15:47
शुक्र	13/11/2032 14:26
सूर्य	21/11/2032 09:14
चंद्र	04/12/2032 08:33
मंगल	13/12/2032 10:29
राहु	05/01/2033 18:52
गुरु	26/01/2033 12:59

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - केतु - केतु		शनि - केतु - शुक्र		शनि - केतु - सूर्य		शनि - केतु - चंद्र	
26/01/2033 12:59		19/02/2033 03:44		27/04/2033 15:00		17/05/2033 20:47	
19/02/2033 03:44		27/04/2033 15:00		17/05/2033 20:47		20/06/2033 14:26	
केतु	27/01/2033 22:03	शुक्र	02/03/2033 09:37	सूर्य	28/04/2033 15:18	चंद्र	20/05/2033 16:16
शुक्र	31/01/2033 20:30	सूर्य	05/03/2033 18:34	चंद्र	30/04/2033 07:47	मंगल	22/05/2033 15:29
सूर्य	02/02/2033 00:50	चंद्र	11/03/2033 09:31	मंगल	01/05/2033 12:07	राहु	27/05/2033 16:56
चंद्र	04/02/2033 00:04	मंगल	15/03/2033 07:58	राहु	04/05/2033 12:59	गुरु	01/06/2033 04:53
मंगल	05/02/2033 09:08	राहु	25/03/2033 10:52	गुरु	07/05/2033 05:45	शनि	06/06/2033 13:05
राहु	08/02/2033 22:09	गुरु	03/04/2033 10:46	शनि	10/05/2033 10:40	बुध	11/06/2033 07:47
गुरु	12/02/2033 01:42	शनि	14/04/2033 03:09	बुध	13/05/2033 07:29	केतु	13/06/2033 07:00
शनि	15/02/2033 19:27	बुध	23/04/2033 16:33	केतु	14/05/2033 11:50	शुक्र	18/06/2033 21:57
बुध	19/02/2033 03:44	केतु	27/04/2033 15:00	शुक्र	17/05/2033 20:47	सूर्य	20/06/2033 14:26

शनि - केतु - मंगल		शनि - केतु - राहु		शनि - केतु - गुरु		शनि - केतु - शनि	
20/06/2033 14:26		14/07/2033 05:10		12/09/2033 22:31		05/11/2033 21:56	
14/07/2033 05:10		12/09/2033 22:31		05/11/2033 21:56		09/01/2034 00:15	
मंगल	21/06/2033 23:29	राहु	23/07/2033 07:47	गुरु	20/09/2033 03:15	शनि	16/11/2033 01:30
राहु	25/06/2033 12:30	गुरु	31/07/2033 10:05	शनि	28/09/2033 16:21	बुध	25/11/2033 03:26
गुरु	28/06/2033 16:04	शनि	10/08/2033 00:50	बुध	06/10/2033 07:52	केतु	28/11/2033 21:10
शनि	02/07/2033 09:48	बुध	18/08/2033 15:18	केतु	09/10/2033 11:26	शुक्र	09/12/2033 13:33
बुध	05/07/2033 18:05	केतु	22/08/2033 04:18	शुक्र	18/10/2033 11:20	सूर्य	12/12/2033 18:28
केतु	07/07/2033 03:09	शुक्र	01/09/2033 07:12	सूर्य	21/10/2033 04:07	चंद्र	18/12/2033 02:40
शुक्र	11/07/2033 01:36	सूर्य	04/09/2033 08:04	चंद्र	25/10/2033 16:04	मंगल	21/12/2033 20:24
सूर्य	12/07/2033 05:57	चंद्र	09/09/2033 09:31	मंगल	28/10/2033 19:38	राहु	31/12/2033 11:09
चंद्र	14/07/2033 05:10	मंगल	12/09/2033 22:31	राहु	05/11/2033 21:56	गुरु	09/01/2034 00:15

शनि - केतु - बुध		शनि - शुक्र - शुक्र		शनि - शुक्र - सूर्य		शनि - शुक्र - चंद्र	
09/01/2034 00:15		07/03/2034 08:38		16/09/2034 03:08		12/11/2034 23:05	
07/03/2034 08:38		16/09/2034 03:08		12/11/2034 23:05		17/02/2035 08:20	
बुध	17/01/2034 03:14	शुक्र	08/04/2034 11:43	सूर्य	19/09/2034 00:32	चंद्र	20/11/2034 23:51
केतु	20/01/2034 11:32	सूर्य	18/04/2034 03:03	चंद्र	23/09/2034 20:12	मंगल	26/11/2034 14:48
शुक्र	30/01/2034 00:56	चंद्र	04/05/2034 04:35	मंगल	27/09/2034 05:10	राहु	11/12/2034 01:47
सूर्य	01/02/2034 21:45	मंगल	15/05/2034 10:28	राहु	05/10/2034 21:21	गुरु	23/12/2034 22:13
चंद्र	06/02/2034 16:27	राहु	13/06/2034 08:26	गुरु	13/10/2034 14:25	शनि	08/01/2035 04:29
मंगल	10/02/2034 00:44	गुरु	09/07/2034 01:18	शनि	22/10/2034 18:10	बुध	21/01/2035 20:12
राहु	18/02/2034 15:11	शनि	08/08/2034 13:50	बुध	30/10/2034 22:48	केतु	27/01/2035 11:08
गुरु	26/02/2034 06:42	बुध	04/09/2034 21:15	केतु	03/11/2034 07:46	शुक्र	12/02/2035 12:40
शनि	07/03/2034 08:38	केतु	16/09/2034 03:08	शुक्र	12/11/2034 23:05	सूर्य	17/02/2035 08:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - मंगल	
17/02/2035 08:20	
25/04/2035 19:37	
मंगल	21/02/2035 06:48
राहु	03/03/2035 09:41
गुरु	12/03/2035 09:35
शनि	23/03/2035 01:58
बुध	01/04/2035 15:22
केतु	05/04/2035 13:50
शुक्र	16/04/2035 19:42
सूर्य	20/04/2035 04:40
चंद्र	25/04/2035 19:37

शनि - शुक्र - राहु	
25/04/2035 19:37	
16/10/2035 07:28	
राहु	21/05/2035 20:11
गुरु	13/06/2035 23:22
शनि	11/07/2035 10:39
बुध	05/08/2035 00:31
केतु	15/08/2035 03:25
शुक्र	13/09/2035 01:23
सूर्य	21/09/2035 17:35
चंद्र	06/10/2035 04:34
मंगल	16/10/2035 07:28

शनि - शुक्र - गुरु	
16/10/2035 07:28	
18/03/2036 12:40	
गुरु	05/11/2035 20:57
शनि	30/11/2035 06:59
बुध	22/12/2035 03:19
केतु	31/12/2035 03:13
शुक्र	25/01/2036 20:05
सूर्य	02/02/2036 13:09
चंद्र	15/02/2036 09:35
मंगल	24/02/2036 09:29
राहु	18/03/2036 12:40

शनि - शुक्र - शनि	
18/03/2036 12:40	
17/09/2036 15:50	
शनि	16/04/2036 12:34
बुध	12/05/2036 11:13
केतु	23/05/2036 03:36
शुक्र	22/06/2036 16:08
सूर्य	01/07/2036 19:53
चंद्र	17/07/2036 02:09
मंगल	27/07/2036 18:32
राहु	24/08/2036 05:49
गुरु	17/09/2036 15:50

शनि - शुक्र - बुध	
17/09/2036 15:50	
28/02/2037 12:22	
बुध	10/10/2036 20:57
केतु	20/10/2036 10:20
शुक्र	16/11/2036 17:46
सूर्य	24/11/2036 22:23
चंद्र	08/12/2036 14:06
मंगल	18/12/2036 03:30
राहु	11/01/2037 17:22
गुरु	02/02/2037 13:43
शनि	28/02/2037 12:22

शनि - शुक्र - केतु	
28/02/2037 12:22	
06/05/2037 23:38	
केतु	04/03/2037 10:49
शुक्र	15/03/2037 16:42
सूर्य	19/03/2037 01:40
चंद्र	24/03/2037 16:36
मंगल	28/03/2037 15:04
राहु	07/04/2037 17:57
गुरु	16/04/2037 17:51
शनि	27/04/2037 10:14
बुध	06/05/2037 23:38

शनि - सूर्य - सूर्य	
06/05/2037 23:38	
24/05/2037 08:01	
सूर्य	07/05/2037 20:27
चंद्र	09/05/2037 07:09
मंगल	10/05/2037 07:27
राहु	12/05/2037 21:54
गुरु	15/05/2037 05:25
शनि	17/05/2037 23:21
बुध	20/05/2037 10:20
केतु	21/05/2037 10:37
शुक्र	24/05/2037 08:01

शनि - सूर्य - चंद्र	
24/05/2037 08:01	
22/06/2037 06:00	
चंद्र	26/05/2037 17:51
मंगल	28/05/2037 10:20
राहु	01/06/2037 18:26
गुरु	05/06/2037 14:58
शनि	10/06/2037 04:50
बुध	14/06/2037 07:09
केतु	15/06/2037 23:38
शुक्र	20/06/2037 19:18
सूर्य	22/06/2037 06:00

शनि - सूर्य - मंगल	
22/06/2037 06:00	
12/07/2037 11:47	
मंगल	23/06/2037 10:20
राहु	26/06/2037 11:12
गुरु	29/06/2037 03:58
शनि	02/07/2037 08:53
बुध	05/07/2037 05:42
केतु	06/07/2037 10:03
शुक्र	09/07/2037 19:00
सूर्य	10/07/2037 19:18
चंद्र	12/07/2037 11:47

शनि - सूर्य - राहु	
12/07/2037 11:47	
02/09/2037 12:56	
राहु	20/07/2037 07:09
गुरु	27/07/2037 05:42
शनि	04/08/2037 11:29
बुध	11/08/2037 20:27
केतु	14/08/2037 21:19
शुक्र	23/08/2037 13:31
सूर्य	26/08/2037 03:58
चंद्र	30/08/2037 12:04
मंगल	02/09/2037 12:56

शनि - सूर्य - गुरु	
02/09/2037 12:56	
18/10/2037 19:18	
गुरु	08/09/2037 16:59
शनि	16/09/2037 00:47
बुध	22/09/2037 14:05
केतु	25/09/2037 06:52
शुक्र	02/10/2037 23:55
सूर्य	05/10/2037 07:26
चंद्र	09/10/2037 03:58
मंगल	11/10/2037 20:44
राहु	18/10/2037 19:18

शनि - सूर्य - शनि	
18/10/2037 19:18	
12/12/2037 17:51	
शनि	27/10/2037 12:04
बुध	04/11/2037 06:52
केतु	07/11/2037 11:46
शुक्र	16/11/2037 15:32
सूर्य	19/11/2037 09:28
चंद्र	23/11/2037 23:20
मंगल	27/11/2037 04:15
राहु	05/12/2037 10:02
गुरु	12/12/2037 17:51

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - राहु - बुध - राहु	
22/03/2026 12:25	
10/04/2026 03:29	
राहु	25/03/2026 07:29
गुरु	27/03/2026 19:06
शनि	30/03/2026 17:53
बुध	02/04/2026 09:13
केतु	03/04/2026 11:18
शुक्र	06/04/2026 13:48
सूर्य	07/04/2026 12:09
चंद्र	09/04/2026 01:25
मंगल	10/04/2026 03:29

गुरु - राहु - बुध - गुरु	
10/04/2026 03:29	
26/04/2026 16:53	
गुरु	12/04/2026 08:29
शनि	14/04/2026 23:24
बुध	17/04/2026 07:42
केतु	18/04/2026 06:53
शुक्र	21/04/2026 01:06
सूर्य	21/04/2026 20:59
चंद्र	23/04/2026 06:06
मंगल	24/04/2026 05:16
राहु	26/04/2026 16:53

गुरु - राहु - बुध - शनि	
26/04/2026 16:53	
16/05/2026 08:47	
शनि	29/04/2026 19:36
बुध	02/05/2026 14:27
केतु	03/05/2026 17:59
शुक्र	07/05/2026 00:38
सूर्य	08/05/2026 00:14
चंद्र	09/05/2026 15:33
मंगल	10/05/2026 19:05
राहु	13/05/2026 17:52
गुरु	16/05/2026 08:47

गुरु - राहु - केतु - केतु	
16/05/2026 08:47	
19/05/2026 08:22	
केतु	16/05/2026 12:58
शुक्र	17/05/2026 00:54
सूर्य	17/05/2026 04:28
चंद्र	17/05/2026 10:26
मंगल	17/05/2026 14:37
राहु	18/05/2026 01:21
गुरु	18/05/2026 10:54
शनि	18/05/2026 22:14
बुध	19/05/2026 08:22

गुरु - राहु - केतु - शुक्र	
19/05/2026 08:22	
27/05/2026 20:55	
शुक्र	20/05/2026 18:28
सूर्य	21/05/2026 04:42
चंद्र	21/05/2026 21:44
मंगल	22/05/2026 09:40
राहु	23/05/2026 16:21
गुरु	24/05/2026 19:37
शनि	26/05/2026 04:00
बुध	27/05/2026 08:59
केतु	27/05/2026 20:55

गुरु - राहु - केतु - सूर्य	
27/05/2026 20:55	
30/05/2026 10:17	
सूर्य	27/05/2026 23:59
चंद्र	28/05/2026 05:06
मंगल	28/05/2026 08:41
राहु	28/05/2026 17:53
गुरु	29/05/2026 02:04
शनि	29/05/2026 11:47
बुध	29/05/2026 20:28
केतु	30/05/2026 00:03
शुक्र	30/05/2026 10:17

गुरु - राहु - केतु - चंद्र	
30/05/2026 10:17	
03/06/2026 16:33	
चंद्र	30/05/2026 18:48
मंगल	31/05/2026 00:46
राहु	31/05/2026 16:06
गुरु	01/06/2026 05:44
शनि	01/06/2026 21:56
बुध	02/06/2026 12:25
केतु	02/06/2026 18:23
शुक्र	03/06/2026 11:26
सूर्य	03/06/2026 16:33

गुरु - राहु - केतु - मंगल	
03/06/2026 16:33	
06/06/2026 16:08	
मंगल	03/06/2026 20:43
राहु	04/06/2026 07:28
गुरु	04/06/2026 17:00
शनि	05/06/2026 04:20
बुध	05/06/2026 14:29
केतु	05/06/2026 18:40
शुक्र	06/06/2026 06:35
सूर्य	06/06/2026 10:10
चंद्र	06/06/2026 16:08

गुरु - राहु - केतु - राहु	
06/06/2026 16:08	
14/06/2026 08:13	
राहु	07/06/2026 19:45
गुरु	08/06/2026 20:18
शनि	10/06/2026 01:26
बुध	11/06/2026 03:31
केतु	11/06/2026 14:15
शुक्र	12/06/2026 20:56
सूर्य	13/06/2026 06:09
चंद्र	13/06/2026 21:29
मंगल	14/06/2026 08:13

गुरु - राहु - केतु - गुरु	
14/06/2026 08:13	
21/06/2026 03:51	
गुरु	15/06/2026 06:02
शनि	16/06/2026 07:57
बुध	17/06/2026 07:08
केतु	17/06/2026 16:40
शुक्र	18/06/2026 19:57
सूर्य	19/06/2026 04:08
चंद्र	19/06/2026 17:46
मंगल	20/06/2026 03:19
राहु	21/06/2026 03:51

गुरु - राहु - केतु - शनि	
21/06/2026 03:51	
29/06/2026 06:10	
शनि	22/06/2026 10:37
बुध	23/06/2026 14:09
केतु	24/06/2026 01:29
शुक्र	25/06/2026 09:52
सूर्य	25/06/2026 19:35
चंद्र	26/06/2026 11:47
मंगल	26/06/2026 23:07
राहु	28/06/2026 04:16
गुरु	29/06/2026 06:10

गुरु - राहु - केतु - बुध	
29/06/2026 06:10	
06/07/2026 12:02	
बुध	30/06/2026 06:48
केतु	30/06/2026 16:56
शुक्र	01/07/2026 21:55
सूर्य	02/07/2026 06:36
चंद्र	02/07/2026 21:06
मंगल	03/07/2026 07:14
राहु	04/07/2026 09:19
गुरु	05/07/2026 08:30
शनि	06/07/2026 12:02

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - राहु - शुक्र - शुक्र		गुरु - राहु - शुक्र - सूर्य		गुरु - राहु - शुक्र - चंद्र		गुरु - राहु - शुक्र - मंगल	
06/07/2026 12:02		30/07/2026 20:26		07/08/2026 03:45		19/08/2026 07:57	
30/07/2026 20:26		07/08/2026 03:45		19/08/2026 07:57		27/08/2026 20:29	
शुक्र	10/07/2026 13:26	सूर्य	31/07/2026 05:12	चंद्र	08/08/2026 04:06	मंगल	19/08/2026 19:53
सूर्य	11/07/2026 18:39	चंद्र	31/07/2026 19:48	मंगल	08/08/2026 21:08	राहु	21/08/2026 02:33
चंद्र	13/07/2026 19:21	मंगल	01/08/2026 06:02	राहु	10/08/2026 16:58	गुरु	22/08/2026 05:50
मंगल	15/07/2026 05:26	राहु	02/08/2026 08:20	गुरु	12/08/2026 07:56	शनि	23/08/2026 14:13
राहु	18/07/2026 21:06	गुरु	03/08/2026 07:42	शनि	14/08/2026 06:12	बुध	24/08/2026 19:12
गुरु	22/07/2026 03:01	शनि	04/08/2026 11:28	बुध	15/08/2026 23:35	केतु	25/08/2026 07:07
शनि	25/07/2026 23:33	बुध	05/08/2026 12:18	केतु	16/08/2026 16:38	शुक्र	26/08/2026 17:13
बुध	29/07/2026 10:20	केतु	05/08/2026 22:32	शुक्र	18/08/2026 17:20	सूर्य	27/08/2026 03:26
केतु	30/07/2026 20:26	शुक्र	07/08/2026 03:45	सूर्य	19/08/2026 07:57	चंद्र	27/08/2026 20:29

गुरु - राहु - शुक्र - राहु		गुरु - राहु - शुक्र - गुरु		गुरु - राहु - शुक्र - शनि		गुरु - राहु - शुक्र - बुध	
27/08/2026 20:29		18/09/2026 18:27		08/10/2026 05:58		31/10/2026 09:09	
18/09/2026 18:27		08/10/2026 05:58		31/10/2026 09:09		21/11/2026 01:53	
राहु	31/08/2026 03:23	गुरु	21/09/2026 08:47	शनि	11/10/2026 21:52	बुध	03/11/2026 07:31
गुरु	03/09/2026 01:30	शनि	24/09/2026 10:48	बुध	15/10/2026 04:31	केतु	04/11/2026 12:30
शनि	06/09/2026 12:47	बुध	27/09/2026 05:02	केतु	16/10/2026 12:54	शुक्र	07/11/2026 23:17
बुध	09/09/2026 15:18	केतु	28/09/2026 08:19	शुक्र	20/10/2026 09:26	सूर्य	09/11/2026 00:07
केतु	10/09/2026 21:59	शुक्र	01/10/2026 14:14	सूर्य	21/10/2026 13:12	चंद्र	10/11/2026 17:31
शुक्र	14/09/2026 13:38	सूर्य	02/10/2026 13:36	चंद्र	23/10/2026 11:28	मंगल	11/11/2026 22:30
सूर्य	15/09/2026 15:56	चंद्र	04/10/2026 04:34	मंगल	24/10/2026 19:51	राहु	15/11/2026 01:00
चंद्र	17/09/2026 11:46	मंगल	05/10/2026 07:50	राहु	28/10/2026 07:07	गुरु	17/11/2026 19:14
मंगल	18/09/2026 18:27	राहु	08/10/2026 05:58	गुरु	31/10/2026 09:09	शनि	21/11/2026 01:53

गुरु - राहु - शुक्र - केतु		गुरु - राहु - सूर्य - सूर्य		गुरु - राहु - सूर्य - चंद्र		गुरु - राहु - सूर्य - मंगल	
21/11/2026 01:53		29/11/2026 14:26		01/12/2026 19:01		05/12/2026 10:41	
29/11/2026 14:26		01/12/2026 19:01		05/12/2026 10:41		08/12/2026 00:03	
केतु	21/11/2026 13:49	सूर्य	29/11/2026 17:03	चंद्र	02/12/2026 02:20	मंगल	05/12/2026 14:16
शुक्र	22/11/2026 23:54	चंद्र	29/11/2026 21:26	मंगल	02/12/2026 07:26	राहु	05/12/2026 23:28
सूर्य	23/11/2026 10:08	मंगल	30/11/2026 00:30	राहु	02/12/2026 20:35	गुरु	06/12/2026 07:39
चंद्र	24/11/2026 03:11	राहु	30/11/2026 08:24	गुरु	03/12/2026 08:17	शनि	06/12/2026 17:22
मंगल	24/11/2026 15:07	गुरु	30/11/2026 15:25	शनि	03/12/2026 22:09	बुध	07/12/2026 02:03
राहु	25/11/2026 21:48	शनि	30/11/2026 23:44	बुध	04/12/2026 10:35	केतु	07/12/2026 05:38
गुरु	27/11/2026 01:04	बुध	01/12/2026 07:11	केतु	04/12/2026 15:41	शुक्र	07/12/2026 15:52
शनि	28/11/2026 09:27	केतु	01/12/2026 10:15	शुक्र	05/12/2026 06:18	सूर्य	07/12/2026 18:56
बुध	29/11/2026 14:26	शुक्र	01/12/2026 19:01	सूर्य	05/12/2026 10:41	चंद्र	08/12/2026 00:03

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 14 वर्ष 8 मास 26 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
19/09/1950		16/06/1965		16/06/1981		17/06/1998		16/06/2016	
16/06/1965		16/06/1981		17/06/1998		16/06/2016		17/06/2027	
केतु	25/05/1952	चंद्र	31/08/1967	बुध	13/12/1983	शुक्र	02/04/2001	सूर्य	02/07/2017
चंद्र	20/06/1954	बुध	04/01/1970	शुक्र	03/08/1986	सूर्य	16/12/2002	मंगल	22/08/2018
बुध	31/08/1956	शुक्र	29/06/1972	सूर्य	14/03/1988	मंगल	26/10/2004	गुरु	15/11/2019
शुक्र	29/12/1958	सूर्य	04/01/1974	मंगल	16/12/1989	गुरु	02/11/2006	शनि	14/03/2021
सूर्य	31/05/1960	मंगल	31/08/1975	गुरु	12/11/1991	शनि	04/01/2009	केतु	15/08/2022
मंगल	19/12/1961	गुरु	16/06/1977	शनि	30/11/1993	केतु	04/05/2011	चंद्र	21/02/2024
गुरु	25/08/1963	शनि	23/05/1979	केतु	11/02/1996	चंद्र	26/10/2013	बुध	01/10/2025
शनि	16/06/1965	केतु	16/06/1981	चंद्र	17/06/1998	बुध	16/06/2016	शुक्र	17/06/2027

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
17/06/2027		17/06/2039		16/06/2052		17/06/2066	
17/06/2039		16/06/2052		17/06/2066		00/00/0000	
मंगल	12/09/2028	गुरु	30/11/2040	शनि	23/02/2054	केतु	19/09/2066
गुरु	16/01/2030	शनि	26/06/2042	केतु	16/12/2055		00/00/0000
शनि	29/06/2031	केतु	01/03/2044	चंद्र	21/11/2057		00/00/0000
केतु	16/01/2033	चंद्र	16/12/2045	बुध	10/12/2059		00/00/0000
चंद्र	13/09/2034	बुध	12/11/2047	शुक्र	11/02/2062		00/00/0000
बुध	16/06/2036	शुक्र	18/11/2049	सूर्य	10/06/2063		00/00/0000
शुक्र	27/04/2038	सूर्य	11/02/2051	मंगल	20/11/2064		00/00/0000
सूर्य	17/06/2039	मंगल	16/06/2052	गुरु	17/06/2066		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु	
19/09/1950	
25/05/1952	
केतु	19/09/1950
चंद्र	23/12/1950
बुध	06/04/1951
शुक्र	25/07/1951
सूर्य	30/09/1951
मंगल	12/12/1951
गुरु	29/02/1952
शनि	25/05/1952

केतु - चंद्र	
25/05/1952	
20/06/1954	
चंद्र	06/09/1952
बुध	26/12/1952
शुक्र	22/04/1953
सूर्य	03/07/1953
मंगल	19/09/1953
गुरु	13/12/1953
शनि	14/03/1954
केतु	20/06/1954

केतु - बुध	
20/06/1954	
31/08/1956	
बुध	15/10/1954
शुक्र	17/02/1955
सूर्य	04/05/1955
मंगल	26/07/1955
गुरु	24/10/1955
शनि	29/01/1956
केतु	12/05/1956
चंद्र	31/08/1956

केतु - शुक्र	
31/08/1956	
29/12/1958	
शुक्र	09/01/1957
सूर्य	31/03/1957
मंगल	27/06/1957
गुरु	30/09/1957
शनि	11/01/1958
केतु	01/05/1958
चंद्र	26/08/1958
बुध	29/12/1958

केतु - सूर्य	
29/12/1958	
31/05/1960	
सूर्य	16/02/1959
मंगल	11/04/1959
गुरु	08/06/1959
शनि	10/08/1959
केतु	16/10/1959
चंद्र	27/12/1959
बुध	12/03/1960
शुक्र	31/05/1960

केतु - मंगल	
31/05/1960	
19/12/1961	
मंगल	29/07/1960
गुरु	30/09/1960
शनि	08/12/1960
केतु	19/02/1961
चंद्र	08/05/1961
बुध	30/07/1961
शुक्र	26/10/1961
सूर्य	19/12/1961

केतु - गुरु	
19/12/1961	
25/08/1963	
गुरु	26/02/1962
शनि	11/05/1962
केतु	29/07/1962
चंद्र	22/10/1962
बुध	20/01/1963
शुक्र	25/04/1963
सूर्य	23/06/1963
मंगल	25/08/1963

केतु - शनि	
25/08/1963	
16/06/1965	
शनि	13/11/1963
केतु	06/02/1964
चंद्र	08/05/1964
बुध	12/08/1964
शुक्र	23/11/1964
सूर्य	25/01/1965
मंगल	03/04/1965
गुरु	16/06/1965

चंद्र - चंद्र	
16/06/1965	
31/08/1967	
चंद्र	05/10/1965
बुध	01/02/1966
शुक्र	06/06/1966
सूर्य	21/08/1966
मंगल	12/11/1966
गुरु	11/02/1967
शनि	19/05/1967
केतु	31/08/1967

चंद्र - बुध	
31/08/1967	
04/01/1970	
बुध	04/01/1968
शुक्र	16/05/1968
सूर्य	05/08/1968
मंगल	02/11/1968
गुरु	06/02/1969
शनि	20/05/1969
केतु	08/09/1969
चंद्र	04/01/1970

चंद्र - शुक्र	
04/01/1970	
29/06/1972	
शुक्र	24/05/1970
सूर्य	18/08/1970
मंगल	20/11/1970
गुरु	02/03/1971
शनि	19/06/1971
केतु	15/10/1971
चंद्र	17/02/1972
बुध	29/06/1972

चंद्र - सूर्य	
29/06/1972	
04/01/1974	
सूर्य	20/08/1972
मंगल	16/10/1972
गुरु	18/12/1972
शनि	22/02/1973
केतु	05/05/1973
चंद्र	21/07/1973
बुध	10/10/1973
शुक्र	04/01/1974

चंद्र - मंगल	
04/01/1974	
31/08/1975	
मंगल	07/03/1974
गुरु	14/05/1974
शनि	26/07/1974
केतु	12/10/1974
चंद्र	04/01/1975
बुध	02/04/1975
शुक्र	05/07/1975
सूर्य	31/08/1975

चंद्र - गुरु	
31/08/1975	
16/06/1977	
गुरु	13/11/1975
शनि	31/01/1976
केतु	24/04/1976
चंद्र	24/07/1976
बुध	28/10/1976
शुक्र	06/02/1977
सूर्य	10/04/1977
मंगल	16/06/1977

चंद्र - शनि	
16/06/1977	
23/05/1979	
शनि	09/09/1977
केतु	10/12/1977
चंद्र	17/03/1978
बुध	28/06/1978
शुक्र	16/10/1978
सूर्य	22/12/1978
मंगल	05/03/1979
गुरु	23/05/1979

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
23/05/1979		16/06/1981		13/12/1983		03/08/1986		14/03/1988	
16/06/1981		13/12/1983		03/08/1986		14/03/1988		16/12/1989	
केतु	28/08/1979	बुध	28/10/1981	शुक्र	11/05/1984	सूर्य	28/09/1986	मंगल	19/05/1988
चंद्र	11/12/1979	शुक्र	18/03/1982	सूर्य	10/08/1984	मंगल	27/11/1986	गुरु	30/07/1988
बुध	30/03/1980	सूर्य	12/06/1982	मंगल	18/11/1984	गुरु	01/02/1987	शनि	15/10/1988
शुक्र	26/07/1980	मंगल	14/09/1982	गुरु	06/03/1985	शनि	14/04/1987	केतु	07/01/1989
सूर्य	05/10/1980	गुरु	25/12/1982	शनि	30/06/1985	केतु	29/06/1987	चंद्र	05/04/1989
मंगल	22/12/1980	शनि	14/04/1983	केतु	02/11/1985	चंद्र	18/09/1987	बुध	08/07/1989
गुरु	17/03/1981	केतु	10/08/1983	चंद्र	15/03/1986	बुध	13/12/1987	शुक्र	16/10/1989
शनि	16/06/1981	चंद्र	13/12/1983	बुध	03/08/1986	शुक्र	14/03/1988	सूर्य	16/12/1989

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
16/12/1989		12/11/1991		30/11/1993		11/02/1996		17/06/1998	
12/11/1991		30/11/1993		11/02/1996		17/06/1998		02/04/2001	
गुरु	04/03/1990	शनि	10/02/1992	केतु	14/03/1994	चंद्र	08/06/1996	शुक्र	22/11/1998
शनि	27/05/1990	केतु	17/05/1992	चंद्र	03/07/1994	बुध	12/10/1996	सूर्य	27/02/1999
केतु	25/08/1990	चंद्र	28/08/1992	बुध	28/10/1994	शुक्र	22/02/1997	मंगल	12/06/1999
चंद्र	29/11/1990	बुध	16/12/1992	शुक्र	02/03/1995	सूर्य	14/05/1997	गुरु	04/10/1999
बुध	11/03/1991	शुक्र	12/04/1993	सूर्य	17/05/1995	मंगल	10/08/1997	शनि	05/02/2000
शुक्र	27/06/1991	सूर्य	22/06/1993	मंगल	08/08/1995	गुरु	14/11/1997	केतु	15/06/2000
सूर्य	01/09/1991	मंगल	07/09/1993	गुरु	06/11/1995	शनि	26/02/1998	चंद्र	03/11/2000
मंगल	12/11/1991	गुरु	30/11/1993	शनि	11/02/1996	केतु	17/06/1998	बुध	02/04/2001

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
02/04/2001		16/12/2002		26/10/2004		02/11/2006		04/01/2009	
16/12/2002		26/10/2004		02/11/2006		04/01/2009		04/05/2011	
सूर्य	31/05/2001	मंगल	24/02/2003	गुरु	17/01/2005	शनि	06/02/2007	केतु	23/04/2009
मंगल	03/08/2001	गुरु	12/05/2003	शनि	16/04/2005	केतु	19/05/2007	चंद्र	19/08/2009
गुरु	12/10/2001	शनि	02/08/2003	केतु	20/07/2005	चंद्र	06/09/2007	बुध	21/12/2009
शनि	26/12/2001	केतु	29/10/2003	चंद्र	30/10/2005	बुध	31/12/2007	शुक्र	02/05/2010
केतु	17/03/2002	चंद्र	31/01/2004	बुध	15/02/2006	शुक्र	02/05/2008	सूर्य	22/07/2010
चंद्र	11/06/2002	बुध	09/05/2004	शुक्र	09/06/2006	सूर्य	17/07/2008	मंगल	18/10/2010
बुध	10/09/2002	शुक्र	23/08/2004	सूर्य	18/08/2006	मंगल	07/10/2008	गुरु	21/01/2011
शुक्र	16/12/2002	सूर्य	26/10/2004	मंगल	02/11/2006	गुरु	04/01/2009	शनि	04/05/2011

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
04/05/2011		26/10/2013		16/06/2016		02/07/2017		22/08/2018	
26/10/2013		16/06/2016		02/07/2017		22/08/2018		15/11/2019	
चंद्र	06/09/2011	बुध	17/03/2014	सूर्य	22/07/2016	मंगल	14/08/2017	गुरु	11/10/2018
बुध	17/01/2012	शुक्र	13/08/2014	मंगल	31/08/2016	गुरु	30/09/2017	शनि	04/12/2018
शुक्र	05/06/2012	सूर्य	13/11/2014	गुरु	12/10/2016	शनि	19/11/2017	केतु	01/02/2019
सूर्य	30/08/2012	मंगल	20/02/2015	शनि	27/11/2016	केतु	11/01/2018	चंद्र	04/04/2019
मंगल	02/12/2012	गुरु	08/06/2015	केतु	15/01/2017	चंद्र	10/03/2018	बुध	09/06/2019
गुरु	14/03/2013	शनि	03/10/2015	चंद्र	09/03/2017	बुध	10/05/2018	शुक्र	18/08/2019
शनि	01/07/2013	केतु	04/02/2016	बुध	04/05/2017	शुक्र	13/07/2018	सूर्य	29/09/2019
केतु	26/10/2013	चंद्र	16/06/2016	शुक्र	02/07/2017	सूर्य	22/08/2018	मंगल	15/11/2019

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
15/11/2019		14/03/2021		15/08/2022		21/02/2024		01/10/2025	
14/03/2021		15/08/2022		21/02/2024		01/10/2025		17/06/2027	
शनि	12/01/2020	केतु	20/05/2021	चंद्र	31/10/2022	बुध	17/05/2024	शुक्र	06/01/2026
केतु	15/03/2020	चंद्र	31/07/2021	बुध	20/01/2023	शुक्र	16/08/2024	सूर्य	06/03/2026
चंद्र	21/05/2020	बुध	15/10/2021	शुक्र	16/04/2023	सूर्य	11/10/2024	मंगल	10/05/2026
बुध	31/07/2020	शुक्र	03/01/2022	सूर्य	08/06/2023	मंगल	11/12/2024	गुरु	19/07/2026
शुक्र	14/10/2020	सूर्य	22/02/2022	मंगल	04/08/2023	गुरु	15/02/2025	शनि	02/10/2026
सूर्य	29/11/2020	मंगल	16/04/2022	गुरु	05/10/2023	शनि	27/04/2025	केतु	21/12/2026
मंगल	18/01/2021	गुरु	14/06/2022	शनि	11/12/2023	केतु	12/07/2025	चंद्र	17/03/2027
गुरु	14/03/2021	शनि	15/08/2022	केतु	21/02/2024	चंद्र	01/10/2025	बुध	17/06/2027

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
17/06/2027		12/09/2028		16/01/2030		29/06/2031		16/01/2033	
12/09/2028		16/01/2030		29/06/2031		16/01/2033		13/09/2034	
मंगल	03/08/2027	गुरु	06/11/2028	शनि	21/03/2030	केतु	11/09/2031	चंद्र	10/04/2033
गुरु	22/09/2027	शनि	04/01/2029	केतु	29/05/2030	चंद्र	28/11/2031	बुध	07/07/2033
शनि	16/11/2027	केतु	09/03/2029	चंद्र	10/08/2030	बुध	19/02/2032	शुक्र	09/10/2033
केतु	14/01/2028	चंद्र	16/05/2029	बुध	26/10/2030	शुक्र	17/05/2032	सूर्य	05/12/2033
चंद्र	16/03/2028	बुध	27/07/2029	शुक्र	16/01/2031	सूर्य	10/07/2032	मंगल	06/02/2034
बुध	22/05/2028	शुक्र	11/10/2029	सूर्य	07/03/2031	मंगल	06/09/2032	गुरु	15/04/2034
शुक्र	31/07/2028	सूर्य	27/11/2029	मंगल	01/05/2031	गुरु	09/11/2032	शनि	26/06/2034
सूर्य	12/09/2028	मंगल	16/01/2030	गुरु	29/06/2031	शनि	16/01/2033	केतु	13/09/2034

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
13/09/2034		16/06/2036		27/04/2038		17/06/2039		30/11/2040	
16/06/2036		27/04/2038		17/06/2039		30/11/2040		26/06/2042	
बुध	16/12/2034	शुक्र	30/09/2036	सूर्य	06/06/2038	गुरु	15/08/2039	शनि	07/02/2041
शुक्र	25/03/2035	सूर्य	03/12/2036	मंगल	19/07/2038	शनि	19/10/2039	केतु	22/04/2041
सूर्य	25/05/2035	मंगल	11/02/2037	गुरु	03/09/2038	केतु	26/12/2039	चंद्र	10/07/2041
मंगल	31/07/2035	गुरु	29/04/2037	शनि	23/10/2038	चंद्र	09/03/2040	बुध	02/10/2041
गुरु	11/10/2035	शनि	20/07/2037	केतु	16/12/2038	बुध	26/05/2040	शुक्र	30/12/2041
शनि	27/12/2035	केतु	16/10/2037	चंद्र	11/02/2039	शुक्र	16/08/2040	सूर्य	22/02/2042
केतु	19/03/2036	चंद्र	17/01/2038	बुध	13/04/2039	सूर्य	06/10/2040	मंगल	23/04/2042
चंद्र	16/06/2036	बुध	27/04/2038	शुक्र	17/06/2039	मंगल	30/11/2040	गुरु	26/06/2042

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
26/06/2042		01/03/2044		16/12/2045		12/11/2047		18/11/2049	
01/03/2044		16/12/2045		12/11/2047		18/11/2049		11/02/2051	
केतु	13/09/2042	चंद्र	30/05/2044	बुध	28/03/2046	शुक्र	05/03/2048	सूर्य	30/12/2049
चंद्र	07/12/2042	बुध	03/09/2044	शुक्र	14/07/2046	सूर्य	14/05/2048	मंगल	15/02/2050
बुध	07/03/2043	शुक्र	14/12/2044	सूर्य	18/09/2046	मंगल	29/07/2048	गुरु	06/04/2050
शुक्र	10/06/2043	सूर्य	14/02/2045	मंगल	29/11/2046	गुरु	20/10/2048	शनि	31/05/2050
सूर्य	08/08/2043	मंगल	23/04/2045	गुरु	15/02/2047	शनि	17/01/2049	केतु	28/07/2050
मंगल	10/10/2043	गुरु	05/07/2045	शनि	10/05/2047	केतु	22/04/2049	चंद्र	28/09/2050
गुरु	18/12/2043	शनि	22/09/2045	केतु	08/08/2047	चंद्र	02/08/2049	बुध	03/12/2050
शनि	01/03/2044	केतु	16/12/2045	चंद्र	12/11/2047	बुध	18/11/2049	शुक्र	11/02/2051

गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध	
11/02/2051		16/06/2052		23/02/2054		16/12/2055		21/11/2057	
16/06/2052		23/02/2054		16/12/2055		21/11/2057		10/12/2059	
मंगल	03/04/2051	शनि	29/08/2052	केतु	20/05/2054	चंद्र	23/03/2056	बुध	11/03/2058
गुरु	28/05/2051	केतु	17/11/2052	चंद्र	19/08/2054	बुध	04/07/2056	शुक्र	05/07/2058
शनि	26/07/2051	चंद्र	10/02/2053	बुध	24/11/2054	शुक्र	21/10/2056	सूर्य	14/09/2058
केतु	27/09/2051	बुध	12/05/2053	शुक्र	06/03/2055	सूर्य	27/12/2056	मंगल	30/11/2058
चंद्र	04/12/2051	शुक्र	16/08/2053	सूर्य	08/05/2055	मंगल	10/03/2057	गुरु	22/02/2059
बुध	14/02/2052	सूर्य	13/10/2053	मंगल	15/07/2055	गुरु	28/05/2057	शनि	24/05/2059
शुक्र	30/04/2052	मंगल	16/12/2053	गुरु	28/09/2055	शनि	21/08/2057	केतु	29/08/2059
सूर्य	16/06/2052	गुरु	23/02/2054	शनि	16/12/2055	केतु	21/11/2057	चंद्र	10/12/2059

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 1 मास 6 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
19/09/1950		27/10/1963		27/10/1967		27/06/1974		26/02/1979	
27/10/1963		27/10/1967		27/06/1974		26/02/1979		26/02/1991	
शुक्र	16/09/1952	सूर्य	08/01/1964	चंद्र	17/05/1968	मंगल	04/10/1974	राहु	14/12/1980
सूर्य	17/05/1953	चंद्र	09/05/1964	मंगल	06/10/1968	राहु	17/06/1975	गुरु	21/07/1982
चंद्र	27/06/1954	मंगल	02/08/1964	राहु	06/10/1969	गुरु	30/01/1976	शनि	14/06/1984
मंगल	07/04/1955	राहु	09/03/1965	गुरु	27/08/1970	शनि	26/10/1976	बुध	25/02/1986
राहु	07/04/1957	गुरु	20/09/1965	शनि	16/09/1971	बुध	25/06/1977	केतु	08/11/1986
गुरु	16/01/1959	शनि	09/05/1966	बुध	26/08/1972	केतु	02/10/1977	शुक्र	07/11/1988
शनि	25/02/1961	बुध	02/12/1966	केतु	15/01/1973	शुक्र	13/07/1978	सूर्य	15/06/1989
बुध	16/01/1963	केतु	26/02/1967	शुक्र	25/02/1974	सूर्य	07/10/1978	चंद्र	15/06/1990
केतु	27/10/1963	शुक्र	27/10/1967	सूर्य	27/06/1974	चंद्र	26/02/1979	मंगल	26/02/1991

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
26/02/1991		27/10/2001		27/06/2014		27/10/2025		27/06/2030	
27/10/2001		27/06/2014		27/10/2025		27/06/2030		00/00/0000	
गुरु	29/07/1992	शनि	29/10/2003	बुध	03/02/2016	केतु	03/02/2026	शुक्र	19/09/2030
शनि	07/04/1994	बुध	14/08/2005	केतु	02/10/2016	शुक्र	14/11/2026		00/00/0000
बुध	11/10/1995	केतु	11/05/2006	शुक्र	23/08/2018	सूर्य	07/02/2027		00/00/0000
केतु	25/05/1996	शुक्र	20/06/2008	सूर्य	18/03/2019	चंद्र	29/06/2027		00/00/0000
शुक्र	05/03/1998	सूर्य	07/02/2009	चंद्र	26/02/2020	मंगल	07/10/2027		00/00/0000
सूर्य	16/09/1998	चंद्र	27/02/2010	मंगल	24/10/2020	राहु	18/06/2028		00/00/0000
चंद्र	07/08/1999	मंगल	24/11/2010	राहु	07/07/2022	गुरु	01/02/2029		00/00/0000
मंगल	21/03/2000	राहु	18/10/2012	गुरु	10/01/2024	शनि	29/10/2029		00/00/0000
राहु	27/10/2001	गुरु	27/06/2014	शनि	27/10/2025	बुध	27/06/2030		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
19/09/1950		16/09/1952		17/05/1953		27/06/1954		07/04/1955	
16/09/1952		17/05/1953		27/06/1954		07/04/1955		07/04/1957	
शुक्र	09/11/1950	सूर्य	28/09/1952	चंद्र	20/06/1953	मंगल	14/07/1954	राहु	26/07/1955
सूर्य	20/12/1950	चंद्र	18/10/1952	मंगल	14/07/1953	राहु	25/08/1954	गुरु	31/10/1955
चंद्र	26/02/1951	मंगल	01/11/1952	राहु	13/09/1953	गुरु	02/10/1954	शनि	24/02/1956
मंगल	14/04/1951	राहु	08/12/1952	गुरु	06/11/1953	शनि	16/11/1954	बुध	06/06/1956
राहु	14/08/1951	गुरु	09/01/1953	शनि	09/01/1954	बुध	26/12/1954	केतु	19/07/1956
गुरु	30/11/1951	शनि	17/02/1953	बुध	07/03/1954	केतु	12/01/1955	शुक्र	18/11/1956
शनि	06/04/1952	बुध	23/03/1953	केतु	31/03/1954	शुक्र	28/02/1955	सूर्य	24/12/1956
बुध	30/07/1952	केतु	07/04/1953	शुक्र	07/06/1954	सूर्य	14/03/1955	चंद्र	23/02/1957
केतु	16/09/1952	शुक्र	17/05/1953	सूर्य	27/06/1954	चंद्र	07/04/1955	मंगल	07/04/1957

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
07/04/1957		16/01/1959		25/02/1961		16/01/1963		27/10/1963	
16/01/1959		25/02/1961		16/01/1963		27/10/1963		08/01/1964	
गुरु	02/07/1957	शनि	18/05/1959	बुध	03/06/1961	केतु	02/02/1963	सूर्य	31/10/1963
शनि	13/10/1957	बुध	04/09/1959	केतु	13/07/1961	शुक्र	21/03/1963	चंद्र	06/11/1963
बुध	13/01/1958	केतु	19/10/1959	शुक्र	05/11/1961	सूर्य	04/04/1963	मंगल	10/11/1963
केतु	20/02/1958	शुक्र	25/02/1960	सूर्य	10/12/1961	चंद्र	28/04/1963	राहु	21/11/1963
शुक्र	08/06/1958	सूर्य	03/04/1960	चंद्र	05/02/1962	मंगल	14/05/1963	गुरु	01/12/1963
सूर्य	11/07/1958	चंद्र	07/06/1960	मंगल	17/03/1962	राहु	26/06/1963	शनि	12/12/1963
चंद्र	03/09/1958	मंगल	22/07/1960	राहु	29/06/1962	गुरु	03/08/1963	बुध	23/12/1963
मंगल	11/10/1958	राहु	14/11/1960	गुरु	29/09/1962	शनि	17/09/1963	केतु	27/12/1963
राहु	16/01/1959	गुरु	25/02/1961	शनि	16/01/1963	बुध	27/10/1963	शुक्र	08/01/1964

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
08/01/1964		09/05/1964		02/08/1964		09/03/1965		20/09/1965	
09/05/1964		02/08/1964		09/03/1965		20/09/1965		09/05/1966	
चंद्र	18/01/1964	मंगल	14/05/1964	राहु	04/09/1964	गुरु	04/04/1965	शनि	27/10/1965
मंगल	25/01/1964	राहु	27/05/1964	गुरु	03/10/1964	शनि	05/05/1965	बुध	28/11/1965
राहु	13/02/1964	गुरु	07/06/1964	शनि	07/11/1964	बुध	02/06/1965	केतु	12/12/1965
गुरु	29/02/1964	शनि	20/06/1964	बुध	08/12/1964	केतु	13/06/1965	शुक्र	19/01/1966
शनि	19/03/1964	बुध	03/07/1964	केतु	21/12/1964	शुक्र	15/07/1965	सूर्य	31/01/1966
बुध	05/04/1964	केतु	08/07/1964	शुक्र	26/01/1965	सूर्य	25/07/1965	चंद्र	19/02/1966
केतु	12/04/1964	शुक्र	22/07/1964	सूर्य	06/02/1965	चंद्र	10/08/1965	मंगल	05/03/1966
शुक्र	03/05/1964	सूर्य	26/07/1964	चंद्र	24/02/1965	मंगल	22/08/1965	राहु	09/04/1966
सूर्य	09/05/1964	चंद्र	02/08/1964	मंगल	09/03/1965	राहु	20/09/1965	गुरु	09/05/1966

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
09/05/1966		02/12/1966		26/02/1967		27/10/1967		17/05/1968	
02/12/1966		26/02/1967		27/10/1967		17/05/1968		06/10/1968	
बुध	08/06/1966	केतु	07/12/1966	शुक्र	07/04/1967	चंद्र	13/11/1967	मंगल	25/05/1968
केतु	20/06/1966	शुक्र	21/12/1966	सूर्य	19/04/1967	मंगल	25/11/1967	राहु	16/06/1968
शुक्र	24/07/1966	सूर्य	26/12/1966	चंद्र	10/05/1967	राहु	25/12/1967	गुरु	04/07/1968
सूर्य	04/08/1966	चंद्र	02/01/1967	मंगल	24/05/1967	गुरु	21/01/1968	शनि	27/07/1968
चंद्र	21/08/1966	मंगल	07/01/1967	राहु	29/06/1967	शनि	22/02/1968	बुध	16/08/1968
मंगल	02/09/1966	राहु	20/01/1967	गुरु	01/08/1967	बुध	22/03/1968	केतु	24/08/1968
राहु	03/10/1966	गुरु	31/01/1967	शनि	08/09/1967	केतु	03/04/1968	शुक्र	17/09/1968
गुरु	31/10/1966	शनि	13/02/1967	बुध	13/10/1967	शुक्र	07/05/1968	सूर्य	24/09/1968
शनि	02/12/1966	बुध	26/02/1967	केतु	27/10/1967	सूर्य	17/05/1968	चंद्र	06/10/1968

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
06/10/1968		06/10/1969		27/08/1970		16/09/1971		26/08/1972	
06/10/1969		27/08/1970		16/09/1971		26/08/1972		15/01/1973	
राहु	30/11/1968	गुरु	19/11/1969	शनि	27/10/1970	बुध	04/11/1971	केतु	04/09/1972
गुरु	17/01/1969	शनि	09/01/1970	बुध	21/12/1970	केतु	24/11/1971	शुक्र	27/09/1972
शनि	16/03/1969	बुध	24/02/1970	केतु	12/01/1971	शुक्र	21/01/1972	सूर्य	04/10/1972
बुध	07/05/1969	केतु	15/03/1970	शुक्र	17/03/1971	सूर्य	07/02/1972	चंद्र	16/10/1972
केतु	28/05/1969	शुक्र	08/05/1970	सूर्य	06/04/1971	चंद्र	07/03/1972	मंगल	25/10/1972
शुक्र	28/07/1969	सूर्य	24/05/1970	चंद्र	08/05/1971	मंगल	27/03/1972	राहु	15/11/1972
सूर्य	16/08/1969	चंद्र	20/06/1970	मंगल	30/05/1971	राहु	18/05/1972	गुरु	04/12/1972
चंद्र	15/09/1969	मंगल	09/07/1970	राहु	27/07/1971	गुरु	03/07/1972	शनि	26/12/1972
मंगल	06/10/1969	राहु	27/08/1970	गुरु	16/09/1971	शनि	26/08/1972	बुध	15/01/1973

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
15/01/1973		25/02/1974		27/06/1974		04/10/1974		17/06/1975	
25/02/1974		27/06/1974		04/10/1974		17/06/1975		30/01/1976	
शुक्र	24/03/1973	सूर्य	03/03/1974	मंगल	03/07/1974	राहु	12/11/1974	गुरु	17/07/1975
सूर्य	13/04/1973	चंद्र	14/03/1974	राहु	18/07/1974	गुरु	16/12/1974	शनि	22/08/1975
चंद्र	17/05/1973	मंगल	21/03/1974	गुरु	31/07/1974	शनि	25/01/1975	बुध	24/09/1975
मंगल	10/06/1973	राहु	08/04/1974	शनि	16/08/1974	बुध	03/03/1975	केतु	07/10/1975
राहु	10/08/1973	गुरु	24/04/1974	बुध	30/08/1974	केतु	18/03/1975	शुक्र	14/11/1975
गुरु	03/10/1973	शनि	13/05/1974	केतु	05/09/1974	शुक्र	29/04/1975	सूर्य	25/11/1975
शनि	06/12/1973	बुध	31/05/1974	शुक्र	21/09/1974	सूर्य	12/05/1975	चंद्र	14/12/1975
बुध	02/02/1974	केतु	07/06/1974	सूर्य	26/09/1974	चंद्र	02/06/1975	मंगल	27/12/1975
केतु	25/02/1974	शुक्र	27/06/1974	चंद्र	04/10/1974	मंगल	17/06/1975	राहु	30/01/1976

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
30/01/1976		26/10/1976		25/06/1977		02/10/1977		13/07/1978	
26/10/1976		25/06/1977		02/10/1977		13/07/1978		07/10/1978	
शनि	13/03/1976	बुध	30/11/1976	केतु	01/07/1977	शुक्र	19/11/1977	सूर्य	18/07/1978
बुध	20/04/1976	केतु	14/12/1976	शुक्र	17/07/1977	सूर्य	03/12/1977	चंद्र	25/07/1978
केतु	06/05/1976	शुक्र	23/01/1977	सूर्य	22/07/1977	चंद्र	26/12/1977	मंगल	30/07/1978
शुक्र	20/06/1976	सूर्य	04/02/1977	चंद्र	30/07/1977	मंगल	12/01/1978	राहु	11/08/1978
सूर्य	04/07/1976	चंद्र	24/02/1977	मंगल	05/08/1977	राहु	24/02/1978	गुरु	23/08/1978
चंद्र	26/07/1976	मंगल	10/03/1977	राहु	20/08/1977	गुरु	02/04/1978	शनि	05/09/1978
मंगल	11/08/1976	राहु	15/04/1977	गुरु	02/09/1977	शनि	17/05/1978	बुध	17/09/1978
राहु	20/09/1976	गुरु	18/05/1977	शनि	18/09/1977	बुध	27/06/1978	केतु	22/09/1978
गुरु	26/10/1976	शनि	25/06/1977	बुध	02/10/1977	केतु	13/07/1978	शुक्र	07/10/1978

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
07/10/1978		26/02/1979		14/12/1980		21/07/1982		14/06/1984	
26/02/1979		14/12/1980		21/07/1982		14/06/1984		25/02/1986	
चंद्र	18/10/1978	राहु	04/06/1979	गुरु	02/03/1981	शनि	08/11/1982	बुध	10/09/1984
मंगल	27/10/1978	गुरु	31/08/1979	शनि	02/06/1981	बुध	15/02/1983	केतु	17/10/1984
राहु	17/11/1978	शनि	13/12/1979	बुध	24/08/1981	केतु	27/03/1983	शुक्र	28/01/1985
गुरु	06/12/1978	बुध	15/03/1980	केतु	27/09/1981	शुक्र	21/07/1983	सूर्य	28/02/1985
शनि	28/12/1978	केतु	22/04/1980	शुक्र	03/01/1982	सूर्य	24/08/1983	चंद्र	21/04/1985
बुध	17/01/1979	शुक्र	10/08/1980	सूर्य	01/02/1982	चंद्र	21/10/1983	मंगल	27/05/1985
केतु	26/01/1979	सूर्य	12/09/1980	चंद्र	22/03/1982	मंगल	01/12/1983	राहु	28/08/1985
शुक्र	18/02/1979	चंद्र	06/11/1980	मंगल	25/04/1982	राहु	14/03/1984	गुरु	19/11/1985
सूर्य	26/02/1979	मंगल	14/12/1980	राहु	21/07/1982	गुरु	14/06/1984	शनि	25/02/1986

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
25/02/1986		08/11/1986		07/11/1988		15/06/1989		15/06/1990	
08/11/1986		07/11/1988		15/06/1989		15/06/1990		26/02/1991	
केतु	12/03/1986	शुक्र	10/03/1987	सूर्य	18/11/1988	चंद्र	15/07/1989	मंगल	30/06/1990
शुक्र	24/04/1986	सूर्य	15/04/1987	चंद्र	07/12/1988	मंगल	05/08/1989	राहु	07/08/1990
सूर्य	07/05/1986	चंद्र	15/06/1987	मंगल	19/12/1988	राहु	29/09/1989	गुरु	10/09/1990
चंद्र	28/05/1986	मंगल	28/07/1987	राहु	21/01/1989	गुरु	17/11/1989	शनि	21/10/1990
मंगल	12/06/1986	राहु	14/11/1987	गुरु	20/02/1989	शनि	14/01/1990	बुध	26/11/1990
राहु	20/07/1986	गुरु	20/02/1988	शनि	26/03/1989	बुध	06/03/1990	केतु	11/12/1990
गुरु	23/08/1986	शनि	14/06/1988	बुध	26/04/1989	केतु	28/03/1990	शुक्र	22/01/1991
शनि	03/10/1986	बुध	26/09/1988	केतु	09/05/1989	शुक्र	28/05/1990	सूर्य	04/02/1991
बुध	08/11/1986	केतु	07/11/1988	शुक्र	15/06/1989	सूर्य	15/06/1990	चंद्र	26/02/1991

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
26/02/1991		29/07/1992		07/04/1994		11/10/1995		25/05/1996	
29/07/1992		07/04/1994		11/10/1995		25/05/1996		05/03/1998	
गुरु	06/05/1991	शनि	04/11/1992	बुध	24/06/1994	केतु	24/10/1995	शुक्र	10/09/1996
शनि	27/07/1991	बुध	30/01/1993	केतु	26/07/1994	शुक्र	01/12/1995	सूर्य	13/10/1996
बुध	09/10/1991	केतु	07/03/1993	शुक्र	26/10/1994	सूर्य	12/12/1995	चंद्र	06/12/1996
केतु	08/11/1991	शुक्र	18/06/1993	सूर्य	23/11/1994	चंद्र	31/12/1995	मंगल	13/01/1997
शुक्र	03/02/1992	सूर्य	19/07/1993	चंद्र	08/01/1995	मंगल	14/01/1996	राहु	20/04/1997
सूर्य	29/02/1992	चंद्र	08/09/1993	मंगल	09/02/1995	राहु	17/02/1996	गुरु	16/07/1997
चंद्र	12/04/1992	मंगल	14/10/1993	राहु	03/05/1995	गुरु	18/03/1996	शनि	27/10/1997
मंगल	12/05/1992	राहु	15/01/1994	गुरु	15/07/1995	शनि	23/04/1996	बुध	27/01/1998
राहु	29/07/1992	गुरु	07/04/1994	शनि	11/10/1995	बुध	25/05/1996	केतु	05/03/1998

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
05/03/1998		16/09/1998		07/08/1999		21/03/2000		27/10/2001	
16/09/1998		07/08/1999		21/03/2000		27/10/2001		29/10/2003	
सूर्य	15/03/1998	चंद्र	13/10/1998	मंगल	20/08/1999	राहु	17/06/2000	शनि	20/02/2002
चंद्र	31/03/1998	मंगल	01/11/1998	राहु	23/09/1999	गुरु	03/09/2000	बुध	03/06/2002
मंगल	12/04/1998	राहु	20/12/1998	गुरु	24/10/1999	शनि	04/12/2000	केतु	16/07/2002
राहु	11/05/1998	गुरु	01/02/1999	शनि	29/11/1999	बुध	25/02/2001	शुक्र	15/11/2002
गुरु	06/06/1998	शनि	25/03/1999	बुध	31/12/1999	केतु	31/03/2001	सूर्य	22/12/2002
शनि	07/07/1998	बुध	10/05/1999	केतु	13/01/2000	शुक्र	07/07/2001	चंद्र	21/02/2003
बुध	03/08/1998	केतु	29/05/1999	शुक्र	20/02/2000	सूर्य	05/08/2001	मंगल	05/04/2003
केतु	15/08/1998	शुक्र	22/07/1999	सूर्य	02/03/2000	चंद्र	22/09/2001	राहु	23/07/2003
शुक्र	16/09/1998	सूर्य	07/08/1999	चंद्र	21/03/2000	मंगल	27/10/2001	गुरु	29/10/2003

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
29/10/2003		14/08/2005		11/05/2006		20/06/2008		07/02/2009	
14/08/2005		11/05/2006		20/06/2008		07/02/2009		27/02/2010	
बुध	30/01/2004	केतु	30/08/2005	शुक्र	17/09/2006	सूर्य	02/07/2008	चंद्र	11/03/2009
केतु	08/03/2004	शुक्र	14/10/2005	सूर्य	25/10/2006	चंद्र	21/07/2008	मंगल	02/04/2009
शुक्र	25/06/2004	सूर्य	28/10/2005	चंद्र	29/12/2006	मंगल	04/08/2008	राहु	30/05/2009
सूर्य	28/07/2004	चंद्र	19/11/2005	मंगल	12/02/2007	राहु	07/09/2008	गुरु	21/07/2009
चंद्र	21/09/2004	मंगल	05/12/2005	राहु	07/06/2007	गुरु	08/10/2008	शनि	20/09/2009
मंगल	29/10/2004	राहु	14/01/2006	गुरु	18/09/2007	शनि	14/11/2008	बुध	13/11/2009
राहु	04/02/2005	गुरु	19/02/2006	शनि	18/01/2008	बुध	17/12/2008	केतु	06/12/2009
गुरु	03/05/2005	शनि	03/04/2006	बुध	06/05/2008	केतु	30/12/2008	शुक्र	08/02/2010
शनि	14/08/2005	बुध	11/05/2006	केतु	20/06/2008	शुक्र	07/02/2009	सूर्य	27/02/2010

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
27/02/2010		24/11/2010		18/10/2012		27/06/2014		03/02/2016	
24/11/2010		18/10/2012		27/06/2014		03/02/2016		02/10/2016	
मंगल	15/03/2010	राहु	08/03/2011	गुरु	08/01/2013	बुध	18/09/2014	केतु	18/02/2016
राहु	25/04/2010	गुरु	09/06/2011	शनि	16/04/2013	केतु	22/10/2014	शुक्र	29/03/2016
गुरु	31/05/2010	शनि	27/09/2011	बुध	12/07/2013	शुक्र	28/01/2015	सूर्य	10/04/2016
शनि	12/07/2010	बुध	03/01/2012	केतु	17/08/2013	सूर्य	26/02/2015	चंद्र	30/04/2016
बुध	19/08/2010	केतु	13/02/2012	शुक्र	28/11/2013	चंद्र	16/04/2015	मंगल	14/05/2016
केतु	04/09/2010	शुक्र	07/06/2012	सूर्य	29/12/2013	मंगल	20/05/2015	राहु	19/06/2016
शुक्र	19/10/2010	सूर्य	12/07/2012	चंद्र	19/02/2014	राहु	16/08/2015	गुरु	22/07/2016
सूर्य	02/11/2010	चंद्र	08/09/2012	मंगल	27/03/2014	गुरु	03/11/2015	शनि	29/08/2016
चंद्र	24/11/2010	मंगल	18/10/2012	राहु	27/06/2014	शनि	03/02/2016	बुध	02/10/2016

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
02/10/2016		23/08/2018		18/03/2019		26/02/2020		24/10/2020	
23/08/2018		18/03/2019		26/02/2020		24/10/2020		07/07/2022	
शुक्र	25/01/2017	सूर्य	02/09/2018	चंद्र	16/04/2019	मंगल	11/03/2020	राहु	25/01/2021
सूर्य	28/02/2017	चंद्र	19/09/2018	मंगल	06/05/2019	राहु	16/04/2020	गुरु	18/04/2021
चंद्र	27/04/2017	मंगल	02/10/2018	राहु	26/06/2019	गुरु	18/05/2020	शनि	26/07/2021
मंगल	06/06/2017	राहु	02/11/2018	गुरु	11/08/2019	शनि	26/06/2020	बुध	21/10/2021
राहु	18/09/2017	गुरु	29/11/2018	शनि	05/10/2019	बुध	30/07/2020	केतु	27/11/2021
गुरु	19/12/2017	शनि	01/01/2019	बुध	23/11/2019	केतु	13/08/2020	शुक्र	10/03/2022
शनि	07/04/2018	बुध	30/01/2019	केतु	13/12/2019	शुक्र	22/09/2020	सूर्य	10/04/2022
बुध	14/07/2018	केतु	11/02/2019	शुक्र	09/02/2020	सूर्य	04/10/2020	चंद्र	01/06/2022
केतु	23/08/2018	शुक्र	18/03/2019	सूर्य	26/02/2020	चंद्र	24/10/2020	मंगल	07/07/2022

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
07/07/2022		10/01/2024		27/10/2025		03/02/2026		14/11/2026	
10/01/2024		27/10/2025		03/02/2026		14/11/2026		07/02/2027	
गुरु	19/09/2022	शनि	23/04/2024	केतु	01/11/2025	शुक्र	22/03/2026	सूर्य	18/11/2026
शनि	15/12/2022	बुध	25/07/2024	शुक्र	18/11/2025	सूर्य	06/04/2026	चंद्र	25/11/2026
बुध	03/03/2023	केतु	01/09/2024	सूर्य	23/11/2025	चंद्र	29/04/2026	मंगल	30/11/2026
केतु	05/04/2023	शुक्र	19/12/2024	चंद्र	01/12/2025	मंगल	16/05/2026	राहु	13/12/2026
शुक्र	06/07/2023	सूर्य	21/01/2025	मंगल	07/12/2025	राहु	27/06/2026	गुरु	25/12/2026
सूर्य	02/08/2023	चंद्र	17/03/2025	राहु	22/12/2025	गुरु	04/08/2026	शनि	07/01/2027
चंद्र	17/09/2023	मंगल	24/04/2025	गुरु	04/01/2026	शनि	18/09/2026	बुध	19/01/2027
मंगल	19/10/2023	राहु	31/07/2025	शनि	20/01/2026	बुध	28/10/2026	केतु	24/01/2027
राहु	10/01/2024	गुरु	27/10/2025	बुध	03/02/2026	केतु	14/11/2026	शुक्र	07/02/2027

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 18 वर्ष 10 मास 20 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
19/09/1950		10/08/1969		10/08/1981		10/08/2002		10/08/2008	
10/08/1969		10/08/1981		10/08/2002		10/08/2008		11/08/2023	
गुरु	13/12/1953	राहु	10/12/1970	शुक्र	10/09/1985	सूर्य	10/12/2002	चंद्र	10/09/2010
राहु	23/01/1956	शुक्र	10/04/1973	सूर्य	10/11/1986	चंद्र	10/10/2003	मंगल	21/10/2011
शुक्र	04/10/1959	सूर्य	10/12/1973	चंद्र	10/10/1989	मंगल	21/03/2004	बुध	01/03/2014
सूर्य	23/10/1960	चंद्र	11/08/1975	मंगल	01/05/1991	बुध	01/03/2005	शनि	21/07/2015
चंद्र	14/06/1963	मंगल	30/06/1976	बुध	20/08/1994	शनि	20/09/2005	गुरु	11/03/2018
मंगल	09/11/1964	बुध	21/05/1978	शनि	31/07/1996	गुरु	10/10/2006	राहु	10/11/2019
बुध	07/11/1967	शनि	01/07/1979	गुरु	10/04/2000	राहु	11/06/2007	शुक्र	10/10/2022
शनि	10/08/1969	गुरु	10/08/1981	राहु	10/08/2002	शुक्र	10/08/2008	सूर्य	11/08/2023

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
11/08/2023		11/08/2031		10/08/2048		10/08/2058	
11/08/2031		10/08/2048		10/08/2058		00/00/0000	
मंगल	14/03/2024	बुध	14/04/2034	शनि	14/07/2049	गुरु	19/09/2058
बुध	17/06/2025	शनि	10/11/2035	गुरु	18/04/2051		00/00/0000
शनि	15/03/2026	गुरु	06/11/2038	राहु	27/05/2052		00/00/0000
गुरु	11/08/2027	राहु	26/09/2040	शुक्र	08/05/2054		00/00/0000
राहु	30/06/2028	शुक्र	17/01/2044	सूर्य	27/11/2054		00/00/0000
शुक्र	19/01/2030	सूर्य	26/12/2044	चंद्र	17/04/2056		00/00/0000
सूर्य	01/07/2030	चंद्र	08/05/2047	मंगल	12/01/2057		00/00/0000
चंद्र	11/08/2031	मंगल	10/08/2048	बुध	10/08/2058		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
19/09/1950		13/12/1953		23/01/1956		04/10/1959		23/10/1960	
13/12/1953		23/01/1956		04/10/1959		23/10/1960		14/06/1963	
गुरु	13/03/1951	राहु	09/03/1954	शुक्र	12/10/1956	सूर्य	25/10/1959	चंद्र	06/03/1961
राहु	27/07/1951	शुक्र	06/08/1954	सूर्य	26/12/1956	चंद्र	18/12/1959	मंगल	17/05/1961
शुक्र	20/03/1952	सूर्य	18/09/1954	चंद्र	01/07/1957	मंगल	15/01/1960	बुध	15/10/1961
सूर्य	27/05/1952	चंद्र	03/01/1955	मंगल	09/10/1957	बुध	16/03/1960	शनि	12/01/1962
चंद्र	13/11/1952	मंगल	01/03/1955	बुध	09/05/1958	शनि	21/04/1960	गुरु	01/07/1962
मंगल	11/02/1953	बुध	30/06/1955	शनि	11/09/1958	गुरु	27/06/1960	राहु	16/10/1962
बुध	22/08/1953	शनि	10/09/1955	गुरु	07/05/1959	राहु	09/08/1960	शुक्र	22/04/1963
शनि	13/12/1953	गुरु	23/01/1956	राहु	04/10/1959	शुक्र	23/10/1960	सूर्य	14/06/1963

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
14/06/1963		09/11/1964		07/11/1967		10/08/1969		10/12/1970	
09/11/1964		07/11/1967		10/08/1969		10/12/1970		10/04/1973	
मंगल	22/07/1963	बुध	30/04/1965	शनि	05/01/1968	राहु	03/10/1969	शुक्र	25/05/1971
बुध	11/10/1963	शनि	09/08/1965	गुरु	27/04/1968	शुक्र	06/01/1970	सूर्य	11/07/1971
शनि	28/11/1963	गुरु	17/02/1966	राहु	07/07/1968	सूर्य	02/02/1970	चंद्र	07/11/1971
गुरु	26/02/1964	राहु	19/06/1966	शुक्र	09/11/1968	चंद्र	11/04/1970	मंगल	09/01/1972
राहु	23/04/1964	शुक्र	17/01/1967	सूर्य	15/12/1968	मंगल	17/05/1970	बुध	22/05/1972
शुक्र	01/08/1964	सूर्य	19/03/1967	चंद्र	14/03/1969	बुध	01/08/1970	शनि	09/08/1972
सूर्य	30/08/1964	चंद्र	18/08/1967	मंगल	01/05/1969	शनि	15/09/1970	गुरु	06/01/1973
चंद्र	09/11/1964	मंगल	07/11/1967	बुध	10/08/1969	गुरु	10/12/1970	राहु	10/04/1973

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
10/04/1973		10/12/1973		11/08/1975		30/06/1976		21/05/1978	
10/12/1973		11/08/1975		30/06/1976		21/05/1978		01/07/1979	
सूर्य	24/04/1973	चंद्र	04/03/1974	मंगल	04/09/1975	बुध	17/10/1976	शनि	28/06/1978
चंद्र	28/05/1973	मंगल	18/04/1974	बुध	25/10/1975	शनि	20/12/1976	गुरु	07/09/1978
मंगल	15/06/1973	बुध	23/07/1974	शनि	24/11/1975	गुरु	20/04/1977	राहु	22/10/1978
बुध	23/07/1973	शनि	18/09/1974	गुरु	20/01/1976	राहु	06/07/1977	शुक्र	09/01/1979
शनि	15/08/1973	गुरु	03/01/1975	राहु	25/02/1976	शुक्र	17/11/1977	सूर्य	01/02/1979
गुरु	26/09/1973	राहु	11/03/1975	शुक्र	28/04/1976	सूर्य	25/12/1977	चंद्र	29/03/1979
राहु	23/10/1973	शुक्र	08/07/1975	सूर्य	16/05/1976	चंद्र	31/03/1978	मंगल	28/04/1979
शुक्र	10/12/1973	सूर्य	11/08/1975	चंद्र	30/06/1976	मंगल	21/05/1978	बुध	01/07/1979

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु	
01/07/1979	
10/08/1981	
गुरु	14/11/1979
राहु	07/02/1980
शुक्र	06/07/1980
सूर्य	18/08/1980
चंद्र	03/12/1980
मंगल	29/01/1981
बुध	31/05/1981
शनि	10/08/1981

शुक्र - शुक्र	
10/08/1981	
10/09/1985	
शुक्र	27/05/1982
सूर्य	18/08/1982
चंद्र	13/03/1983
मंगल	02/07/1983
बुध	21/02/1984
शनि	08/07/1984
गुरु	28/03/1985
राहु	10/09/1985

शुक्र - सूर्य	
10/09/1985	
10/11/1986	
सूर्य	03/10/1985
चंद्र	01/12/1985
मंगल	02/01/1986
बुध	10/03/1986
शनि	18/04/1986
गुरु	02/07/1986
राहु	19/08/1986
शुक्र	10/11/1986

शुक्र - चंद्र	
10/11/1986	
10/10/1989	
चंद्र	07/04/1987
मंगल	25/06/1987
बुध	09/12/1987
शनि	17/03/1988
गुरु	20/09/1988
राहु	17/01/1989
शुक्र	12/08/1989
सूर्य	10/10/1989

शुक्र - मंगल	
10/10/1989	
01/05/1991	
मंगल	21/11/1989
बुध	18/02/1990
शनि	12/04/1990
गुरु	21/07/1990
राहु	22/09/1990
शुक्र	11/01/1991
सूर्य	11/02/1991
चंद्र	01/05/1991

शुक्र - बुध	
01/05/1991	
20/08/1994	
बुध	07/11/1991
शनि	27/02/1992
गुरु	26/09/1992
राहु	08/02/1993
शुक्र	30/09/1993
सूर्य	06/12/1993
चंद्र	23/05/1994
मंगल	20/08/1994

शुक्र - शनि	
20/08/1994	
31/07/1996	
शनि	25/10/1994
गुरु	27/02/1995
राहु	17/05/1995
शुक्र	02/10/1995
सूर्य	11/11/1995
चंद्र	17/02/1996
मंगल	10/04/1996
बुध	31/07/1996

शुक्र - गुरु	
31/07/1996	
10/04/2000	
गुरु	25/03/1997
राहु	22/08/1997
शुक्र	11/05/1998
सूर्य	25/07/1998
चंद्र	29/01/1999
मंगल	09/05/1999
बुध	07/12/1999
शनि	10/04/2000

शुक्र - राहु	
10/04/2000	
10/08/2002	
राहु	14/07/2000
शुक्र	26/12/2000
सूर्य	12/02/2001
चंद्र	10/06/2001
मंगल	12/08/2001
बुध	24/12/2001
शनि	13/03/2002
गुरु	10/08/2002

सूर्य - सूर्य	
10/08/2002	
10/12/2002	
सूर्य	17/08/2002
चंद्र	03/09/2002
मंगल	12/09/2002
बुध	01/10/2002
शनि	12/10/2002
गुरु	03/11/2002
राहु	16/11/2002
शुक्र	10/12/2002

सूर्य - चंद्र	
10/12/2002	
10/10/2003	
चंद्र	21/01/2003
मंगल	13/02/2003
बुध	02/04/2003
शनि	30/04/2003
गुरु	23/06/2003
राहु	26/07/2003
शुक्र	24/09/2003
सूर्य	10/10/2003

सूर्य - मंगल	
10/10/2003	
21/03/2004	
मंगल	22/10/2003
बुध	17/11/2003
शनि	02/12/2003
गुरु	31/12/2003
राहु	18/01/2004
शुक्र	18/02/2004
सूर्य	27/02/2004
चंद्र	21/03/2004

सूर्य - बुध	
21/03/2004	
01/03/2005	
बुध	14/05/2004
शनि	15/06/2004
गुरु	15/08/2004
राहु	22/09/2004
शुक्र	28/11/2004
सूर्य	17/12/2004
चंद्र	03/02/2005
मंगल	01/03/2005

सूर्य - शनि	
01/03/2005	
20/09/2005	
शनि	20/03/2005
गुरु	24/04/2005
राहु	17/05/2005
शुक्र	25/06/2005
सूर्य	07/07/2005
चंद्र	04/08/2005
मंगल	19/08/2005
बुध	20/09/2005

सूर्य - गुरु	
20/09/2005	
10/10/2006	
गुरु	26/11/2005
राहु	08/01/2006
शुक्र	24/03/2006
सूर्य	15/04/2006
चंद्र	07/06/2006
मंगल	06/07/2006
बुध	05/09/2006
शनि	10/10/2006

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध	
10/10/2006		11/06/2007		10/08/2008		10/09/2010		21/10/2011	
11/06/2007		10/08/2008		10/09/2010		21/10/2011		01/03/2014	
राहु	06/11/2006	शुक्र	02/09/2007	चंद्र	24/11/2008	मंगल	10/10/2010	बुध	04/03/2012
शुक्र	24/12/2006	सूर्य	25/09/2007	मंगल	19/01/2009	बुध	13/12/2010	शनि	23/05/2012
सूर्य	06/01/2007	चंद्र	23/11/2007	बुध	19/05/2009	शनि	19/01/2011	गुरु	22/10/2012
चंद्र	09/02/2007	मंगल	25/12/2007	शनि	28/07/2009	गुरु	01/04/2011	राहु	26/01/2013
मंगल	27/02/2007	बुध	01/03/2008	गुरु	09/12/2009	राहु	16/05/2011	शुक्र	12/07/2013
बुध	06/04/2007	शनि	10/04/2008	राहु	04/03/2010	शुक्र	03/08/2011	सूर्य	29/08/2013
शनि	29/04/2007	गुरु	23/06/2008	शुक्र	30/07/2010	सूर्य	25/08/2011	चंद्र	27/12/2013
गुरु	11/06/2007	राहु	10/08/2008	सूर्य	10/09/2010	चंद्र	21/10/2011	मंगल	01/03/2014

चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
01/03/2014		21/07/2015		11/03/2018		10/11/2019		10/10/2022	
21/07/2015		11/03/2018		10/11/2019		10/10/2022		11/08/2023	
शनि	17/04/2014	गुरु	07/01/2016	राहु	18/05/2018	शुक्र	04/06/2020	सूर्य	27/10/2022
गुरु	15/07/2014	राहु	23/04/2016	शुक्र	13/09/2018	सूर्य	02/08/2020	चंद्र	08/12/2022
राहु	10/09/2014	शुक्र	27/10/2016	सूर्य	17/10/2018	चंद्र	28/12/2020	मंगल	31/12/2022
शुक्र	17/12/2014	सूर्य	20/12/2016	चंद्र	10/01/2019	मंगल	17/03/2021	बुध	17/02/2023
सूर्य	14/01/2015	चंद्र	03/05/2017	मंगल	24/02/2019	बुध	01/09/2021	शनि	17/03/2023
चंद्र	26/03/2015	मंगल	13/07/2017	बुध	30/05/2019	शनि	08/12/2021	गुरु	10/05/2023
मंगल	02/05/2015	बुध	12/12/2017	शनि	26/07/2019	गुरु	14/06/2022	राहु	12/06/2023
बुध	21/07/2015	शनि	11/03/2018	गुरु	10/11/2019	राहु	10/10/2022	शुक्र	11/08/2023

मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु	
11/08/2023		14/03/2024		17/06/2025		15/03/2026		11/08/2027	
14/03/2024		17/06/2025		15/03/2026		11/08/2027		30/06/2028	
मंगल	27/08/2023	बुध	25/05/2024	शनि	12/07/2025	गुरु	13/06/2026	राहु	16/09/2027
बुध	30/09/2023	शनि	07/07/2024	गुरु	29/08/2025	राहु	09/08/2026	शुक्र	18/11/2027
शनि	20/10/2023	गुरु	26/09/2024	राहु	28/09/2025	शुक्र	17/11/2026	सूर्य	06/12/2027
गुरु	27/11/2023	राहु	16/11/2024	शुक्र	19/11/2025	सूर्य	16/12/2026	चंद्र	20/01/2028
राहु	21/12/2023	शुक्र	13/02/2025	सूर्य	04/12/2025	चंद्र	25/02/2027	मंगल	13/02/2028
शुक्र	01/02/2024	सूर्य	11/03/2025	चंद्र	11/01/2026	मंगल	04/04/2027	बुध	04/04/2028
सूर्य	13/02/2024	चंद्र	14/05/2025	मंगल	31/01/2026	बुध	24/06/2027	शनि	04/05/2028
चंद्र	14/03/2024	मंगल	17/06/2025	बुध	15/03/2026	शनि	11/08/2027	गुरु	30/06/2028

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
30/06/2028		19/01/2030		01/07/2030		11/08/2031		14/04/2034	
19/01/2030		01/07/2030		11/08/2031		14/04/2034		10/11/2035	
शुक्र	19/10/2028	सूर्य	28/01/2030	चंद्र	26/08/2030	बुध	11/01/2032	शनि	06/06/2034
सूर्य	19/11/2028	चंद्र	20/02/2030	मंगल	25/09/2030	शनि	11/04/2032	गुरु	15/09/2034
चंद्र	06/02/2029	मंगल	04/03/2030	बुध	28/11/2030	गुरु	30/09/2032	राहु	18/11/2034
मंगल	20/03/2029	बुध	30/03/2030	शनि	05/01/2031	राहु	16/01/2033	शुक्र	10/03/2035
बुध	18/06/2029	शनि	14/04/2030	गुरु	17/03/2031	शुक्र	26/07/2033	सूर्य	11/04/2035
शनि	09/08/2029	गुरु	12/05/2030	राहु	01/05/2031	सूर्य	18/09/2033	चंद्र	30/06/2035
गुरु	17/11/2029	राहु	30/05/2030	शुक्र	19/07/2031	चंद्र	01/02/2034	मंगल	11/08/2035
राहु	19/01/2030	शुक्र	01/07/2030	सूर्य	11/08/2031	मंगल	14/04/2034	बुध	10/11/2035

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
10/11/2035		06/11/2038		26/09/2040		17/01/2044		26/12/2044	
06/11/2038		26/09/2040		17/01/2044		26/12/2044		08/05/2047	
गुरु	20/05/2036	राहु	22/01/2039	शुक्र	19/05/2041	सूर्य	05/02/2044	चंद्र	25/04/2045
राहु	18/09/2036	शुक्र	05/06/2039	सूर्य	25/07/2041	चंद्र	24/03/2044	मंगल	28/06/2045
शुक्र	19/04/2037	सूर्य	13/07/2039	चंद्र	09/01/2042	मंगल	18/04/2044	बुध	11/11/2045
सूर्य	19/06/2037	चंद्र	17/10/2039	मंगल	08/04/2042	बुध	11/06/2044	शनि	30/01/2046
चंद्र	17/11/2037	मंगल	07/12/2039	बुध	15/10/2042	शनि	13/07/2044	गुरु	30/06/2046
मंगल	06/02/2038	बुध	25/03/2040	शनि	04/02/2043	गुरु	12/09/2044	राहु	04/10/2046
बुध	28/07/2038	शनि	28/05/2040	गुरु	04/09/2043	राहु	20/10/2044	शुक्र	21/03/2047
शनि	06/11/2038	गुरु	26/09/2040	राहु	17/01/2044	शुक्र	26/12/2044	सूर्य	08/05/2047

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
08/05/2047		10/08/2048		14/07/2049		18/04/2051		27/05/2052	
10/08/2048		14/07/2049		18/04/2051		27/05/2052		08/05/2054	
मंगल	11/06/2047	शनि	10/09/2048	गुरु	04/11/2049	राहु	02/06/2051	शुक्र	13/10/2052
बुध	22/08/2047	गुरु	09/11/2048	राहु	14/01/2050	शुक्र	20/08/2051	सूर्य	21/11/2052
शनि	04/10/2047	राहु	16/12/2048	शुक्र	19/05/2050	सूर्य	11/09/2051	चंद्र	28/02/2053
गुरु	24/12/2047	शुक्र	20/02/2049	सूर्य	24/06/2050	चंद्र	07/11/2051	मंगल	21/04/2053
राहु	13/02/2048	सूर्य	11/03/2049	चंद्र	21/09/2050	मंगल	07/12/2051	बुध	11/08/2053
शुक्र	12/05/2048	चंद्र	27/04/2049	मंगल	08/11/2050	बुध	08/02/2052	शनि	16/10/2053
सूर्य	07/06/2048	मंगल	22/05/2049	बुध	17/02/2051	शनि	17/03/2052	गुरु	18/02/2054
चंद्र	10/08/2048	बुध	14/07/2049	शनि	18/04/2051	गुरु	27/05/2052	राहु	08/05/2054

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 6 वर्ष 10 मास 16 दिन

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
19/09/1950	06/08/1957	06/08/1965	06/08/1966	06/08/1968
06/08/1957	06/08/1965	06/08/1966	06/08/1968	06/08/1971
सिद्ध 16/12/1951	संक 17/05/1959	मंग 16/08/1965	पिंग 16/09/1966	धांय 05/11/1968
संक 06/07/1953	मंग 06/08/1959	पिंग 05/09/1965	धांय 16/11/1966	भ्राम 07/03/1969
मंग 15/09/1953	पिंग 16/01/1960	धांय 06/10/1965	भ्राम 05/02/1967	भद्रि 06/08/1969
पिंग 04/02/1954	धांय 15/09/1960	भ्राम 15/11/1965	भद्रि 17/05/1967	उल्क 04/02/1970
धांय 06/09/1954	भ्राम 06/08/1961	भद्रि 05/01/1966	उल्क 16/09/1967	सिद्ध 06/09/1970
भ्राम 17/06/1955	भद्रि 16/09/1962	उल्क 07/03/1966	सिद्ध 05/02/1968	संक 07/05/1971
भद्रि 06/06/1956	उल्क 16/01/1964	सिद्ध 17/05/1966	संक 16/07/1968	मंग 06/06/1971
उल्क 06/08/1957	सिद्ध 06/08/1965	संक 06/08/1966	मंग 06/08/1968	पिंग 06/08/1971

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
06/08/1971	06/08/1975	06/08/1980	06/08/1986	06/08/1993
06/08/1975	06/08/1980	06/08/1986	06/08/1993	06/08/2001
भ्राम 16/01/1972	भद्रि 16/04/1976	उल्क 06/08/1981	सिद्ध 16/12/1987	संक 17/05/1995
भद्रि 06/08/1972	उल्क 14/02/1977	सिद्ध 06/10/1982	संक 06/07/1989	मंग 06/08/1995
उल्क 06/04/1973	सिद्ध 04/02/1978	संक 05/02/1984	मंग 15/09/1989	पिंग 16/01/1996
सिद्ध 15/01/1974	संक 17/03/1979	मंग 06/04/1984	पिंग 04/02/1990	धांय 15/09/1996
संक 06/12/1974	मंग 07/05/1979	पिंग 06/08/1984	धांय 06/09/1990	भ्राम 06/08/1997
मंग 15/01/1975	पिंग 17/08/1979	धांय 04/02/1985	भ्राम 17/06/1991	भद्रि 16/09/1998
पिंग 07/04/1975	धांय 16/01/1980	भ्राम 06/10/1985	भद्रि 06/06/1992	उल्क 16/01/2000
धांय 06/08/1975	भ्राम 06/08/1980	भद्रि 06/08/1986	उल्क 06/08/1993	सिद्ध 06/08/2001

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
06/08/2001		06/08/2002		06/08/2004		06/08/2007		06/08/2011	
06/08/2002		06/08/2004		06/08/2007		06/08/2011		06/08/2016	
मंग	16/08/2001	पिंग	16/09/2002	धांय	05/11/2004	भ्राम	16/01/2008	भद्रि	16/04/2012
पिंग	05/09/2001	धांय	16/11/2002	भ्राम	07/03/2005	भद्रि	06/08/2008	उल्क	14/02/2013
धांय	06/10/2001	भ्राम	05/02/2003	भद्रि	06/08/2005	उल्क	06/04/2009	सिद्ध	04/02/2014
भ्राम	15/11/2001	भद्रि	17/05/2003	उल्क	04/02/2006	सिद्ध	15/01/2010	संक	17/03/2015
भद्रि	05/01/2002	उल्क	16/09/2003	सिद्ध	06/09/2006	संक	06/12/2010	मंग	07/05/2015
उल्क	07/03/2002	सिद्ध	05/02/2004	संक	07/05/2007	मंग	15/01/2011	पिंग	17/08/2015
सिद्ध	17/05/2002	संक	16/07/2004	मंग	06/06/2007	पिंग	07/04/2011	धांय	16/01/2016
संक	06/08/2002	मंग	06/08/2004	पिंग	06/08/2007	धांय	06/08/2011	भ्राम	06/08/2016

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
06/08/2016		06/08/2022		06/08/2029		06/08/2037		06/08/2038	
06/08/2022		06/08/2029		06/08/2037		06/08/2038		06/08/2040	
उल्क	06/08/2017	सिद्ध	16/12/2023	संक	17/05/2031	मंग	16/08/2037	पिंग	16/09/2038
सिद्ध	06/10/2018	संक	06/07/2025	मंग	06/08/2031	पिंग	05/09/2037	धांय	16/11/2038
संक	05/02/2020	मंग	15/09/2025	पिंग	16/01/2032	धांय	06/10/2037	भ्राम	05/02/2039
मंग	06/04/2020	पिंग	04/02/2026	धांय	15/09/2032	भ्राम	15/11/2037	भद्रि	17/05/2039
पिंग	06/08/2020	धांय	06/09/2026	भ्राम	06/08/2033	भद्रि	05/01/2038	उल्क	16/09/2039
धांय	04/02/2021	भ्राम	17/06/2027	भद्रि	16/09/2034	उल्क	07/03/2038	सिद्ध	05/02/2040
भ्राम	06/10/2021	भद्रि	06/06/2028	उल्क	16/01/2036	सिद्ध	17/05/2038	संक	16/07/2040
भद्रि	06/08/2022	उल्क	06/08/2029	सिद्ध	06/08/2037	संक	06/08/2038	मंग	06/08/2040

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
06/08/2040		06/08/2043		06/08/2047		06/08/2052		06/08/2058	
06/08/2043		06/08/2047		06/08/2052		06/08/2058		00/00/0000	
धांय	05/11/2040	भ्राम	16/01/2044	भद्रि	16/04/2048	उल्क	06/08/2053	सिद्ध	19/09/2058
भ्राम	07/03/2041	भद्रि	06/08/2044	उल्क	14/02/2049	सिद्ध	06/10/2054		00/00/0000
भद्रि	06/08/2041	उल्क	06/04/2045	सिद्ध	04/02/2050	संक	05/02/2056		00/00/0000
उल्क	04/02/2042	सिद्ध	15/01/2046	संक	17/03/2051	मंग	06/04/2056		00/00/0000
सिद्ध	06/09/2042	संक	06/12/2046	मंग	07/05/2051	पिंग	06/08/2056		00/00/0000
संक	07/05/2043	मंग	15/01/2047	पिंग	17/08/2051	धांय	04/02/2057		00/00/0000
मंग	06/06/2043	पिंग	07/04/2047	धांय	16/01/2052	भ्राम	06/10/2057		00/00/0000
पिंग	06/08/2043	धांय	06/08/2047	भ्राम	06/08/2052	भद्रि	06/08/2058		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक	
04/02/2026		06/09/2026		17/06/2027		06/06/2028		06/08/2029	
06/09/2026		17/06/2027		06/06/2028		06/08/2029		17/05/2031	
धांय	22/02/2026	भ्राम	07/10/2026	भद्रि	05/08/2027	उल्क	16/08/2028	संक	28/12/2029
भ्राम	18/03/2026	भद्रि	16/11/2026	उल्क	03/10/2027	सिद्ध	07/11/2028	मंग	15/01/2030
भद्रि	17/04/2026	उल्क	02/01/2027	सिद्ध	11/12/2027	संक	09/02/2029	पिंग	20/02/2030
उल्क	22/05/2026	सिद्ध	26/02/2027	संक	28/02/2028	मंग	21/02/2029	धांय	15/04/2030
सिद्ध	02/07/2026	संक	30/04/2027	मंग	09/03/2028	पिंग	17/03/2029	भ्राम	27/06/2030
संक	19/08/2026	मंग	08/05/2027	पिंग	29/03/2028	धांय	21/04/2029	भद्रि	25/09/2030
मंग	25/08/2026	पिंग	24/05/2027	धांय	27/04/2028	भ्राम	08/06/2029	उल्क	11/01/2031
पिंग	06/09/2026	धांय	17/06/2027	भ्राम	06/06/2028	भद्रि	06/08/2029	सिद्ध	17/05/2031

संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि	
17/05/2031		06/08/2031		16/01/2032		15/09/2032		06/08/2033	
06/08/2031		16/01/2032		15/09/2032		06/08/2033		16/09/2034	
मंग	19/05/2031	पिंग	15/08/2031	धांय	05/02/2032	भ्राम	21/10/2032	भद्रि	01/10/2033
पिंग	24/05/2031	धांय	29/08/2031	भ्राम	03/03/2032	भद्रि	05/12/2032	उल्क	08/12/2033
धांय	31/05/2031	भ्राम	16/09/2031	भद्रि	06/04/2032	उल्क	28/01/2033	सिद्ध	25/02/2034
भ्राम	09/06/2031	भद्रि	08/10/2031	उल्क	16/05/2032	सिद्ध	02/04/2033	संक	26/05/2034
भद्रि	20/06/2031	उल्क	05/11/2031	सिद्ध	03/07/2032	संक	13/06/2033	मंग	06/06/2034
उल्क	04/07/2031	सिद्ध	06/12/2031	संक	26/08/2032	मंग	22/06/2033	पिंग	29/06/2034
सिद्ध	19/07/2031	संक	11/01/2032	मंग	02/09/2032	पिंग	10/07/2033	धांय	02/08/2034
संक	06/08/2031	मंग	16/01/2032	पिंग	15/09/2032	धांय	06/08/2033	भ्राम	16/09/2034

संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय	
16/09/2034		16/01/2036		06/08/2037		16/08/2037		05/09/2037	
16/01/2036		06/08/2037		16/08/2037		05/09/2037		06/10/2037	
उल्क	06/12/2034	सिद्ध	05/05/2036	मंग	06/08/2037	पिंग	17/08/2037	धांय	08/09/2037
सिद्ध	11/03/2035	संक	08/09/2036	पिंग	07/08/2037	धांय	19/08/2037	भ्राम	11/09/2037
संक	27/06/2035	मंग	24/09/2036	धांय	08/08/2037	भ्राम	21/08/2037	भद्रि	15/09/2037
मंग	10/07/2035	पिंग	26/10/2036	भ्राम	09/08/2037	भद्रि	24/08/2037	उल्क	21/09/2037
पिंग	06/08/2035	धांय	12/12/2036	भद्रि	10/08/2037	उल्क	27/08/2037	सिद्ध	26/09/2037
धांय	16/09/2035	भ्राम	13/02/2037	उल्क	12/08/2037	सिद्ध	31/08/2037	संक	03/10/2037
भ्राम	09/11/2035	भद्रि	03/05/2037	सिद्ध	14/08/2037	संक	05/09/2037	मंग	04/10/2037
भद्रि	16/01/2036	उल्क	06/08/2037	संक	16/08/2037	मंग	05/09/2037	पिंग	06/10/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक	
06/10/2037		15/11/2037		05/01/2038		07/03/2038		17/05/2038	
15/11/2037		05/01/2038		07/03/2038		17/05/2038		06/08/2038	
भ्राम	10/10/2037	भद्रि	22/11/2037	उल्क	15/01/2038	सिद्ध	21/03/2038	संक	04/06/2038
भद्रि	16/10/2037	उल्क	01/12/2037	सिद्ध	27/01/2038	संक	06/04/2038	मंग	06/06/2038
उल्क	23/10/2037	सिद्ध	11/12/2037	संक	10/02/2038	मंग	07/04/2038	पिंग	11/06/2038
सिद्ध	31/10/2037	संक	22/12/2037	मंग	11/02/2038	पिंग	11/04/2038	धांय	18/06/2038
संक	09/11/2037	मंग	23/12/2037	पिंग	15/02/2038	धांय	17/04/2038	भ्राम	27/06/2038
मंग	10/11/2037	पिंग	26/12/2037	धांय	20/02/2038	भ्राम	25/04/2038	भद्रि	08/07/2038
पिंग	12/11/2037	धांय	30/12/2037	भ्राम	26/02/2038	भद्रि	05/05/2038	उल्क	21/07/2038
धांय	15/11/2037	भ्राम	05/01/2038	भद्रि	07/03/2038	उल्क	17/05/2038	सिद्ध	06/08/2038

पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क	
06/08/2038		16/09/2038		16/11/2038		05/02/2039		17/05/2039	
16/09/2038		16/11/2038		05/02/2039		17/05/2039		16/09/2039	
पिंग	08/08/2038	धांय	21/09/2038	भ्राम	25/11/2038	भद्रि	19/02/2039	उल्क	06/06/2039
धांय	12/08/2038	भ्राम	28/09/2038	भद्रि	06/12/2038	उल्क	08/03/2039	सिद्ध	30/06/2039
भ्राम	16/08/2038	भद्रि	06/10/2038	उल्क	19/12/2038	सिद्ध	27/03/2039	संक	27/07/2039
भद्रि	22/08/2038	उल्क	16/10/2038	सिद्ध	04/01/2039	संक	19/04/2039	मंग	31/07/2039
उल्क	29/08/2038	सिद्ध	28/10/2038	संक	22/01/2039	मंग	22/04/2039	पिंग	06/08/2039
सिद्ध	06/09/2038	संक	11/11/2038	मंग	24/01/2039	पिंग	27/04/2039	धांय	17/08/2039
संक	15/09/2038	मंग	12/11/2038	पिंग	29/01/2039	धांय	06/05/2039	भ्राम	30/08/2039
मंग	16/09/2038	पिंग	16/11/2038	धांय	05/02/2039	भ्राम	17/05/2039	भद्रि	16/09/2039

पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम	
16/09/2039		05/02/2040		16/07/2040		06/08/2040		05/11/2040	
05/02/2040		16/07/2040		06/08/2040		05/11/2040		07/03/2041	
सिद्ध	14/10/2039	संक	12/03/2040	मंग	17/07/2040	धांय	13/08/2040	भ्राम	18/11/2040
संक	14/11/2039	मंग	17/03/2040	पिंग	18/07/2040	भ्राम	23/08/2040	भद्रि	05/12/2040
मंग	18/11/2039	पिंग	26/03/2040	धांय	20/07/2040	भद्रि	05/09/2040	उल्क	26/12/2040
पिंग	26/11/2039	धांय	08/04/2040	भ्राम	22/07/2040	उल्क	20/09/2040	सिद्ध	18/01/2041
धांय	08/12/2039	भ्राम	26/04/2040	भद्रि	25/07/2040	सिद्ध	08/10/2040	संक	14/02/2041
भ्राम	24/12/2039	भद्रि	19/05/2040	उल्क	28/07/2040	संक	28/10/2040	मंग	18/02/2041
भद्रि	12/01/2040	उल्क	15/06/2040	सिद्ध	01/08/2040	मंग	31/10/2040	पिंग	25/02/2041
उल्क	05/02/2040	सिद्ध	16/07/2040	संक	06/08/2040	पिंग	05/11/2040	धांय	07/03/2041

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृश्चिक 0 वर्ष 0 मास 25 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : पूर्वाषाढ़ा - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष	
19/09/1950		15/10/1950		15/10/1966		16/10/1975		15/10/1996	
15/10/1950		15/10/1966		16/10/1975		15/10/1996		15/10/2001	
00/00/0000	तुला	07/05/1953	कन्या	07/08/1967	कर्क	13/03/1980	सिंह	14/01/1997	
00/00/0000	कन्या	15/10/1954	कर्क	27/06/1969	सिंह	01/04/1981	मिथु	27/06/1997	
00/00/0000	कर्क	24/02/1958	सिंह	09/12/1969	मिथु	20/02/1983	वृष	16/04/1998	
00/00/0000	सिंह	13/12/1958	मिथु	01/10/1970	वृष	01/07/1986	मेष	21/08/1998	
00/00/0000	मिथु	22/05/1960	वृष	10/03/1972	मेष	20/12/1987	मीन	20/02/1999	
00/00/0000	वृष	13/12/1962	मेष	26/10/1972	मीन	25/01/1990	वृश्चि	28/06/1999	
00/00/0000	मेष	26/01/1964	मीन	19/09/1973	वृश्चि	16/07/1991	तुला	15/04/2000	
19/09/1950	मीन	01/09/1965	वृश्चि	08/05/1974	तुला	24/11/1994	कन्या	26/09/2000	
मीन 15/10/1950	वृश्चि	15/10/1966	तुला	16/10/1975	कन्या	15/10/1996	कर्क	15/10/2001	

मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
15/10/2001		15/10/2010		15/10/2026		15/10/2033		16/10/2043	
15/10/2010		15/10/2026		15/10/2033		16/10/2043		19/09/2050	
मिथु	07/08/2002	वृष	07/05/2013	मेष	12/04/2027	मीन	15/10/2034	वृश्चि	11/04/2044
वृष	15/01/2004	मेष	20/06/2014	मीन	24/12/2027	वृश्चि	28/06/2035	तुला	26/05/2045
मेष	01/09/2004	मीन	26/01/2016	वृश्चि	20/06/2028	तुला	01/02/2037	कन्या	11/01/2046
मीन	27/07/2005	वृश्चि	10/03/2017	तुला	03/08/2029	कन्या	27/12/2037	कर्क	02/07/2047
वृश्चि	14/03/2006	तुला	01/10/2019	कन्या	21/03/2030	कर्क	02/02/2040	सिंह	06/11/2047
तुला	22/08/2007	कन्या	10/03/2021	कर्क	09/09/2031	सिंह	03/08/2040	मिथु	24/06/2048
कन्या	13/06/2008	कर्क	19/07/2024	सिंह	15/01/2032	मिथु	27/06/2041	वृष	07/08/2049
कर्क	04/05/2010	सिंह	07/05/2025	मिथु	01/09/2032	वृष	02/02/2043	मेष	02/02/2050
सिंह	15/10/2010	मिथु	15/10/2026	वृष	15/10/2033	मेष	16/10/2043	मीन	19/09/2050

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मिथु		मेष - मेष		मेष - मीन		मेष - वृश्चि		मेष - तुला	
07/05/2025		15/10/2026		12/04/2027		24/12/2027		20/06/2028	
15/10/2026		12/04/2027		24/12/2027		20/06/2028		03/08/2029	
मिथु	24/06/2025	मेष	28/10/2026	मीन	08/05/2027	वृश्चि	05/01/2028	तुला	24/08/2028
वृष	16/09/2025	मीन	15/11/2026	वृश्चि	26/05/2027	तुला	03/02/2028	कन्या	30/09/2028
मेष	23/10/2025	वृश्चि	27/11/2026	तुला	06/07/2027	कन्या	19/02/2028	कर्क	25/12/2028
मीन	14/12/2025	तुला	26/12/2026	कन्या	29/07/2027	कर्क	28/03/2028	सिंह	15/01/2029
वृश्चि	20/01/2026	कन्या	11/01/2027	कर्क	20/09/2027	सिंह	06/04/2028	मिथु	20/02/2029
तुला	14/04/2026	कर्क	18/02/2027	सिंह	03/10/2027	मिथु	22/04/2028	वृष	27/04/2029
कन्या	01/06/2026	सिंह	26/02/2027	मिथु	26/10/2027	वृष	20/05/2028	मेष	25/05/2029
कर्क	19/09/2026	मिथु	15/03/2027	वृष	06/12/2027	मेष	02/06/2028	मीन	05/07/2029
सिंह	15/10/2026	वृष	12/04/2027	मेष	24/12/2027	मीन	20/06/2028	वृश्चि	03/08/2029

मेष - कन्या		मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - मिथु		मेष - वृष	
03/08/2029		21/03/2030		09/09/2031		15/01/2032		01/09/2032	
21/03/2030		09/09/2031		15/01/2032		01/09/2032		15/10/2033	
कन्या	24/08/2029	कर्क	12/07/2030	सिंह	15/09/2031	मिथु	05/02/2032	वृष	05/11/2032
कर्क	11/10/2029	सिंह	08/08/2030	मिथु	27/09/2031	वृष	12/03/2032	मेष	04/12/2032
सिंह	22/10/2029	मिथु	25/09/2030	वृष	17/10/2031	मेष	28/03/2032	मीन	14/01/2033
मिथु	12/11/2029	वृष	20/12/2030	मेष	26/10/2031	मीन	20/04/2032	वृश्चि	12/02/2033
वृष	19/12/2029	मेष	26/01/2031	मीन	08/11/2031	वृश्चि	07/05/2032	तुला	18/04/2033
मेष	04/01/2030	मीन	21/03/2031	वृश्चि	17/11/2031	तुला	12/06/2032	कन्या	25/05/2033
मीन	27/01/2030	वृश्चि	28/04/2031	तुला	07/12/2031	कन्या	03/07/2032	कर्क	19/08/2033
वृश्चि	12/02/2030	तुला	23/07/2031	कन्या	19/12/2031	कर्क	20/08/2032	सिंह	08/09/2033
तुला	21/03/2030	कन्या	09/09/2031	कर्क	15/01/2032	सिंह	01/09/2032	मिथु	15/10/2033

मीन - मीन		मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - कर्क	
15/10/2033		15/10/2034		28/06/2035		01/02/2037		27/12/2037	
15/10/2034		28/06/2035		01/02/2037		27/12/2037		02/02/2040	
मीन	21/11/2033	वृश्चि	02/11/2034	तुला	29/09/2035	कन्या	03/03/2037	कर्क	06/06/2038
वृश्चि	16/12/2033	तुला	13/12/2034	कन्या	21/11/2035	कर्क	11/05/2037	सिंह	14/07/2038
तुला	13/02/2034	कन्या	05/01/2035	कर्क	23/03/2036	सिंह	27/05/2037	मिथु	22/09/2038
कन्या	17/03/2034	कर्क	28/02/2035	सिंह	21/04/2036	मिथु	26/06/2037	वृष	22/01/2039
कर्क	02/06/2034	सिंह	13/03/2035	मिथु	13/06/2036	वृष	18/08/2037	मेष	17/03/2039
सिंह	20/06/2034	मिथु	05/04/2035	वृष	14/09/2036	मेष	10/09/2037	मीन	02/06/2039
मिथु	23/07/2034	वृष	15/05/2035	मेष	25/10/2036	मीन	12/10/2037	वृश्चि	25/07/2039
वृष	20/09/2034	मेष	02/06/2035	मीन	22/12/2036	वृश्चि	04/11/2037	तुला	25/11/2039
मेष	15/10/2034	मीन	28/06/2035	वृश्चि	01/02/2037	तुला	27/12/2037	कन्या	02/02/2040

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - सिंह		मीन - मिथु		मीन - वृष		मीन - मेष		वृश्चि - वृश्चि	
02/02/2040		03/08/2040		27/06/2041		02/02/2043		16/10/2043	
03/08/2040		27/06/2041		02/02/2043		16/10/2043		11/04/2044	
सिंह	11/02/2040	मिथु	01/09/2040	वृष	29/09/2041	मेष	20/02/2043	वृश्चि	28/10/2043
मिथु	28/02/2040	वृष	24/10/2040	मेष	09/11/2041	मीन	17/03/2043	तुला	26/11/2043
वृष	28/03/2040	मेष	16/11/2040	मीन	06/01/2042	वृश्चि	04/04/2043	कन्या	12/12/2043
मेष	10/04/2040	मीन	19/12/2040	वृश्चि	16/02/2042	तुला	15/05/2043	कर्क	18/01/2044
मीन	28/04/2040	वृश्चि	11/01/2041	तुला	21/05/2042	कन्या	07/06/2043	सिंह	27/01/2044
वृश्चि	11/05/2040	तुला	04/03/2041	कन्या	12/07/2042	कर्क	31/07/2043	मिथु	12/02/2044
तुला	09/06/2040	कन्या	03/04/2041	कर्क	12/11/2042	सिंह	13/08/2043	वृष	12/03/2044
कन्या	25/06/2040	कर्क	11/06/2041	सिंह	11/12/2042	मिथु	05/09/2043	मेष	25/03/2044
कर्क	03/08/2040	सिंह	27/06/2041	मिथु	02/02/2043	वृष	16/10/2043	मीन	11/04/2044

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - मिथु	
11/04/2044		26/05/2045		11/01/2046		02/07/2047		06/11/2047	
26/05/2045		11/01/2046		02/07/2047		06/11/2047		24/06/2048	
तुला	16/06/2044	कन्या	15/06/2045	कर्क	03/05/2046	सिंह	08/07/2047	मिथु	27/11/2047
कन्या	23/07/2044	कर्क	03/08/2045	सिंह	30/05/2046	मिथु	19/07/2047	वृष	03/01/2048
कर्क	17/10/2044	सिंह	14/08/2045	मिथु	18/07/2046	वृष	09/08/2047	मेष	19/01/2048
सिंह	06/11/2044	मिथु	04/09/2045	वृष	11/10/2046	मेष	18/08/2047	मीन	11/02/2048
मिथु	13/12/2044	वृष	11/10/2045	मेष	18/11/2046	मीन	31/08/2047	वृश्चि	27/02/2048
वृष	16/02/2045	मेष	27/10/2045	मीन	11/01/2047	वृश्चि	09/09/2047	तुला	04/04/2048
मेष	17/03/2045	मीन	19/11/2045	वृश्चि	17/02/2047	तुला	29/09/2047	कन्या	25/04/2048
मीन	27/04/2045	वृश्चि	05/12/2045	तुला	14/05/2047	कन्या	11/10/2047	कर्क	12/06/2048
वृश्चि	26/05/2045	तुला	11/01/2046	कन्या	02/07/2047	कर्क	06/11/2047	सिंह	24/06/2048

वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन	
24/06/2048		07/08/2049		02/02/2050	
07/08/2049		02/02/2050		00/00/0000	
वृष	28/08/2048	मेष	19/08/2049	मीन	27/02/2050
मेष	26/09/2048	मीन	06/09/2049	वृश्चि	17/03/2050
मीन	06/11/2048	वृश्चि	19/09/2049	तुला	27/04/2050
वृश्चि	04/12/2048	तुला	17/10/2049	कन्या	20/05/2050
तुला	08/02/2049	कन्या	02/11/2049	कर्क	13/07/2050
कन्या	16/03/2049	कर्क	10/12/2049	सिंह	25/07/2050
कर्क	10/06/2049	सिंह	19/12/2049	मिथु	17/08/2050
सिंह	01/07/2049	मिथु	04/01/2050	वृष	19/09/2050
मिथु	07/08/2049	वृष	02/02/2050		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 3 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 3 वर्ष	
19/09/1950	
19/09/1953	
मेष	20/12/1950
मीन	21/03/1951
कुंभ	20/06/1951
मक	20/09/1951
धनु	20/12/1951
वृश्चि	20/03/1952
तुला	20/06/1952
कन्या	19/09/1952
सिंह	19/12/1952
कर्क	21/03/1953
मिथु	20/06/1953
वृष	19/09/1953

मेष 7 वर्ष	
19/09/1953	
19/09/1960	
वृष	20/04/1954
मिथु	19/11/1954
कर्क	20/06/1955
सिंह	19/01/1956
कन्या	19/08/1956
तुला	21/03/1957
वृश्चि	20/10/1957
धनु	21/05/1958
मक	20/12/1958
कुंभ	21/07/1959
मीन	19/02/1960
मेष	19/09/1960

मीन 1 वर्ष	
19/09/1960	
19/09/1961	
मेष	19/10/1960
वृष	19/11/1960
मिथु	19/12/1960
कर्क	19/01/1961
सिंह	18/02/1961
कन्या	21/03/1961
तुला	20/04/1961
वृश्चि	20/05/1961
धनु	20/06/1961
मक	20/07/1961
कुंभ	20/08/1961
मीन	19/09/1961

कुम्भ 6 वर्ष	
19/09/1961	
20/09/1967	
मीन	21/03/1962
मेष	19/09/1962
वृष	21/03/1963
मिथु	20/09/1963
कर्क	20/03/1964
सिंह	19/09/1964
कन्या	21/03/1965
तुला	19/09/1965
वृश्चि	21/03/1966
धनु	19/09/1966
मक	21/03/1967
कुंभ	20/09/1967

मकर 5 वर्ष	
20/09/1967	
19/09/1972	
धनु	19/02/1968
वृश्चि	20/07/1968
तुला	19/12/1968
कन्या	20/05/1969
सिंह	20/10/1969
कर्क	21/03/1970
मिथु	20/08/1970
वृष	19/01/1971
मेष	20/06/1971
मीन	20/11/1971
कुंभ	20/04/1972
मक	19/09/1972

धनु 2 वर्ष	
19/09/1972	
19/09/1974	
वृश्चि	19/11/1972
तुला	19/01/1973
कन्या	21/03/1973
सिंह	20/05/1973
कर्क	20/07/1973
मिथु	19/09/1973
वृष	19/11/1973
मेष	19/01/1974
मीन	21/03/1974
कुंभ	21/05/1974
मक	21/07/1974
धनु	19/09/1974

वृश्चिक 10 वर्ष	
19/09/1974	
19/09/1984	
तुला	21/07/1975
कन्या	20/05/1976
सिंह	21/03/1977
कर्क	19/01/1978
मिथु	19/11/1978
वृष	20/09/1979
मेष	20/07/1980
मीन	20/05/1981
कुंभ	21/03/1982
मक	19/01/1983
धनु	20/11/1983
वृश्चि	19/09/1984

तुला 10 वर्ष	
19/09/1984	
19/09/1994	
वृश्चि	20/07/1985
धनु	21/05/1986
मक	21/03/1987
कुंभ	19/01/1988
मीन	19/11/1988
मेष	19/09/1989
वृष	21/07/1990
मिथु	21/05/1991
कर्क	20/03/1992
सिंह	19/01/1993
कन्या	19/11/1993
तुला	19/09/1994

कन्या 1 वर्ष	
19/09/1994	
20/09/1995	
तुला	20/10/1994
वृश्चि	19/11/1994
धनु	20/12/1994
मक	19/01/1995
कुंभ	19/02/1995
मीन	21/03/1995
मेष	20/04/1995
वृष	21/05/1995
मिथु	20/06/1995
कर्क	21/07/1995
सिंह	20/08/1995
कन्या	20/09/1995

सिंह 11 वर्ष	
20/09/1995	
19/09/2006	
कन्या	19/08/1996
तुला	20/07/1997
वृश्चि	20/06/1998
धनु	21/05/1999
मक	20/04/2000
कुंभ	21/03/2001
मीन	18/02/2002
मेष	19/01/2003
वृष	20/12/2003
मिथु	19/11/2004
कर्क	20/10/2005
सिंह	19/09/2006

कर्क 7 वर्ष	
19/09/2006	
19/09/2013	
मिथु	20/04/2007
वृष	20/11/2007
मेष	20/06/2008
मीन	19/01/2009
कुंभ	20/08/2009
मक	21/03/2010
धनु	20/10/2010
वृश्चि	21/05/2011
तुला	20/12/2011
कन्या	20/07/2012
सिंह	18/02/2013
कर्क	19/09/2013

मिथुन 2 वर्ष	
19/09/2013	
20/09/2015	
वृष	19/11/2013
मेष	19/01/2014
मीन	21/03/2014
कुंभ	21/05/2014
मक	21/07/2014
धनु	19/09/2014
वृश्चि	19/11/2014
तुला	19/01/2015
कन्या	21/03/2015
सिंह	21/05/2015
कर्क	21/07/2015
मिथु	20/09/2015

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

मिथु - मिथु	
21/07/2015	
20/09/2015	
वृष	26/07/2015
मेष	31/07/2015
मीन	05/08/2015
कुंभ	10/08/2015
मक	15/08/2015
धनु	20/08/2015
वृश्चि	25/08/2015
तुला	30/08/2015
कन्या	04/09/2015
सिंह	10/09/2015
कर्क	15/09/2015
मिथु	20/09/2015

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	95%	सुख, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	89%	सुख, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	78%	सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	73%	सन्तति सुख, सुख
लहसुनिया	केतु	72%	सन्तति सुख, सुख
गोमेद	राहु	66%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	19%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि
मूंगा	मंगल	0%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय

रत्न की शुभता

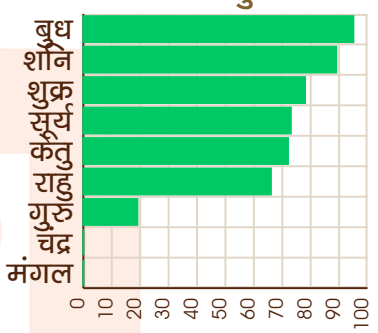

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	16/05/1970	61%	0%	0%	100%	19%	91%	95%	72%	78%
सूर्य	15/05/1976	86%	6%	9%	95%	31%	66%	77%	53%	59%
चंद्र	16/05/1986	80%	19%	0%	100%	19%	78%	89%	53%	59%
मंगल	16/05/1993	80%	6%	21%	83%	31%	78%	89%	53%	78%
राहु	16/05/2011	61%	0%	0%	95%	19%	84%	95%	78%	59%
गुरु	16/05/2027	80%	6%	9%	83%	44%	66%	89%	66%	72%
शनि	16/05/2046	61%	0%	0%	100%	19%	84%	100%	72%	59%
बुध	16/05/2063	80%	0%	0%	100%	19%	84%	89%	66%	72%
केतु	16/05/2070	61%	0%	9%	95%	19%	84%	77%	53%	84%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य, लहसुनिया एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज, मोती व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न धारण करने से आप वाद विवाद में चतुर और एक अच्छे सलाहकार बनेंगे। रत्न शुभता से आपमें धैर्य और ज्ञान पर्याप्त मात्रा में बना रहेगा। आप एक अच्छे नीतिज्ञ व्यक्ति बन सकते है। भाई बंधुओं से आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। यह रत्न आपकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपका अन्तज्ञान भी बडा समृद्ध होगा। आपकी रुचि गीत, संगीत या नृत्य क्षेत्र में हो सकती है। यह रत्न आपको लेखन, कार्यो में सफलता, माता-पिता का सुख, गणित विषय का ज्ञानी। आप समाज में प्रतिष्ठित और यशस्वी होंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण

कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। रत्न आपको परोपकारी, व्यवहार कुशल, पराक्रमी और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव देगा। हीरा रत्न प्रभाव से आप दूसरों का हित चाहने वाले, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाले व्यक्ति बनेंगे। शुक्र रत्न हीरा आपको बुद्धि एवं विद्या दोनो से धनी करेगा। आप मातृ भक्त और मात सेवक बनेंगे। सभी प्रकार के भौतिक सुख साधनों से आप संपन्न रहेंगे। हीरे की शक्तियां अच्छा घर, वाहन, आभूषण, वस्त्र आदि सब प्राप्त करने में सहयोग करेंगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1

रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते है। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में

सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी।

आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंड़ली में गुरु दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बृहस्पति रत्न पुखराज आपको आजीविका क्षेत्र में प्रतिकूल परिणाम देकर आपमें निराशा भाव ला सकता है। आर्थिक स्थिति प्रबल करने में आपको सामान्य से अधिक समय लग सकता है। रत्न का प्रभाव आपको ऋण संबंधी क्षेत्रों में परेशानियां दे सकता है। प्रवचन, जज और आयात निर्यात क्षेत्रों से आय, लाभ प्राप्ति में बाधाओं की स्थिति बन सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजनों का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। योग्यतानुसार कार्य प्राप्त न होने से आपका मन खिन्न रह सकता है। आप अपने सम्मान के प्रति सतर्क रहेंगे। कुटुंब के पक्ष से यह रत्न अनुकूल फलदायक नहीं होगा। आपको जन्म स्थान से दूर रहना पड़ सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में

कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यो में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपके जीवन साथी के क्रोध भाव में वृद्धि हो सकती है। आपका वैवाहिक जीवन दुःखमयी हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपका विवाह देरी से हो सकता है। जीवनसाथी के साथ व्यवहार में सरसता की कमी अलगाव तक लेकर जा सकती है। रत्न प्रभाव आपको बेचैनी और चिडचिडापन देने के साथ-साथ तर्क और बहस करने वाला भी बना सकता है। सफलता के लिए आपको कडी मेहनत करनी पड़ सकती है। रत्न धारण से वात रोग, पेट से संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तथा मुकद्दमों में धन हानि के योग बन सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(16/05/2011 - 16/05/2027)

गुरु की दशा में आपका नीलम, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(16/05/2027 - 16/05/2046)

शनि की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(16/05/2046 - 16/05/2063)

बुध की दशा में आपका पन्ना, नीलम, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(16/05/2063 - 16/05/2070)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा, लहसुनिया व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शुक्र - 16/05/1970

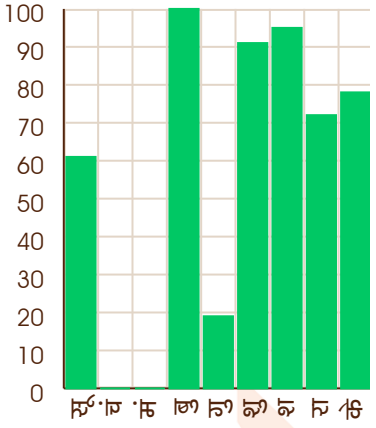

सूर्य - 15/05/1976

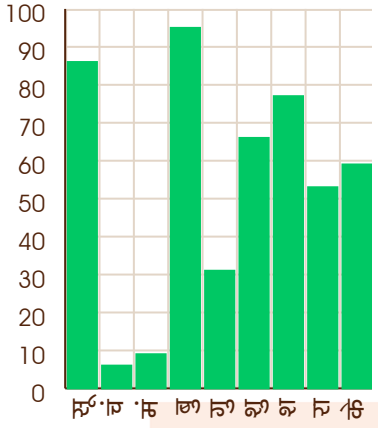

चन्द्र - 16/05/1986

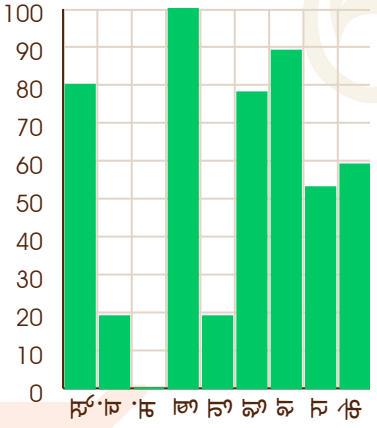

मंगल - 16/05/1993

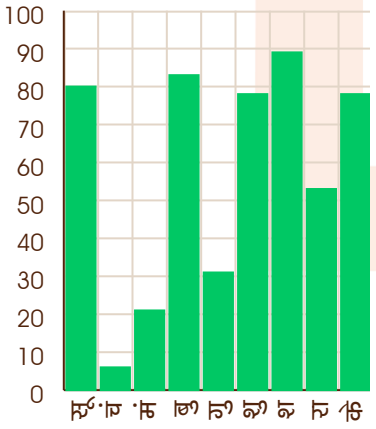

राहु - 16/05/2011

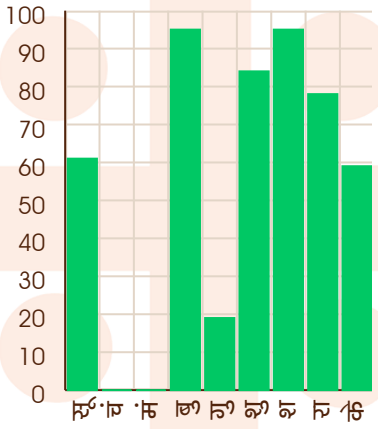

गुरु - 16/05/2027

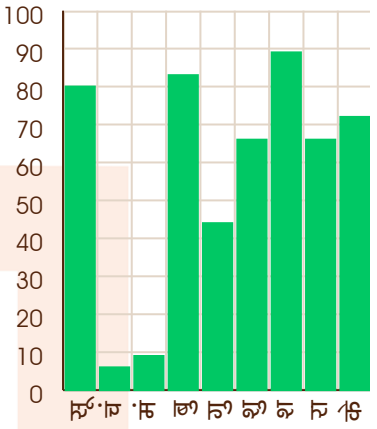

शनि - 16/05/2046

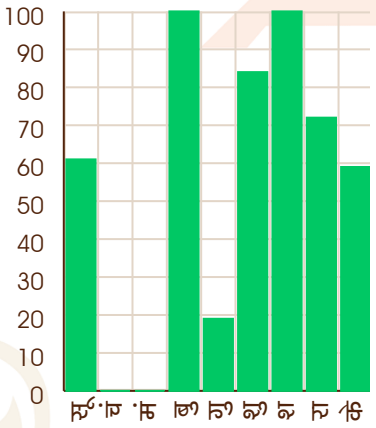

बुध - 16/05/2063

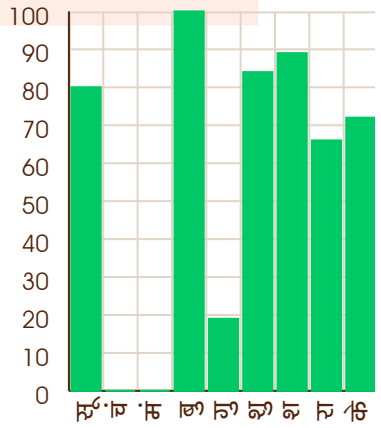

केतु - 16/05/2070

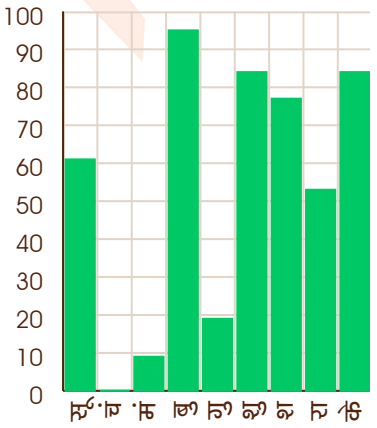

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	12/11/1955-08/02/1958	02/06/1958-07/11/1958	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/02/1958-02/06/1958	07/11/1958-02/02/1961	17/09/1961-08/10/1961
साढेसाती तृतीय ढैया	02/02/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है । दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 19 है। एक एवं नौ के योग से आपका मूलांक 1 होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक नौ का स्वामी मंगल है। इन दोनों ही ग्रहों का प्रभाव आप पर आयेगा। मूलांक एक के प्रभाववश आप सूर्य के समान समाज में लोकप्रिय होंगे। बहुतों का पालन करेंगे। उच्च महत्वाकांक्षाएं आपके अन्दर अधिक रहेंगी। संघर्ष, साहस एवं धैर्य से आप अपनी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे। जीवन में आप कई उच्च सफलताएं प्राप्त करेंगे। एकाध कार्यों में रुकावट भी आयेगी, जिसे आप सूर्य मंगल के प्रभाववश अपनी मेहनत, धैर्य एवं साहस से पार कर लेंगे।

अंक नौ के स्वामी मंगल के प्रभाव से आपमें अदम्य साहस रहेगा तथा आपकी हमेशा शत्रुओं को जीतने की इच्छा बलवती रहेगी। शत्रु के सामने आप हथियार नहीं डालेंगे और येन केन प्रकारेण शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। कभी-कभी आप दुःसाहस करेंगे। जिसका फल आपको ठीक नहीं मिलेगा। क्रोध से आपको हानि अधिक होगी। अतः क्रोध से हमेशा बचना आपके लिये हितकर रहेगा।

आपकी विचारधारा स्वतंत्र स्वभाव की रहेगी। इससे आपको किसी के आधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। जबकि स्वतंत्र प्रभार वाले कार्यों में आप तन मन धन से सेवा करेंगे और नाम तथा यश प्राप्त करेंगे। आपको अपने रोजगार-व्यापार में स्वतंत्र प्रभार वाले क्षेत्रों का चुनाव करना प्रगति में सहायक होगा। सामाजिक एवं संगठन के क्षेत्र में आप मुखिया के समान कार्य करेंगे एवं स्वयं की योजनानुसार कार्य करने पर आपको अच्छी ख्याति एवं लाभ प्राप्त होगा। सूर्य एवं मंगल का मिला जुला प्रभाव आपको उच्चता प्राप्त करायेगा।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 1 तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 1 के स्वामी सूर्य ग्रह का भाग्यांक 7 के स्वामी नेपच्यून ग्रह से सम संबंध होने के कारण आपको इन दोनों ही ग्रहों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। सूर्य के प्रभाववश आपकी सामाजिक स्थिति जहां उच्च कोटि की रहेगी, वहीं भाग्यांक स्वामी नेपच्यून या केतु के प्रभाववश आपके भाग्य में अचानक परिवर्तन होते रहेंगे। भाग्यांक स्वामी के कारण आपका भाग्य विघ्नों से ओतप्रोत रहेगा। कभी तो आपको बहुत अच्छी

सफलताएं प्राप्त होंगी और कभी आप असफलता भी प्राप्त करेंगे। मूलांक एवं भाग्यांक के प्रभाव से आपमें दूसरों को अपना बना लेने की कला अधिक रहेगी। आपके अंदर चुंबकीय आकर्षण शक्ति रहेगी, जो आपके रोजगार-व्यापार में काम आएगी। इससे आप अपने रोजगार में अधिक नाम एवं सफलता अर्जित करेंगे। रोजगार के क्षेत्र में दूर देशों से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी की रहेगी एवं सम्मान भरा जीवन प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष कि अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था तक विशेष सफलता प्राप्त करेगा तथा 34 से 37 वें वर्ष के भीतर उन्नति मिलेगी एवं 43 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, जुलाई अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा - कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार-व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस किया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में वृष लग्न के उदय काल हुआ था। जन्मकाल के समय ही मिथुन के नवमांश में कन्या द्रेष्काण भी उदित था। इस विन्दु पर जन्म के फलस्वरूप आपका जीवन सुखद, आरामदायक धन धान्य से पूर्ण आनंददायक जीवन व्यतीत होने की संभावनाओं का भी सृजन हुआ है।

आप व्यक्तिगत रूप से कठिन श्रम की भावना से समर्पित प्राणी हैं। आप अपने उद्य `श्यित कार्य को यथार्थता के साथ स्पष्ट रूप से संपादित करेंगे।

आप धन-धान्य की प्रर्याप्त प्राप्ति हेतु समझ से पूर्व नियत स्थान पर पहुंचने का निर्णय करेंगे। परंतु आप अपनी यह धारणा ग्रहण करें कि अतिरिक्त विकास एवं पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु अपने उद्देश्य का संपादन कर लेंगे। वास्तव में आपके लिए आकस्मिक रूप से मात्र आलस्यपूर्ण प्रवृत्ति का त्याग करना ही उत्तम होगा।

आप पहले से ही धन की महत्ता से परिचित हैं। आप कठिन श्रम एवं दुरुह रास्ते से धनोपार्जन करेंगे तथा धन के व्यय पर सतर्क भी रहेंगे। आप निश्चित रूप से बहुत उत्तम प्रकार के भौतिक सुख प्राप्ति हेतु, धनकोष का संग्रह करेंगे।

आप वित्तीय विषयक किसी भी प्रकार का दुरुपयोग सा सामंजस्य नही करेंगे।

आप अत्यंत धन संचय करने के लिए लोभ की पराकाष्ठा तक पहुंचे हुए प्राणी हैं। आप में पूर्ण विश्वसनीयता विद्यमान हैं। आप किसी का धन अनीतिपूर्ण ढंग से नही प्राप्त करना चाहते बल्कि आप धन प्राप्ति के लिए उपयुक्त सुअवसर पर ऐसा कार्यान्वयन करते हैं। क्योंकि सत्य तो यह है कि आप धन प्राप्ति संबंधी योजनाओं को सांसारिक रीति से बुद्धिमत्तापूर्वक समर्पित भाव से कार्य रूप देते हैं। साथ ही अन्य लोगों को भी धन प्राप्ति के लिए मार्ग दर्शन करते हैं।

आप किसी के साथ छेड़खानी करना या किसी पर आक्रमण करने पर विश्वास नही करते। आप एक आस्तिक प्राणी हैं। आप अपनी स्पष्ट वादिता पूर्वक संतोषजनक सफलता या, निकटता हेतु किसी को भी तरजीह देते हैं। परंतु जब कोई किसी भी समय या अवसर पर कोई शत्रुता पूर्वक आप से इर्ष्या करता है तो आप उसके प्रगति के पथ पर अवरोधक उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। आपका प्रदर्शन बाधा पूर्ण एवं विध्वांसात्मक रूप से व्यवधान कारक हो जाता हैं अस्तु आप अपने धैर्य को सीमा के बाहर जाने के लिए सतर्क रहें। अर्थात् अपने धैर्य का संतुलन बनाए रक्खें।

आप स्वाभाविक रूप से यांत्रिक कला में दक्ष एवं परिश्रम तथा समुचित खोजकर अपने लक्ष्य तक पहुंचने वाले प्राणी हैं। आप सामान्यतया प्रशासनिक सेवा कार्य हेतु उपयुक्त हैं। यथा होटल प्रबंधक, अथवा सौंदर्य प्रसाधित व्यवसाय आदि तथा आपकी रूचि साहित्यिक भावनानुसार हो, तों आप उच्च कोटि के लेखक भी हो सकते है यदि आप में लेखन कला एवं क्षमता विद्यमान हो। यद्यपि आप मध्यम कद के ऊंची कंधे वालें, उभरी छाती, उन्नत ललाट एवं

चमकीली आखों से युक्त सुंदर व्यक्तित्व के जीव हैं। आप से विपरीत योनि के प्राणी (स्त्री) आकर्षित रहेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन अति आनंददायक साथ-साथ कठिन एवं कोई न कोई आर्थिक समस्याओं से सदैव युक्त रहेगा। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन सुव्यवस्थित रहेगा। आप अपने नजदीकी और प्रियजनों को यथेष्ठ प्यार और सम्मान देंगे। आप अपने गले के रोग एवं टोनशील रोग के प्रति रक्षात्मक भावना रक्खें तथा कफ जनित तथा शीत प्रकोप से गले में होने वाले कष्ट तथा रोगों एवं पैरों की सूजन तथा दर्द की रक्षा हेतु सतर्क रहें।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

इसके अतिरिक्त आपके लिए अंक 2 तथा 8 अंक लाभदायक है। परंतु अंक 5 आपके लिए त्यागनीय है। इसी प्रकार लाल रंग भी आपके लिए प्रतिकूल है। जबकि, आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली रंग हरा, सफेद एवं गुलाबी रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा लग्नेश शुक्र भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्य बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक तथा अन्य कार्य कलापों को सामान्य बुद्धि से ही सम्पन्न करेंगे। आपको गंभीर समस्याओं का समाधान करने में काफी परिश्रम का सामना करना पड़ेगा। अतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करने में विलंब का सामना करना पड़ेगा। वैदिक एवं धर्मशास्त्र तथा दर्शन के ग्रन्थों में आपकी अल्प रूचि होगी परंतु आधुनिक एवं पाश्चात्य साहित्य एवं विज्ञान में अवश्य रूचि एवं अध्ययनशील होंगे तथा इनमें आप परिश्रम पूर्वक न्यूनाधिक मात्रा में सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगे। जिससे समाज में आपको यथोचित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी ।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा कई बार एक से अधिक प्रसंग भी आप स्थापित कर सकते है। आपके लिए प्रेम प्रसंगो में मर्यादा तथा आदर्श के भाव की न्यूनता होगी जिससे कई बार आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः ऐसी प्रवृतियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

केतु की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में काफी विलंब का सामना करना पड़ सकता है परंतु विलंब से ही सही संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति गुणवान, तेजस्वी एवं पराक्रमी होगी तथा जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में उनको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथापि अपनी आजीविका अर्जित करने में वे समर्थ होंगे। लेकिन वह हठी एवं मनमौजी प्रवृति के होंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी मर्जी से सम्पन्न करेंगे एवं माता पिता की सलाह लेना आवश्यक नहीं समझेंगे। माता पिता का ध्यान भी वृद्धावस्था में कम ही रखेंगे। अतः बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। माता की अपेक्षा पिता से उनका अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के ही माध्यम से करना पसन्द करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चों की उन्नति संतोषप्रद होगी तथा आजीविका प्राप्त करने की आवश्यक्ता ही पूर्ण होगी तथापि वे व्यवहार कुशल होंगे। अतः धन ऐश्वर्य की उनके पास कमी नहीं होगी। जिससे उनका जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरक्त वे स्वभाव से तेजस्वी भी होंगे अतः समय समय पर अन्य सामाजिक जनों से उनका वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे समाज में उनके एवं आपके मान सम्मान में कमी भी आ सकती है। अतः ऐसी स्थितियों की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए तभी आपका एवं उनका जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत हो सकता है।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है साथ ही मंगल भी सप्तम भाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी व्ययशील पित प्रकृति एवं धर्म के प्रति अल्प श्रद्धा वाला होता है परन्तु मंगल की स्वगृही स्थिति के कारण उसमें तेजस्विता पराक्रमी एवं बुद्धिमता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी पराक्रमी एवं साहसी होंगी वह एक शिक्षित एवं बुद्धिमती महिला होंगी तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। साहित्य एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि रहेगी एवं स्वगृही मंगल के प्रभाव से कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति वह ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी लेकिन स्वाभिमानी प्रवृति के कारण यदा कदा असहिष्णुता के भाव का प्रदर्शन भी कर सकती हैं।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौरवर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से वह पुष्ट एवं आकर्षक होंगी तथा अंग प्रत्यंगों की सुडौलता दर्शनीय रहेगी। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करेंगी एवं शारीरिक सुडौलता बनाए रखने के लिए व्यायाम या योगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त पाक शास्त्र में वह दक्ष होंगी तथा उनके द्वारा निर्मित स्वादिष्ट व्यंजनों से संबंधित लोग प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

सामान्यतया मंगल की सप्तम भाव में स्थिति के फलस्वरूप विवाह में अनावश्यक विलम्ब होता है लेकिन आपकी कुंडली में सप्तम भाव में स्वगृही मंगल के स्थित होने पर आपका विवाह यथोचित समय पर विज्ञापन या किसी बन्धु अथवा संबंधी के माध्यम से सम्पन्न होगा एवं इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शांति पूर्वक व्यतीत होगा तथा आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

आपका ससुराल किसी समृद्ध एवं सम्मानीय परिवार में होगा तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। विवाह में आपको दहेज या अन्य रूप से ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद भी उनसे नैतिक एवं आर्थिक सहयोग मिलता रहेगा। सास ससुर के मध्य आपके संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा एवं सम्मान का भाव रहेगा परन्तु उनकी तेजस्विता की प्रवृति से सास ससुर को किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। देवर एवं ननदों को भी वह अपने कार्य कलापों से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। यदि बन्धुवर्ग से साझेदारी की जाए तो इनसे इच्छित लाभ की

प्राप्ति हो सकती है

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क विर्तकों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही बृहस्पति भी दशम भाव में ही स्थित है। कुम्भ राशि एवं बृहस्पति दोनों वायुतत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका व्यवसाय निरन्तर उन्नतिशील रहेगा एवं इसमें श्रम की अपेक्षा बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की प्रमुखता रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से आप जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

केन्द्र में बृहस्पति के प्रभाव से आपकी आजीविका शिक्षक, अनुष्ठान कर्ता धर्मोपदेशक व्याख्याता या प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अथवा वित कम्पनियों में अधिकार प्राप्त पद, सूद, शेयर ब्रोकर किसी उच्चधिकारी के सलाहकार, सचिव एवं हवाई सेवाओं के विभाग उत्तम एवं श्रेष्ठ रहेंगे। यदि आप इन क्षेत्रों में अपनी आजीविका को प्रारम्भ करेंगे तो आपको जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा किसी भी प्रकार से अनावश्यक व्यवधान एवं समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिए आपको उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आप सुवर्ण आदि धातु व्यापार, खनिज पदार्थ, ब्याज आदि के कार्य से शेयर एवं वित्तकम्पनियों में पूंजी विनियोग से वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में सफल हो सकते है। साथ ही वकील आदि के रूप में भी व्यक्तिगत व्यवसाय हो सकता है एवं चार्टड लेखाकार कंपनी से भी आप यथोचित मात्राओं में लाभ प्राप्त कर सकते है। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में किसी एक को अपना व्यापारिक क्षेत्र बनाएंगे तो इसमें आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं यश की प्राप्ति होगी। साथ ही किसी सामाजिक या सार्वजनिक संस्था में भी उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे। इससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। लेकिन आपकी कुंडली में बृहस्पति अष्टमेश एवं एकादशेश है ये दोनों बाधक स्थान है। अतः मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा आप किंचत विलम्ब से प्राप्त कर सकते है एवं इसमें अनावश्यक बाधाएं भी उत्पन्न हो सकती है परन्तु इसकी आपको विशेष चिंता नहीं करनी चाहिए तथा अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए।

नैसर्गिक शुभग्रह बृहस्पति के प्रभाव से आपके पिता शिक्षित विद्वान सुस्वभाव एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से अन्य जनों को प्रभावित रखेंगे जिससे उनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा वात्सल्य के भाव की अधिकता होगी एवं आपकी शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। साथ ही उनके प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा समाज में यश भी अर्जित करेंगे। आप का भी उनके प्रतिपूर्ण सम्मान एवं श्रद्धा का भाव होगा तथा उनके आज्ञापालन में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त किंचित सैद्धांतिक या वैचारिक मतभेदों के होते हुये भी आप दोनों के

आपसी संबंधों में अनुकूलता बनी रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भु" या "भू" अक्षर से होगा यथा- भूदेव।

आप अपने जीवन काल में समस्त सुखैश्वर्य का प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के साथ अत्यन्त ही मधुर तथा प्रशंसनीय रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रशंसनीय रहेगी तथा इसी प्रिय एवं मधुरवाणी का आप अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे। आपका चरित्र निर्मल तथा अनुकरणीय रहेगा। साथ ही धन दौलत का आपके पास सामान्यतया अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में बार बार जल पीने की इच्छा जागृत होती रहेगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपको सर्वप्रकार से आनन्द तथा सुख प्रदान करने वाली पत्नी की प्राप्ति होगी अतः आपका सांसारिक जीवन अत्यन्त ही आनन्द एवं सुखपूर्वक व्यतीत होगा। समाज में आप एक आदरणीय तथा सम्माननीय व्यक्ति समझे जाएंगे। आप किसी अन्य से स्थिर मित्रता करना पसन्द करेंगे। अतः आपके अधिकांश मित्र बुद्धिमान तथा गुणवान रहेंगे। साथ ही आपके पास ऐश्वर्य एवं वैभव भी स्थिर मात्रा में ही रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके अर्न्तमन में अन्य जनों के उपकार करने की भावना सर्वदा विद्यमान रहेगी तथा अपने स्वजनों के अतिरिक्त अन्य जनों के उपकार करने के लिए भी आप सदैव तत्पर रहेंगे। अतः ऐसे कार्यों से आपका समाजिक सम्मान निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहेगा। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा अपने सौभाग्य से ही अनेक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप की बुद्धि भी अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी तथा अधिकांश

शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के कार्यों को करने में भी आप निपुण रहेंगे। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रिय भी रहेंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा समाज में सर्वप्रकार के मान सम्मान से युक्त रहेंगे। आपकी मुख्य विशेषता रह रहेगी कि आपके हृदय में स्वभाविक शान्ति विद्यमान रहेगी अनावश्यक रूप से आप कभी भी उत्तेजित नहीं होंगे तथा संकट काल में भी बुद्धि तथा धैर्य का अवलम्बन करके शान्ति एवं सहनशीलता के भाव का यत्नपूर्वक जीवन में पालन करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

धनु राशि में जन्म होने के कारण आपकी मुखाकृति तथा कण्ठभाग दीर्घता से युक्त रहेगे। आपके कान, ओंठ तथा दान्तों में भी स्थूलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही आपकी भुजाएं भी पुष्ट रहेगी। आपको पिता द्वारा अर्जित धन की पूर्ण रूपेण प्राप्ति होगी तथा इससे आप समृद्ध रहेंगे। आपकी दानशीलता की प्रवृति भी रहेगी। अतः समय समय पर यथाशक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन भी करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में पूर्ण रूचि रखेंगे। अतः काव्यादि सृजन में ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अतः शरीर में बल का अभाव नहीं होगा। आप उच्च श्रेणी के वक्ता होंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों से अन्य जनों को पूर्ण रूपेण प्रभावित करने में सफल रहेंगे। सभी लोग

आपको हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में विद्यमान रहेगी। चित्रकारी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसमें आप विशेष योग्यता भी प्राप्त कर सकेंगे। आप गम्भीर प्रवृति से युक्त होकर धर्म के विषय में विस्तृत ज्ञान भी रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके संबंध सामान्य ही रहेगे। इसके अतिरिक्त आप से बलपूर्वक कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करवाया जा सकेगा। आप केवल प्रेम तथा सम्मान से ही कार्य करेंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोल तथा सुन्दर रहेंगी एवं हाथ की लम्बाई भी सामान्य से अधिक दृष्टिगोचर होगी। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आपको पानी के नजदीक रहना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा। अतः अवसरानुकूल आप अपनी इस रूचि का भी पालन करते रहेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी स्वस्थ एवं पुष्ट रहेंगी। आपके अन्दर कृतज्ञता का सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप उसके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे तथा उसके उपकार को पूर्ण रूप से स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप हमेशा अपने किसी न किसी कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर कभी भी नहीं बैठेंगे। आप अत्यन्त ही वाक्पटु होंगे तथा आप वाणी की चतुरता से कई कार्यों को सिद्ध करेंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में भी सफल रहेंगे। आपकी प्रवृति त्याग की भावना से भी युक्त रहेगी। साथ ही आपका कद मध्यम रहेगा। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगे। शत्रुओं का नाश करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे तथा वे आपसे सर्वदा भयभीत से रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामान्य लोगों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय भी रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

विभिन्न प्रकार की कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे तथा हमेशा सदाचारी जीवन

व्यतीत करने के लिए जीवन में यत्नशील रहेंगे। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा आपको जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष उसे कह देंगे। इसके साथ ही आप सोच विचार कर अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा पुष्ट रहेंगे तथा अपने कुल एवं परिवार में भाईयों की अपेक्षा श्रेष्ठ माने जाएंगे। समस्त परिवारजन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप चित्रकारी या इंजीनियरिंग में विशेष सफलता अपने जीवन में अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप स्वभाव से ही शूरवीर तथा साहसी पुरूष रहेंगे। सत्य के प्रति आप निष्ठावान होंगे तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के स्वामी होंगे अतः आप अपने कार्य या आजीविका आदि को स्थिर रूप में ही करना पसन्द करेंगे। आप सभी लोगों के प्रति प्रेम तथा सम्मान की भावना का प्रदर्शन करेंगे तथा अनावश्यक वैमनस्य का भाव अपने मन में नहीं रखेंगे। आप एक सुन्दर पुरूष होंगे तथा सुन्दर सुशील एवं बुद्धिमती भार्या की आपको प्राप्ति होगी। आपकी प्रवृति नाटकों के प्रति भी रहेगी अतः इसे भी आप सम्पन्न करेंगे। आपका शरीर स्थूल रहेगा तथा कभी कभी आप ऐसे कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे समस्त कुल एवं परिवार को परेशानी तथा कष्ट की अनुभूति भी होगी लेकिन समाज में आपकी लोकप्रियता बनी रहेगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वप्रकार के सद्गुणों सम्मान तथा आदर से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगे। आप अपने अन्य भाईयों में निश्चित रूप से श्रेष्ठ एवं सम्माननीय समझे जाएंगे। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा। आपकी चाल अत्यन्त ही आकर्षक होगी परन्तु स्वभाव में सहनशीलता के भाव का प्रायः अभाव ही रहेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा जिसका आप समयानुसार यथाशक्ति पालन भी करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान तथा सादगी पूर्ण पुरूष रहेंगे। व्यर्थ की भौतिकता में आपका विश्वास नहीं रहेगा। साथ ही समाज में आप एक विद्वान के रूप में प्रसिद्ध रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति अत्यन्त ही चंचल रहेगी। आप मीठे पदार्थो के भक्षण के अत्यन्त शौकीन रहेंगे। धन के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसको प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही आतुर तथा प्रयत्नशील रहेंगे। यदा कदा आपका स्वभाव वाद विवाद में भी क्रियाशील रहेगा एवं किसी न किसी से आपका परस्पर विवाद चलता रहेगा। भावना की अधिकता भी आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा उत्तम एवं गुणवान सन्तति से आप हमेशा युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अनेक साहसी कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक

व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय मे आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इस प्रकार करने से आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्चशिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगे। सुखी माता-पिता से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाले, संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र के पिता होंगे। पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाले और शूरवीर होंगे, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगे। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप का रुतबा अच्छा होता जायेगा। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर पेट पर पड़ेगा और आपका स्वभाव क्रोधी होगा। पत्नी छोड़े या मर जाए या दूसरी शादी भी हो सकती है, ऐसा शक है। स्त्री की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्त्री द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ननिहाल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. साला, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा आठवें घर में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी औलाद पर अच्छा असर पड़ेगा। आपको पुत्र सुख निश्चय प्राप्त होगा। कृषि कार्य तथा आपकी पत्नी से विशेष मदद की आशा है। बहुत सी मुश्किलों को आप आसान कर सकते हैं, आपके जीवन के 34 साल तक समय साधारण रहेगा। विवाह के बाद आपका भाग्य चमक सकता है या 34 वर्ष

के बाद भाग्य चमकेगा। आप ईर्ष्यालु, रोगी, पिता या माता दोनों में से किसी एक के सुख से वंचित रहेंगे। धन कमाने में माहिर होंगे। ननिहाल-ससुराल का सुख मिलेगा। आप माता-पिता की सेवा करेंगे। आपको बुजुर्गों की संपत्ति मिलेगी।

यदि आपने दिल में छल-कपट रखा, सट्टा-जुआ आदि खेला, बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध बन्द किया, ननिहाल/ससुराल में झगड़ा किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी सोच निराशाजनक या निराशात्मक भी हो सकती है। मन की शक्ति कमजोर या क्षीण होगी। आपके जन्म समय में माता को बहुत कष्ट हुआ होगा या माता का आप्रेशन हो, ऐसी संभावना है। आप कर्म-धर्म हीन हो जाएंगे, बाधाएं बढ़ेंगी। घर से बेघर होना पड़ सकता है। चरित्रहीन औरतों की संगति से आप बर्बाद हो सकते हैं। परिवार में दमे या मिरगी की बीमारी होने का भय है, पितृदोष से पुत्र का सुख नहीं मिल पाएगा। आप यदि जौहरी का काम करेंगे तो बुरा असर होगा। अकारण लोगों से शत्रुता हो सकती है। झूठ-जूठ आपकी आयु को कम कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. रात्रि के समय दूध न पीयें।
2. छल कपट न करें।

उपाय :
1. मीठा भोजन या केसर-दाल चना या गुड़-गेहूं धर्मस्थान में देवें।
2. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें या अमावस्या के दिन दूध-खीर दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल सातवें पड़ा है। इसकी वजह से आप शाही जीवन बिताएंगे, आपको भाई से लाभ मिलेगा। आपकी संतान की वृद्धि होगी। हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। परिजनों से सहायता मिलेगी। पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप धर्मात्मा, नेकनामी और वक्त मुसीबत में रोते को सहारा देने वाले होंगे। रोते हुए को हंसाना आप में एक विशेष गुण होगा। आप इन्साफ पसंद आदमी होंगे। ज्योतिष विद्या में रुचि रहेगी। आपकी सरकारी विभाग में नौकरी हुई तो आपका रुतबा बढ़ेगा। आप विदेश की यात्रा करेंगे। पार्टनरशिप का धंधा भी ठीक रहेगा। आप जो भी चाहेंगे, एक बार अवश्य ही मिलेगा। मगर बार-बार मिलने की उम्मीद नहीं है। आप विष्णु भागवान की तरह खानदान की परवरिश करते रहेंगे। आपको जज या सरपंच या ऐसा अधिकार प्राप्त होगा जिसमें सच्चाई ढूंढना और इंसाफ करना होता है।

यदि आपने लोगों से झगड़ा-फसाद किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, बेटी पैदा होने के बाद आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप अपने साथ विधवा बहन-बुआ या साली को पास नहीं रखें जीवन

का फल अशुभ होगा। एक से अधिक या कई औरतों से आपका संबंध रहेगा। परस्त्री के संबंध से आपकी आयु अल्प हो सकती है। आपको रक्त संबंधी दोष हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. घर में बेलदार पौधे न लगावें।

उपाय :
1. बहन-बेटी को मीठा या मिठाई देवें।
2. भतीजा-भतीजी की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से सुख प्राप्त होगा। सरकार द्वारा मान-सम्मान भी प्राप्त होगा। राजसुख प्राप्त होगा। आप लेखक संपादक या एक कुशल व्यवसायी भी होंगे। आप अपने जन्म स्थान के आस-पास ही नौकरी-व्यापार करेंगे। आप भाग्यवान हैं। आपके परिवार, दौलत तथा आपकी उम्र तीनों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। राजयोग के प्रभाव से आप सरकारी नौकरी में रहेंगे या सरकार से लाभ प्राप्त करेंगे। जीवन व्यस्त परंतु पूर्ण सुखी रहेगा। सुख के सभी साधन उपलब्ध होंगे। निजी भवन और वाहन की प्राप्ति के योग हैं। आप हुनरमंद और कलाकार होंगे। जीवन में बुद्धिमत्ता से काम लेना पड़ेगा। विदेश की यात्रा या आयात-निर्यात के कामों से अधिक लाभ होगा। बुआ-मौसी से लाभ होगा।

यदि आपने विधवा या अविवाहिता स्त्री से संबंध रखा, लड़की, बुआ, बहन-साली के धन का उपयोग किया, माता का विरोध किया या कष्ट दिया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से सब प्रकार से आपको मां का प्यार कम मिलेगा। माता के लिए अरिष्ट सूचक योग है। यदा-कदा आपका मनोबल क्षीण हो जाया करेगा। परंतु आपको घबराना नहीं चाहिए। आपको किसी से गलत मंत्रणा मिल सकती है। पत्नी सुख, धन-दौलत और गृहस्थ सुख पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. बुआ-मौसी से झगड़ा न करें।
2. विधवा या अविवाहित स्त्री से संबंध न रखें।

उपाय :
1. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करे।
2. केसर का तिलक करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन निर्वाह के लिए आपको अकेले ही संघर्ष करना पड़ेगा। आप अपने पराक्रम से यशस्वी होंगे। आपको सोने, चांदी, कपड़े के काम में खूब लाभ होगा। कपड़े या दलाली के कामों से यश और अधिक धन मिलेगा। आप जीवन के 29वें वर्ष से सुख की ओर अग्रसर होंगे। आपको अपने लिए संघर्षरत रहना पड़ सकता है। आपको पिता की तरफ से जितना सहयोग चाहिए उतना सहयोग नहीं मिलेगा। दस्तकारी के कामों में खूब धन मिलेगा। आप धर्म में विश्वास रख कर नेकी के काम करेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। आप सरकारी विभाग से संबंधित यात्रा से हीरे-मोती पैदा करेंगे। विदेश की यात्रा से भी भरपूर लाभ मिलेगा। आप अपने पराक्रम से काम करके बहुत सुखी हो जाएंगे।

यदि आपके घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ, विद्या अधूरी रही, ख्वाबी महल देखने शुरु किये तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से उम्र के 36 वर्ष के बाद धर्म के मंदिर में जाकर शीश झुकाने से बहुत लाभ होगा जिससे आपका भाग्य बदल जाएगा। आप चरित्रहीन औरतों के साथ रह कर बहुत दुःखी रहेंगे। आप चोरी और चरित्रहीनता से दूर रह कर, भाग्य के लिए अच्छा फल प्राप्त कर सकते हैं। दूसरों पर रहम करके दुःख उठाने के भागी होंगे। आपके यहां अग्निकांड न हो इसके लिए सतर्क रहना चाहिए। आपका संतान के साथ मनमुटाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. पीले वस्त्र या सोना न पहनें।

उपाय :
1. गुरु-साधू की सेवा करें, पीपल को पानी से सीचें।
2. 43 दिन तांबे का पैसा बहते पानी में प्रवाह करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान होंगे। स्त्री, संतान सुख मिलेगा और स्वस्थ एवं खुश रहेंगे। आपकी यात्राएं अधिक और सफल होंगी। आपकी पत्नी अपनी इच्छा से सभी काम करेगी। विवाह के बाद घर में कुआं खुदवाना शुभ रहता है। आपकी स्त्री और संतान का बुरा प्रभाव 34 वर्ष की आयु में दूर होगा। शादी के चार साल तक खूब ऐशो आराम पाएंगे। आप में आध्यात्मिक रुचि और शक्ति निश्चित होगी। आपको राजयोग के संयोग से जीवन में सुख प्राप्त होगा। यदि आप मामा और मौसी के कारोबार में साथ दें तो उनका व्यापार सफल होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन सुख

मिलेगा। माता स्वस्थ और बहुत दिनों तक आपको सुख देगी। आप अपने खानदान या गांव, देश-विदेश में प्रसिद्ध होंगे। आप उत्तम भोजन, भ्रमण एवं शयन के शौकीन होंगे। नौकरी-व्यापार पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। सामान्यतया आप सरकारी विभाग से लाभ पायेंगे, उच्च पद या राजकीय सुख से युक्त रहेंगे।

यदि आपने सुरमें से संबंधित काम किया, 21-22, 24-25 वर्ष आयु में विवाह किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी माता और आपकी पत्नी में झगड़ा होता रहेगा। आपके लिए इश्क और प्रेम आपकी तबाही का कारण बनेगा। आपकी पत्नी आपके खानदान के लिए मनहूस होगी। गंदे प्रेम संबंध का बुरा फल मिलेगा। आप नशे आदि में पड़ कर बर्बाद हो सकते हैं। जीवन में दो विवाह संभव हैं। पत्नी के गर्भाशय में रोग या गर्भाशय निकाल दिया जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब न होने दें।

उपाय :

1. कुएं में केसर डालें।
2. चार आड़ू की गुठली में सुरमा भर कर वीराने में दबायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन सुखी रहेगा। आप स्त्री और प्रेम संबंधों से घिरे रहेंगे, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता या पिता में से एक का सुख बहुत लंबे समय तक मिलेगा। दूसरी औरतों के आगे-पीछे भागना, आपकी अपनी पत्नी के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़े तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसे स्वभाव के होंगे, आपको मकान-जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता दुःखी रहेंगी या माता के लिए कष्टकारक समय होगा। विधवा स्त्री से अनैतिक संबंध रखने पर या खर्च करने से कंगाल हो जाएंगे। शराब पीने से शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी, विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी रह सकती है या

आपको पत्नी सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :
1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली-भैंस-कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता-पिता के सहयोग के भी आगे बढ़तें रहेंगे। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगे। माता-पिता से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यों द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरो पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक-पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब सामान या बिजली की तारें घर में पड़ी होगी, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस-21-42 वर्ष आयु में पिता की मृत्यु होगी। पिता की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगे, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगे। आपकी परेशानी धातु संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और दादा से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आप काम में दक्ष होंगे और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े-फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।
3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :

1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति होगी। आपको विलक्षण अतिद्रिय शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगे। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्वारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता का सुख मिलेगा। पत्नी के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म-ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल-चलन ठीक रख कर सुखी रह सकते हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करते रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकरा कर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष तक आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु का समय भी ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ आप बुरे लोगों की संगति में रहेंगे। गुप्त रोग का भय, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र आपकी माता के लिए अशुभ रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक में ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी-कभी खोलते रहें।

उपाय :
1. गुरु-पिता दादा की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुप क्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके धर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है।अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता

रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रूचि रहेगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से

आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यो में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे

कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्धारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिबृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते है। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना अदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा।मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रूचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ फल अधिक मात्रा में प्रदान करेगा तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिंतित एवं भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।साथ ही इस मास में आपके घर में चोरी आदि भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते है। इस समय दूर समीप की कोई यात्रा भी कर सकते है। साथ ही सांसारिक कार्यो से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्ययाधिक्य की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा एवं अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे एवं समाज में यथोचित सम्मान भी प्राप्त होगा।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे साथ ही समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय

व्यतीत करेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे जिससे आप पदोन्नति या विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते है। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनके परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस मास सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता एवं श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे। आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा एवं अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस माह में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं।साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप समस्त भौतिक सुख अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों से आपका मेल मिलाप रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम करने पर भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपमें श्रद्धा की भावना नहीं रहेगी एवं धन हानि के योग भी बनते रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं उनसे किसी भी प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही शत्रुओं से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें तथा अपने कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्नचित रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे वांछित लाभ अर्जित होगा। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके चिर प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस समय सफल होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगे तथा इनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही उत्तम फल दायक रहेगा।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता

रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक इनका पूजन तथा आदर करते रहेंगे।साथ ही दूसरे लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपका उचित सहयोग एवं मित्रता रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सुख एवं सहयोग आपको प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी आप यदाकदा प्राप्त करेंगे।अतः आप ठंड या वातरोग से पीड़ित हो सकते है तथा आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य भी सम्पन्न होगा जिसके लिए आपको पछताना पड़ेगा जिससे समाज में सम्मान में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आपका शत्रुपक्ष इस समय प्रबल रहेगा अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा

असन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता आएगी या कोई अन्य कार्य छूट सकता या बन्द हो सकता है। साथ ही कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार के परिवर्तन होने की भी संभावना रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे समाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में किसी प्रकार का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनसे आपको कोई कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या कीमती द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते है। इससे आप मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति कर सकेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सफल होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्यार्जन करने में समर्थ होंगे तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप सफल भी होंगे। आपके प्रभुत्व में इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी योग्यता को स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार भी मिलेगा जिससे आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस समय समाज से आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय आप रक्त विकार से भी पीड़ित हो सकते है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को करने में सतर्कता का अनुपालन करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा परन्तु अल्पमात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्य मान रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनकी ओर से चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा किसी प्रकार से दण्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। साथ ही धन का व्यय भी

अधिक मात्रा में रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा तथा समाज में सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा कुछ न कुछ विवाद चलता रहेगा। आपकी इच्छाएं भी इस मास में अपूर्ण रहेंगी। अतः बुद्धिमता एवं सावधानी से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ समय समय पर शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे साथ ही अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धनार्जन भी करेंगे। इस प्रकार आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे तथा समाज में भी न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार की कष्टानुभूति हो सकती है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा जिससे आप इनकी ओर से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा इनके द्वारा आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इस समय आप में उत्साह के भाव की न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी परेशान रहेंगे।साथ ही लोभ के भाव की आप में अधिकता दृष्टिगोचर होगी।बन्धु एवं मित्रों से आपके विशेष अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा इस समय मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी परस्पर विवाद होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही अधिकाशं कार्यो को अपनी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप सामान्य धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने

लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो

तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले-बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर-परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर

अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों

के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो

सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी-मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा और यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। क्योंकि लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा एवं नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका भरपूर लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं। अगस्त के बाद बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे एवं अपने कार्य में सफल रहेंगे।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 15 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। रुका हुआ अथवा फंसा हुआ धन वापस मिल सकता है। आपके छोटे भाई व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केश मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी और आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान के राहु आपके पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का वातावरण बना सकते हैं, जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। उस समय आपको विवेक से काम लेना होगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचर काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है एवं नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपको भाइयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों के प्रति नैसर्गिक रूप से आपका लगाव बढ़ेगा, जिससे आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परन्तु 15 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अच्छा हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए उत्तम रहेगा।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। मेहनत करने में कभी वे पीछे नहीं रहेंगे और आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु अग्नितत्व राशि में होने के कारण पेट से सम्बन्धित व पाचन संबंधित रोग दे सकते हैं। 15 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है।

लग्न स्थान के गुरु मन में अच्छे विचार लाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ शनि किसी भी परीक्षा में उन्नति के संकेत दे रहा है। अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पढ़ाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। अतः वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है।

तृतीयस्थ शनि एवं राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरुरी है। क्योंकि 27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिससे पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है और बेहतर लाभ भी होगा। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से धन का आगमन होगा। जो लोग ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। हालाँकि चतुर्थ स्थान का शनि कुछ परेशानियाँ ला सकता है। लेकिन हताश होने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो के कारण कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अतः अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। इस समय आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे अरसे से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे। 19 अक्टूबर के बाद आपका समय कुछ प्रभावित हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ मे आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी सुचारु रूप से होता रहेगा। 26 अप्रैल के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं। तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

16 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें। कोई बड़ा-बुजुर्ग आदमी आपके साथ ठगी कर सकता है। किसी प्रकार का कर्जा लेने से परहेज करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की स्थिति पारिवारिक माहौल में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर रही है। आपके माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार मे किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धर्मपत्नी के लिए अच्छी है। अतः उनके साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों को अच्छा सहयोग मिलगा। तृतीय स्थान के राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा में उन्नति करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग ही व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों को उन्नति प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो जाएगा। उसके बाद आपके दोनों बच्चे एक साथ उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु केछछछछ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनर्चया पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

26 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लेकिन मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका वजन बढ़ सकता है। 19 अक्टूबर के बाद से आप अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। जैसे - सिर दर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती है। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख, किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके उपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए

हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को अथक परिश्रम के पश्चात् नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अक्टूबर के बाद वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति विशेष रूचि रहेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। जागरण, साई संध्या इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करे एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यदि आप नौकरी करते हैं तो यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। मई के बाद आपका कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

प्रतिद्वन्दी आपकी नकल करने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वे अपने मंसूबों में सफल नहीं होंगे। आप अपने अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण रखें। तभी आपको प्रतिष्ठा और धन दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे।

7 अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। नौकरी में पदोन्नती व कार्यों में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी व उच्च लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। अचानक संचित धन में कमी आ सकती है। परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय होगा। आर्थिक लेन देन के मामलों में सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। जमीन खरीदते समय व निवेश करते समय कागजी कार्यवाई पर पूरा ध्यान देना होगा, नहीं तो आपके साथ धोखा हो सकता है। आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा बचाने के बारें में सोचना आपके लिए फायदेमंद होगा। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें नहीं तो हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। जीवनसाथी के साथ अच्छे पल व्यतीत होंगे। पारिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी। मई के बाद माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उस समय राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिससे अंतर्कलह हो सकती है। खुद पर नियंत्रण रखें। परिवार से जुड़ी किसी भी समस्या को छोटा न समझें और तुरन्त उसका हल निकालें।

तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। बांछित मान-सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अक्टूबर के बाद परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चे महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से ही सम्पन्न करेंगे। मई के बाद बांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। आपकी दूसरी संतान अधिक प्रभावित करेगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी, परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो आपका गर्भ खराब हो सकता है। माता पिता के प्रति संतान के मन में आदर व संमान का भाव कम होगा। इस समय के अंतराल में आपको उन पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपके बच्चे गलत संगति में फंस सकते हैं।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। मई के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। इस पर ज्यादा सोच-विचार करने की जरूरत नहीं है। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी, लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं- जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका बजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ शनि के कारण आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 7 अक्टूबर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आप आरोग्य बने रहेंगे, परन्तु

22 अक्टूबर को शनि ग्रह का गोचर पत्नी एवं संतान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

कहते हैं कि अच्छे दिन आने से पहले बुरे दिन देखने पड़ते हैं। आपके साथ भी कुछ ऐसा हो सकता है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थितियों में सुधार होगा। 11 मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो स्थान परिवर्तन का योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद मेकेनिकल इंजीनियर एवं हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की अच्छी उन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेगी। परन्तु मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी करा सकती है। इस यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

अक्टूबर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी। विदेश यात्रा की भी संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में राहु गुरु की युति के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 11 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। अक्टूबर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जैसे- जागरण, साई संध्या, माता की चौकी इत्यादि। तांत्रिक क्रियाएं व काला जादू के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- वीरवार के दिन पीला केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला जुला रहेगा। मेहनत और लग्न से किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। 13 अप्रैल के बाद राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 3 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। व्यवसायिक क्षेत्र में रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यापारिक उन्नति के लिए आपको ऋण लेना पड़ सकता है। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तण होगा। इस अवधि में आप पर आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। पैतृक संपत्ति, जमीन जायदाद से संबंधित मामलों में अनुकूलता नहीं मिलेगी। कुछ विरोधियों का भी सामना करना पड़ सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

पंचम स्थान का शनि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। अतः आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखमि उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। अप्रैल के बाद पैसे के मामले में सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास करना अच्छा नहीं होगा।

2 जून से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ हो रहा है। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है। 4 नवम्बर के बाद आपके सारे धनागम के स्रोत खुलेंगे तथा आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक माहौल में कुछ विषम स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अचानक किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि धर्म पत्नी के लिए शुभ नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है अतः इस समय अपने सहन शक्ति को बढ़ाएं एवं अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें।

2 जून के बाद आपके पारिवारिक स्थिति में अनुकूलता आनी शुरू हो जाएगी। आपके माता पिता के लिए यह समय काफी शुभ है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 4 नवम्बर से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी।

4 नवम्बर से समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। नहीं तो 7 अप्रैल को लग्न स्थान में राहु का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है, जिससे आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से ज्यादा परेशान हो सकते हैं। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें तथा अपने खान पान पर पूर्ण ध्यान दें।

4 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि करेगी, जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। मार्च के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में वांछित सफलता नहीं मिलने के कारण आप निराश हो सकते हैं। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 2 जून के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

विद्यार्थियों के लिए 4 नवम्बर से समय काफी शुभ हो रहा है। अतः आपको वांछित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है।

13 जुलाई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ सुखद यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। परन्तु 7 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। 2 जून के बाद गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार का व्रत करें ।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मेहनत और लगन से किये गए कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसायी व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टा से जुड़े है तो यह समय काफी शुभ है। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि आपको उच्चमहत्वाकांक्षी बना रही है। आप अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बना रही है। 3 दिसम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः वर्षान्त में व्यापारिक निर्णय बहुत ही सोच विचार कर लें।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में एकादश स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। धनागम के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। हालांकि 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्त से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए यह समय सही नहीं है अतः लेन देन करते समय सावधान रहें। लग्नस्थ राहु के कारण आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए व फंसे हुसे पैसे मिलेंग। अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होने से आपको आनन्द की अनुभूति होगी। बहुत दिन से चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पिता व भाईयों से धन लाभ होगा। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर अचानक धन व्यय होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि से दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव बना रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिन्ता हो सकती है। परन्तु 6 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिसके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा तथा भावनात्मक लगाव में भी वृद्धि होगी। 28 जून के बाद लम्बे समय से चली आ रही संतान संबंधी दिक्कतों का अन्ततः समाधान हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी तथा मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को ग्रहण करने में भी आप समर्थ होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। मां-बाप के प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 6 अप्रैल से समय थोड़ा कष्टकर हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। जातक को जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क में घ ूमना भी आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में उन्नति के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा

होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में सफलता मिलेगी।

28 जून के बाद नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। साल के अंत में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक यात्राएं होंगी। व्यावसायिक यात्रा के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तीर्थ यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। 11 दिसम्बर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। आलस्यता व दीर्घ सूत्रता की भावना बनी रहेगी। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। इस समय के अंतराल में आप कर्मनिष्ठ होंगे अर्थात् अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा आप दान पुण्य अधिक करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे तथा दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें तथा घृणी सूर्याय नमः मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें तथा बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- आठमुखी रुद्राक्ष रत्न धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

काम काज के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं तो अप्रैल के बाद ही विस्तार करें क्योंकि उससे पहले का समय अच्छा नहीं है। नौकरी करने वाले लोगों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कार्यस्थल पर आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है। आपकी छवि को धूमिल करने की कोशिश भी की जा सकती है, इसलिए सतर्क रहें। नौकरी छोड़ने का भी मन बना सकते हैं। वरिष्ठ सहकर्मियों से झगड़ा करने से बचें। सरकारी नौकरी वालों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, नुकसान होने की संभावना ज्यादा है।

साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रभावित रहेगा। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। सकारात्मक बने रहें। 25 सितम्बर के बाद का समय आपके पक्ष में होगा। विरोधी शान्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का राहु खर्च में वृद्धि करेगा। निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण लाभ होगा। शेयर, सट्टा व जुआ आदि से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। नयी संपत्ति क्रय करने का भी सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध में गोचर प्रतिकूल होने के कारण चोरी, बीमारी, दुर्घटना व अपव्यय के योग हैं। यदि धन संपत्ति से संबंधित कोई मामल कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिसके कारण आपको कर्ज लेना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रहा है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद न करें। 6 मई से समय कुछ अच्छा होगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कुछ पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में समझदारी से काम लेना आपके लिए हितकर होगा। आपके रास्ते में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। 25 सितम्बर के बाद षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे तथा समाज में लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिसका असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा, परन्तु 6 मई से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। बच्चे मान सम्मान में वृद्धि व गर्व का अनुभव कराएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध दूसरी संतान के लिए शुभ नहीं है। आलस्य के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आने कि संभावना बन रही है। उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां होने की प्रबल संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। खान पान के साथ-साथ अपनी दिनचर्या में सुधार करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

6 मई से समय स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आप दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। अगस्त के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान होंगे। परन्तु 25 सितम्बर के बाद समय काफि अच्छा हो रहा है। छठे स्थान का शनि आपको व्याधि मुक्त रखेगा तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेशी भाषा सीखने वाले लोगों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उन लोगों की उन्नति होगी। 6 मई के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को भी सफलता मिलेगी।

25 सितम्बर के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षा के लिए बहुत ही शुभ होता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। द्वादश स्थान का राहु अचानक विदेश यात्रा करा सकता है। 6 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंद्वता के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। पंचमस्थ शनि के कारण पूजा-पाठए यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि कर्मों में आपका मन नहीं लगेगा, परन्तु 6 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सांस्कृतिक उत्सवों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डुओं का भोग लगाएं।

- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- चन्दन का तिलक लगाएं तथा गुरु के मन्त्र का पाठ करें।
- साधु संन्यासियों की सेवा करें तथा अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं एकदश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी वाले लोगों को जबरदस्त सफलता मिलने की संभावना है। आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग व पदोन्नति मिलने के भी योग बने हुए हैं। आपके वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है व कंपनी की तरफ से आपको सुख-सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता भी मिल सकती है। अगर कोई नया काम करने की सोच रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद होगा। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वाद-विवाद से बचें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सरकारी या निजी क्षेत्र से कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। शॉर्टकट या कम मेहनत से धन कमाने का विचार अगर आपके मन में आ रहा है तो इस अवधि में उसका त्याग करें। शेयर बाजार में लंबी अवधि के लिए निवेश करना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। यदि आप प्रॉपर्टी से सम्बन्धित कार्य करते हैं, तो इस अवधि में अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहने वाला है। धनागम में अनियमितता बनी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। द्वादशस्थ राहु के कारण आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूलखर्ची से बचें। किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन-देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की संभावना बन रही है।

22 जून से आर्थिक मामले के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा तथा कोई मुनाफे का बड़ा सौदा हाथ लग सकता है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी तथा आप वांछित बचत करने में सफल होंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे

परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, परन्तु 22 जून के बाद यह स्थिति भी अच्छी हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई बहनों के लिए उन्नतिकारक व श्रेष्ठ है। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 22 जून के बाद अचानक आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध कोई खास नहीं रहेगा। द्वादशस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परन्तु 22 जून के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल हो जाएगा।

यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में उससे छुटकारा मिल सकता है। 27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगी। आप आपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। द्वादशस्थ राहु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। धार्मिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- अमावस्या तिथि को किसी ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक लिहाज से ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई है। कार्य व्यवसाय में जो परेशानियां आ रही थी उन सब से छुटकारा मिलेगा। व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चलेंगी। व्यापार में काफी ठोस व बड़े निर्णय लेंगे, जिससे आपके मुनाफे में बढ़ोत्तरी होगी। अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से आप खुद को आगे पाएंगे। कस्टम, रॉयल्टी, वैट, इनकम टैक्स आदि से सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं। किसी सरकारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद उसका भी समाधान मिल जाएगा।

11 सितम्बर के बाद आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः उस समय आप सतर्क रहें तथा किसी पर भी आवश्कता से ज्यादा विश्वास न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति होगी तथा अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपको बड़े अधिकारियों का समय समय सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहनादि का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्यों में या सामाजिक कार्यों में आप अधिक व्यय करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं परन्तु जुलाई के बाद यह स्थिति भी अच्छा हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो उससे छुटकारा पा सकते हैं। आमदनी के नए स्रोत मिलने की उम्मीद है। विदेश अथवा दूर की यात्रा के माध्यम से भी धनार्जन होने के योग बन रहे हैं। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा में अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य

सम्पन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध और मधुर होंगे। भाई-बहनों की उन्नति होगी। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्यों का घरागमन अथवा उनके साथ सम्बन्धों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। परिवार के सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

जुलाई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों को उदर संबंधित रोग हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। लेकिन घबराने की बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए शुभ हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के लिए शुभ है। संतान के उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा शिक्षा-दीक्षा में आने वाली रुकावटें दूर होंगी। आपके बच्चों को वांछित सफलता मिलेगी। यदि आपकी दुसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या सुधारें तथा व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि तथा एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। सभी शत्रुओं को परास्त कर सफलता के मार्ग पर आप सबसे आगे रहेंगे। जो

व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में वांछित सफलता मिलेगी।

यदि आप कोई व्यासायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। यदि आप किसी नए शिक्षण संस्थान की तलाश में हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको एक अच्छे संस्थान की प्राप्ति होगी जहां से शिक्षा लेने के बाद आप को नई और सही दिशा की प्राप्ति होगी। जो लोग दूर देश में जाकर शिक्षा लेना चाह रहे हैं, उनके लिए भी समय अनुकूल है। बेरोजगार जातकों को इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु 30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होगा।

आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप विशेष रूप से ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- प्रतिदिन गणेश जी के निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। वर्ष के प्रारम्भ में अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद समय बहुत ही शुभ होने वाला है।

आपके प्रयासों की सार्थकता ही आपकी सफलता को सिद्ध करेगी। जिससे विरोधी पक्ष भी आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएगा। सहयोगियों की सहायता से मान-सम्मान बढ़ सकता है। आय के बहुत सारे नये स्रोत सामने आ सकते हैं। जो लोग नौकरी में हैं, उन्हें तरक्की मिलने से वेतन वृद्धि हो सकती है। आप अपनी सारी ऊर्जा अपने नए प्रोजेक्ट में लगाएँ और अपने प्रयासों को दोगुना करें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपके संचित धन में वृद्धि होगी। कोई पुराना उधार वापस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में आपके प्रयास सफल हो सकते हैं।

यदि आप किसी से धन लिया हो अथवा उधारी हो तो उसे भी चुका कर कर्ज में कमी कर सकेंगे। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा। धन प्राप्ति के लिए आपको भाग दौड़ करनी पड़ सकती है। लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्म संतुष्टी भी होगी। भूमि व वाहन से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपकी माता जी के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक

जीवन में थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नही होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमान जनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। घर की शोभा बढ ाने के लिए कुछ सुंदर वस्तुओं की खरीददारी संभव है।

संतान

संतान की दृष्टि से 16 फरवरी तक समय अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है, परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। उनको शारीरिक एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। आलस्यता एवं दीर्घसूत्रता के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। बाहर का खाना खाने से बचें अन्यथा फूड पॉयजनिंग से पीड़ित हो सकते हैं। आवश्यकता से अधिक परिश्रम आपको स्वास्थ्य की हानि दे सकता है इसलिए बेहतर है की आप पूर्ण विश्राम भी करें। त्वचा संबंधी विकार हो सकते हैं। 16 फरवरी के बाद समय अनुकूल हो रहा है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो को सफलता मिलेगी परन्तु अथक परिश्रम के बाद। यदि

आप किसी के मित्र के साथ साझेदारी में कोई नया काम शुरु करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

16 फरवरी के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह तबादला आपके घर से दूर भी हो सकती है। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान सम्पन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर मन्त्र साधना कर सकते हैं। गुरुजनों पर आपको अटूट विश्वास होगा।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- माता पिता व अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए कारोबारियों से आपका संपर्क बढ़ेगा, उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे, साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको सभी कार्यों में वाच्छित सफलता मिलेगी। यदि आप अपनी पत्नी के साथ मिलकर कार्य रहे हैं तो सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले लोगों के लिए समय श्रेष्ठ रहने वाला है। पदोन्नति व इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण का पूर्ण योग बन रहा है। इस अवधि में आपको सराहना, सहयोग व ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। आपका प्रत्येक काम समय से पहले पूरा होगा। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष लाभदायक सिद्ध होगा। अतिरिक्त आय प्राप्त होने की उम्मीद पूरी हो सकती है। आपमें साहस का स्तर अधिक रहेगा तथा आप आमदनी के नए स्रोत भी पैदा कर सकते हैं। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्यों व सुख-सुबिधाओं पर इस वर्ष आप अधिक खर्च कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले लोगों को उनकी मेहनत का फल प्रोत्साहन राशि या वेतन वृद्धि के रूप में मिल सकता है। आर्थिक मोर्चे पर अच्छे समाचार मिल सकते हैं। सरकारी विभाग या अन्य किसी जगह पैसा फंसा हुआ है, उसकी पेमेंट हो सकती है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ कुछ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में काफी उतार-चढ़ाव होने की संभावना है। माता-पिता के साथ कुछ विवाद हो सकता है तथा फालतू के झगड़ों की संभावना है, इसलिए विवादों से दूरी बनाकर रहना आपके लिए फायदेमन्द रहेगा नहीं तो इससे आपकी पेशेवर और सामाजिक जिन्दगी प्रभावित हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल होने के कारण परिजनों, परिचितों एवं मित्रों से हर कार्य

में सहयोग मिलेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार के लिए कोई नया वाहन लेने की स्थिति बना सकती है। मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से आपके कार्य पूर्ण हो सकते हैं। आपके खर्चों में वृद्धि की संभावना है। घर में मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय मे शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। दूसरे बच्चे के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि आपकी प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकता हैं।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी, परन्तु 2 मार्च के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी, उसके बाद आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित होगा।

15 जून के बाद अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन-सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। आपकी शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पढ़ाई-लिखाई में कमी व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक यात्राएं

अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर तबादला होगा तथा यह परिवर्तन आपके लिए काफी शुभ रहेगा। अपने घर से दूर रहने वाले लोगों की इस वर्ष जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम एवं लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठान व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पूजा पाठ में आपका मन भी नहीं लगेगा। मानसिक अशान्ति व शारीरिक कष्ट के कारण भी यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका दर्शन करें।
- संपूर्ण बाधामुक्ति यंत्र का विधिवत् पूजन एवं दर्शन करें।
- प्रातःकाल पक्षियों को दाना डालें।
- सात मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन प्रातः काल धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(16/05/2011 - 16/05/2027)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 16/05/2011 को आरम्भ और 16/05/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरु करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी।

महादशा :- शनि
(16/05/2027 - 16/05/2046)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्कुण्डली में यह 16/05/2027 को आरम्भ और 16/05/2046 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चौथै भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधक ग्रह के रूप में जाना जाता है, किन्तु अन्ततः फल देता है। यह फल की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम के हेतु प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि छठे, दसवें और प्रथम भाव पर है। चतुर्थ भाव, जिसमें यह स्थित है, जन्म स्थान, मनोरंजन, रोमान्स, धार्मिक प्रवृत्ति तथा आध्यात्मिक कार्य का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव अर्थात् 'सुखस्थान' को शक्ति

प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कोई बीमारी नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

मातृ भूमि, मकान और माता के द्योतक चतुर्थ भाव में स्थित शनि के कारण आपको घर का सारा सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आप अपना नया मकान तथा नयी गाड़ी खरीद सकते हैं।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आपकी स्थिति अत्यंत सुदृढ़ होगी क्योंकि चौथे भाव में स्थित बली और योगकारक शनि की कार्य-व्यवसाय के दसवें भाव पर दृष्टि है। आप एक सरकारी सलाहकार अथवा मंत्री या उपदेशक हो सकते हैं। आप धनी, प्रतिष्ठित, सुखी और ऐन्द्रिय सुखों के प्रति आकर्षित होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा और आप उसका आनन्द लेंगे। आपको हर प्रकार से आनन्द मिलेगा। आपके बच्चे कम किन्तु आज्ञाकारी होंगे। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के बावजूद आप इस दशा के दौरान पारिवारिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा, ज्ञान तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए अत्यन्त अनुकूल है।

अंर्तदशा :- शनि - शनि
(16/05/2027 - 19/05/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 19/05/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। शनि शक्तिशाली और अशुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको वातरोग हो सकते हैं। मन में आलस्य की भावना हो सकती है। अचल संपत्ति और वाहन से संबंधित परेशानियां आ सकती हैं। रिश्तेदार आपको नापसंद कर सकते हैं। आप एकाकी जीवन पसंद कर सकते हैं। घरेलू जीवन में कठिनाइयां हो सकती हैं। मामापक्ष के रिश्तेदार परेशान कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए गरीबों को तेल,काले वस्त्र, लोहा, भैंस, काली गाय, काले फूल, काले जूते, कस्तूरी आदि दान करें। शनि गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(19/05/2030 - 26/01/2033)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 19/05/2030 को प्रारंभ होकर 26/01/2033 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी संगीत में रुचि होगी। विदेश जा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सम्मान होगा। शिक्षाविद बन सकते हैं। व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा। उच्चपद पर आसीन होंगे।

बुध बुद्धि का कारक है और आपके लिए शुभ है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(26/01/2033 - 07/03/2034)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 26/01/2033 को प्रारंभ होकर 07/03/2034 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि हो सकती है, उदर रोग हो सकता है। कुछ विचित्र भावनात्मक अनुभव हो सकते हैं। भावनात्मक सुदृढ़ता के लिए हर कदम पर सावधानी बरतना श्रेयस्कर रहेगा। निकट संबंधियों के लिए आपकी भावनाएं असामान्य हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की उपासना करें। मंगलवार और शनिवार को उपवास रखें। उपवास के बाद हनुमान जी को मिठाई अर्पित करें। उपवास मीठी वस्तु से ही तोड़ें। उस दिन नमक ग्रहण न करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(07/03/2034 - 06/05/2037)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 07/03/2034 को प्रारंभ होकर 06/05/2037 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके माता से उत्तम संबंध होंगे, बहुत से मित्र होंगे। परिवार में आपका मन लगेगा, स्वभाव शिष्ट होगा। संगीत में रुचि हो सकती है। वाहनसुख की संभावना है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, धर्म में आस्था होगी। सफल होंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।

• कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(06/05/2037 - 18/04/2038)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 06/05/2037 को प्रारंभ होकर 18/04/2038 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर रह सकते हैं, अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। यह अंतर्दशा अधिक शुभ नहीं रहेगी। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

• शहद और दूध का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
• गरीबों को आटा, गुड़, तांबा दान करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(18/04/2038 - 18/11/2039)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। अष्टम भाव में स्थित चंद्र अशुभ माना जाता है।

इस अवधि में आप समाज में लोकप्रिय बनेंगे। विवाह के बाद व्यापार आदि में लाभ बढ़ेगा। जल से संबंधित रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। नदी, झील आदि के निकट सावधान रहें, क्योंकि डूबने का खतरा रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा का यंत्र धारण करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(18/11/2039 - 27/12/2040)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 18/11/2039 को प्रारंभ होकर 27/12/2040 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है।

सप्तम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 10, 1, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों की खुशामद करेंगे। क्रोधी और कटु वचन बोलने वाले हो सकते हैं। ईर्षा में वृद्धि हो सकती है। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। आप मंगली हैं। आपके जीवन साथी भी मंगली हों तो अति उत्तम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें और हनुमान मंदिर में दर्शन करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(27/12/2040 - 03/11/2043)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 27/12/2040 को प्रारंभ होकर 03/11/2043 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी और विद्वान बनेंगे। धन कमाने के लिए विदेश जा सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - गुरु
(03/11/2043 - 16/05/2046)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 16/05/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2046को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 03/11/2043 को प्रारंभ होकर 16/05/2046 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 2, 4, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। आप उच्चपद पर आसीन होंगे, धनी बनेंगे। उच्च सिद्धांतों का पालन करेंगे। साधु-संतों की संगत करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल, अंगूठी को कच्चे दूध से धोकर, प्रार्थना और बृहस्पति मंत्र के 99 जाप के बाद, दायें हाथ की तर्जनी में धारण करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

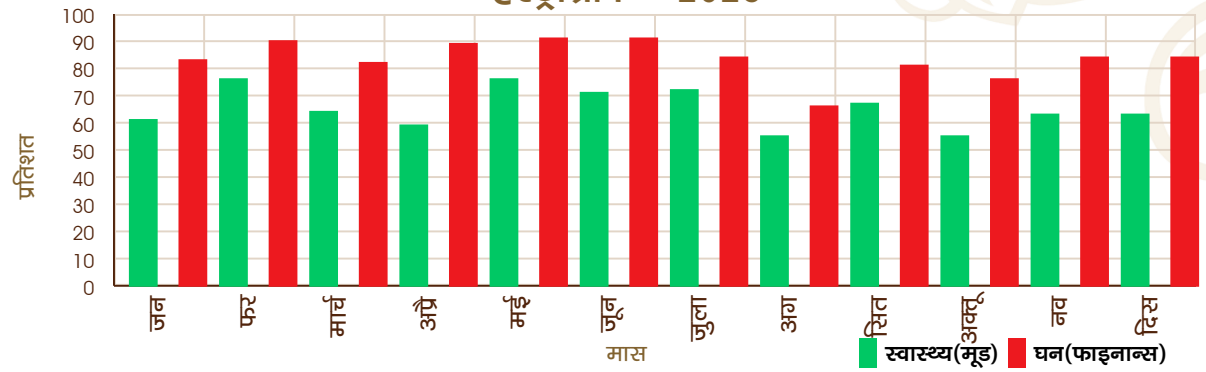

एस्ट्रोग्राफ - 2027

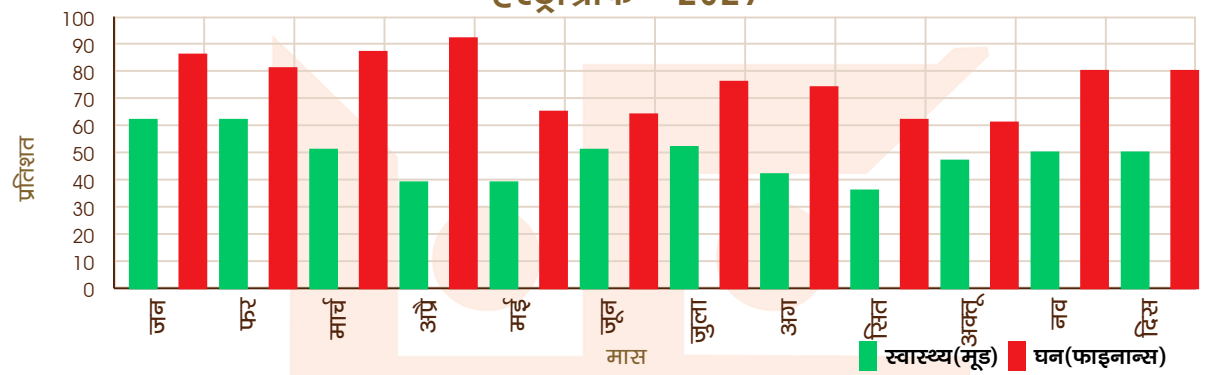

एस्ट्रोग्राफ - 2028

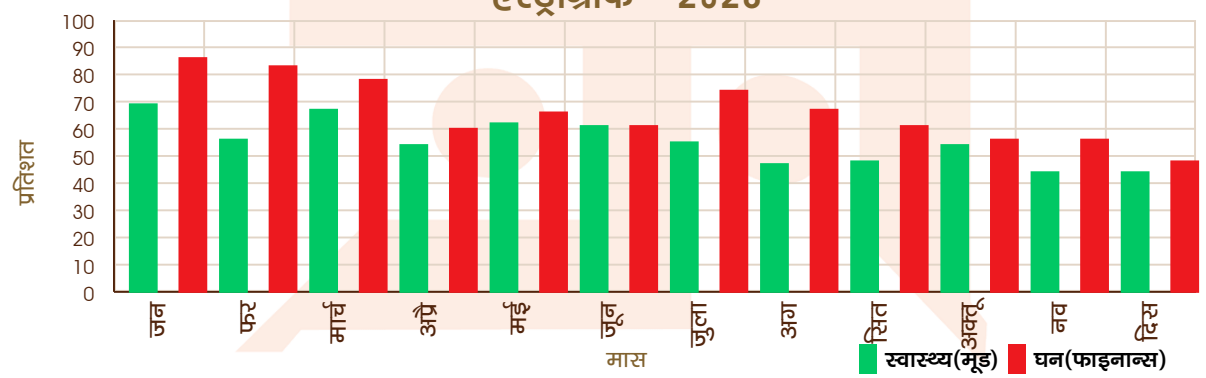

एस्ट्रोग्राफ - 2029

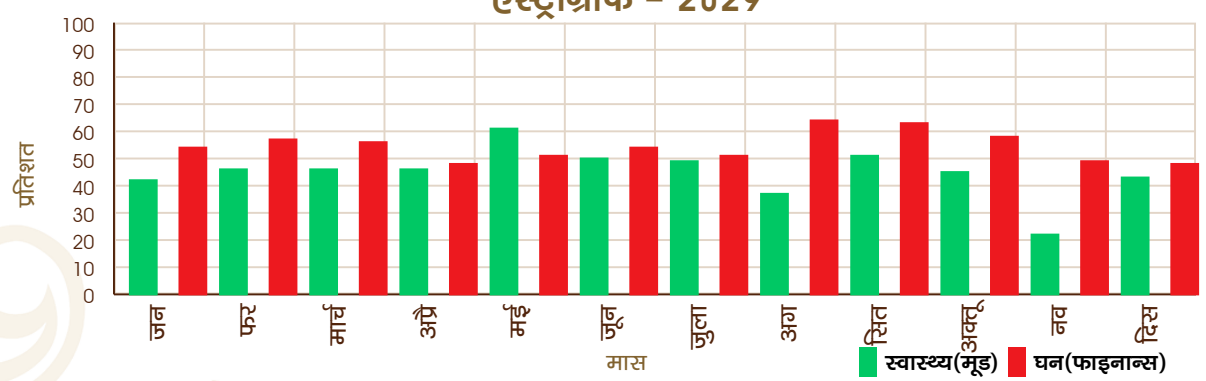

एस्ट्रोग्राफ - 2030

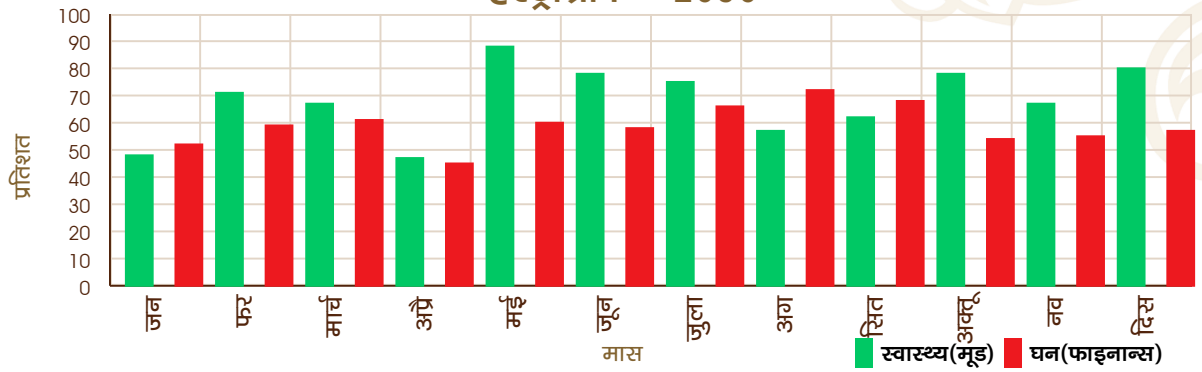

एस्ट्रोग्राफ - 2031

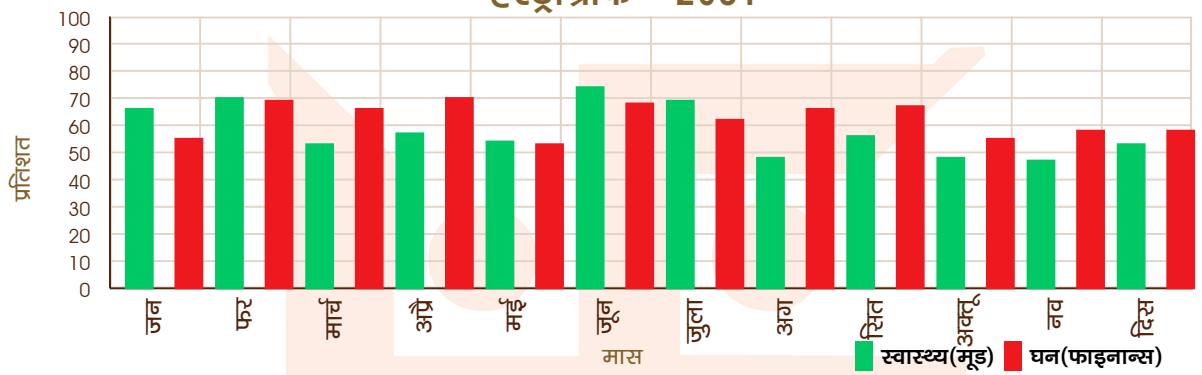

एस्ट्रोग्राफ - 2032

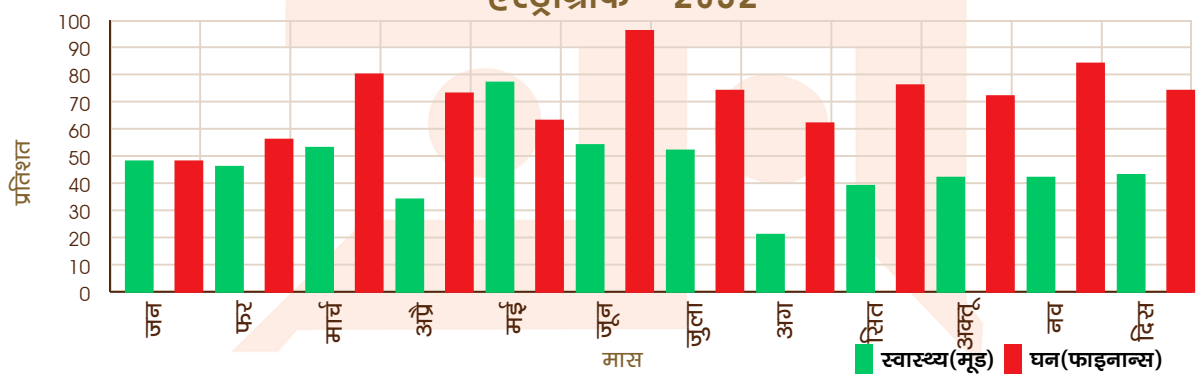

एस्ट्रोग्राफ - 2033

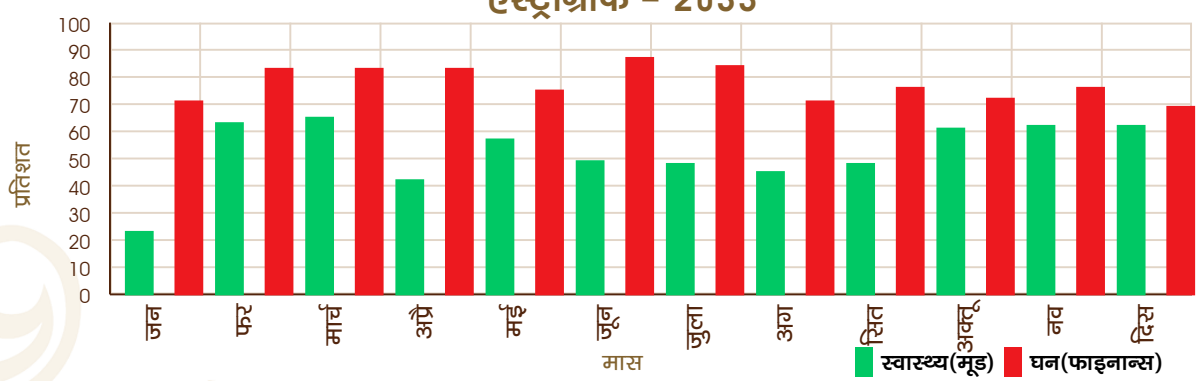

एस्ट्रोग्राफ - 2034

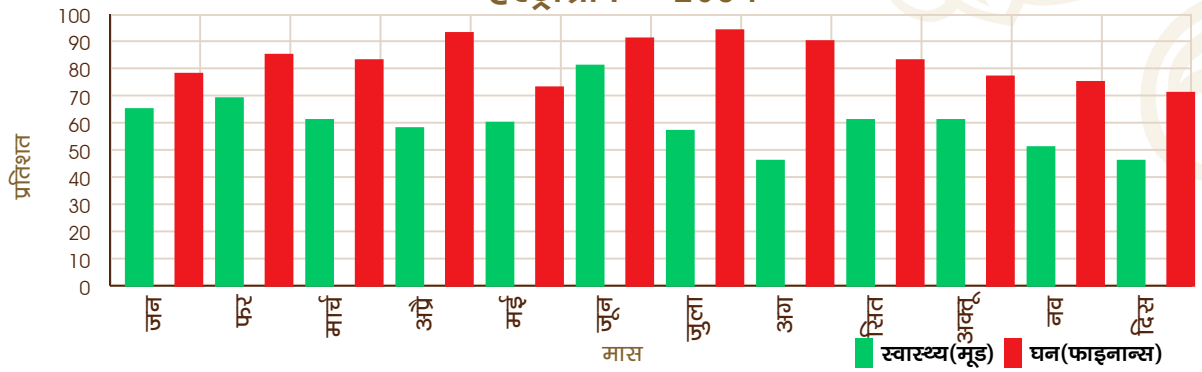

एस्ट्रोग्राफ - 2035

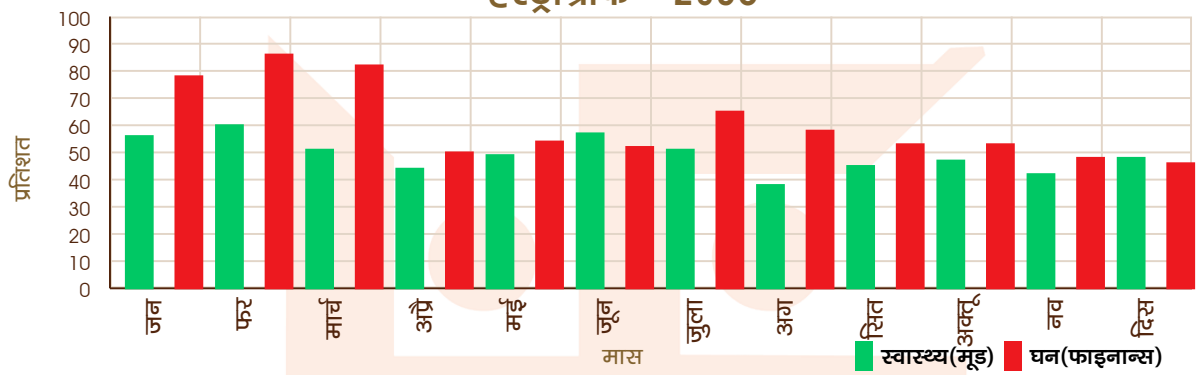

एस्ट्रोग्राफ - 2036

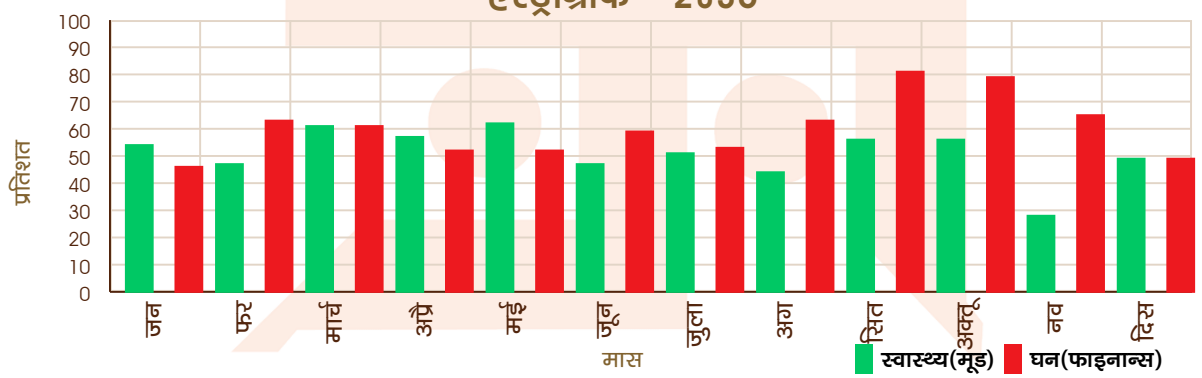

एस्ट्रोग्राफ - 2037

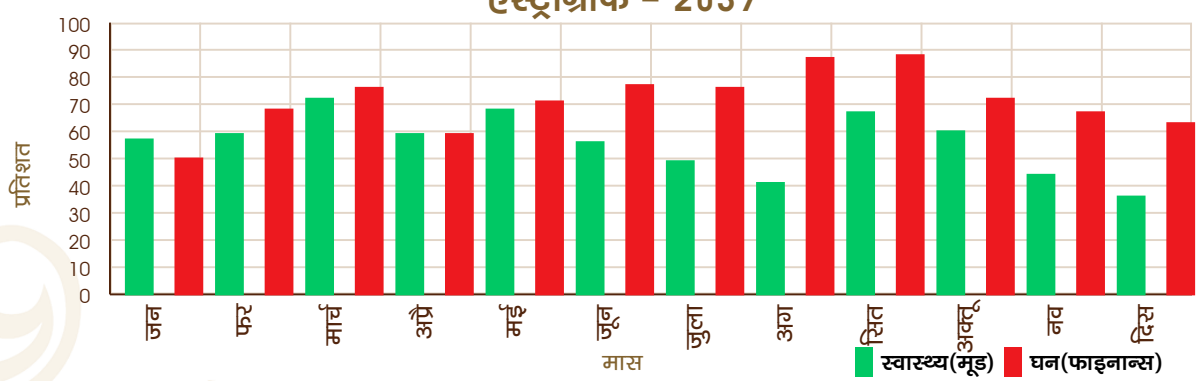

एस्ट्रोग्राफ - 2038

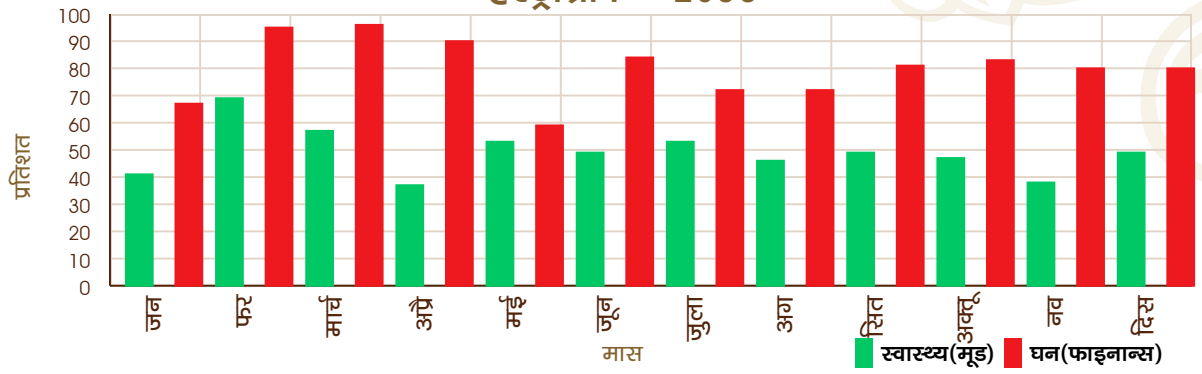

एस्ट्रोग्राफ - 2039

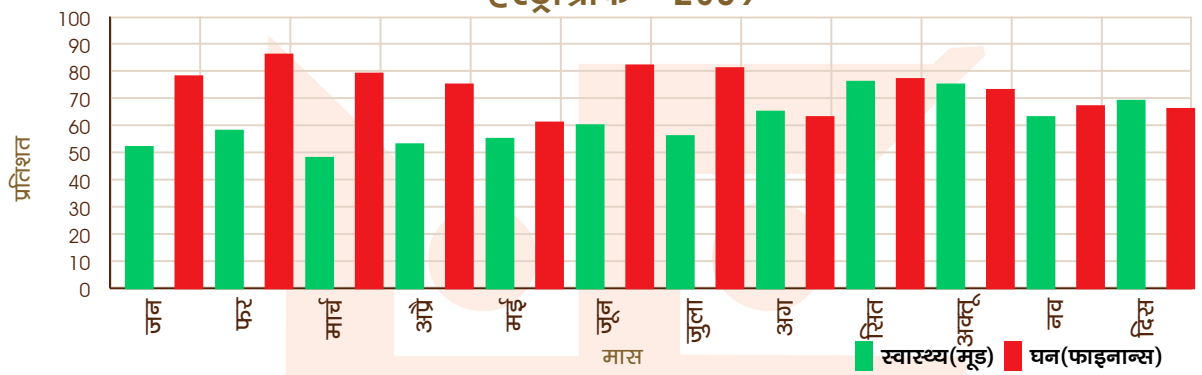

एस्ट्रोग्राफ - 2040

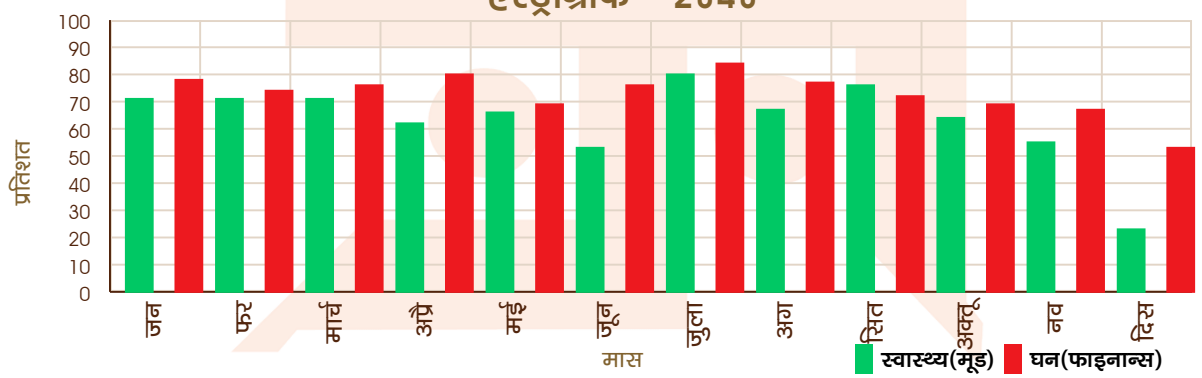

एस्ट्रोग्राफ - 2041

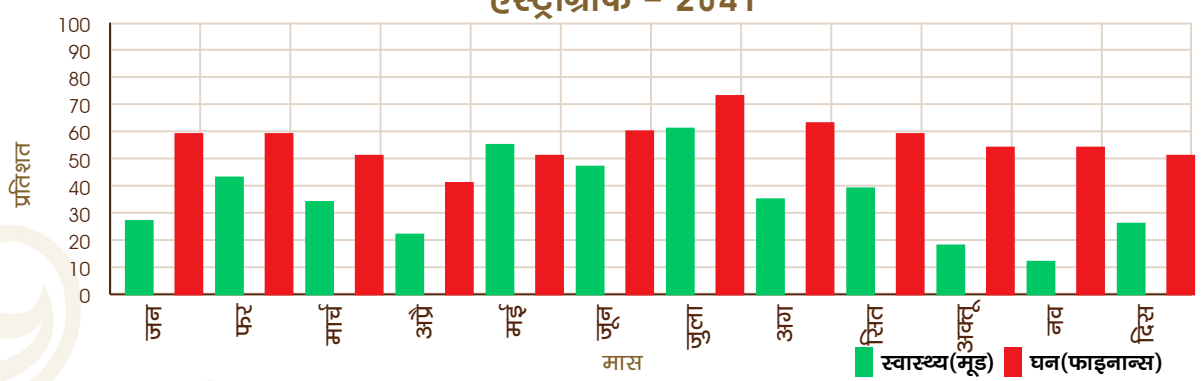

एस्ट्रोग्राफ - 2042

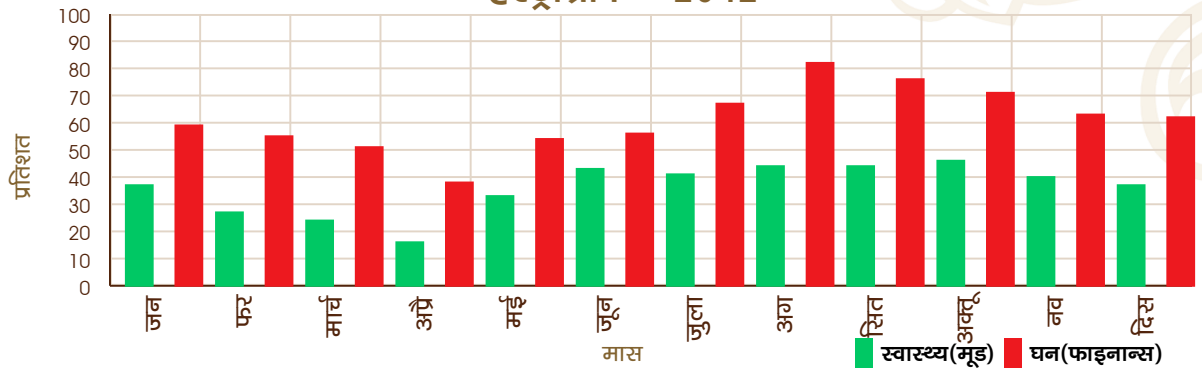

एस्ट्रोग्राफ - 2043

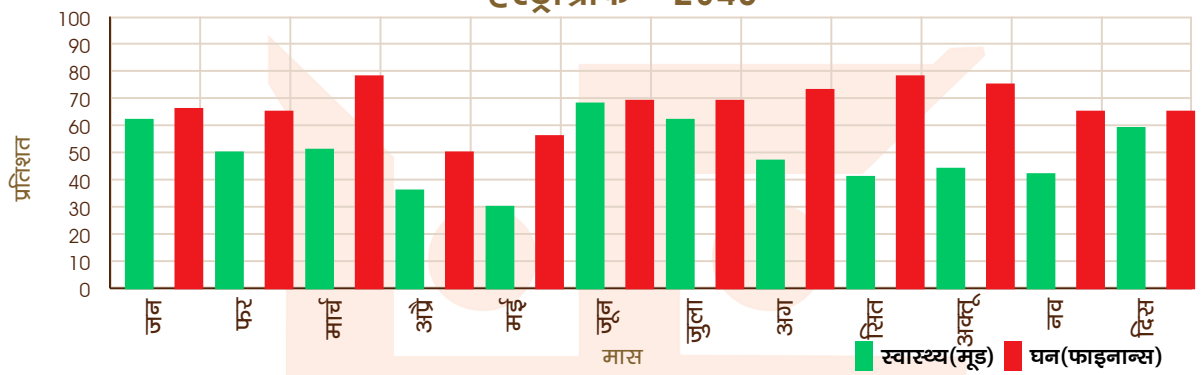

एस्ट्रोग्राफ - 2044

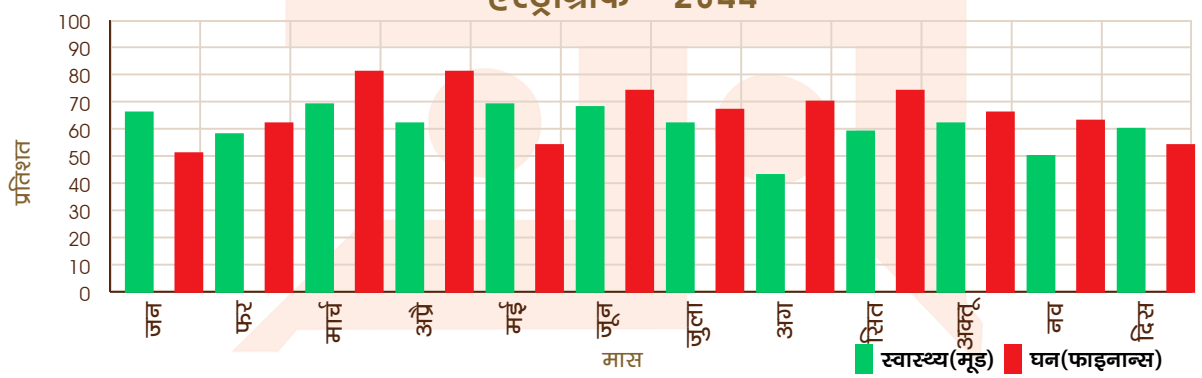

एस्ट्रोग्राफ - 2045

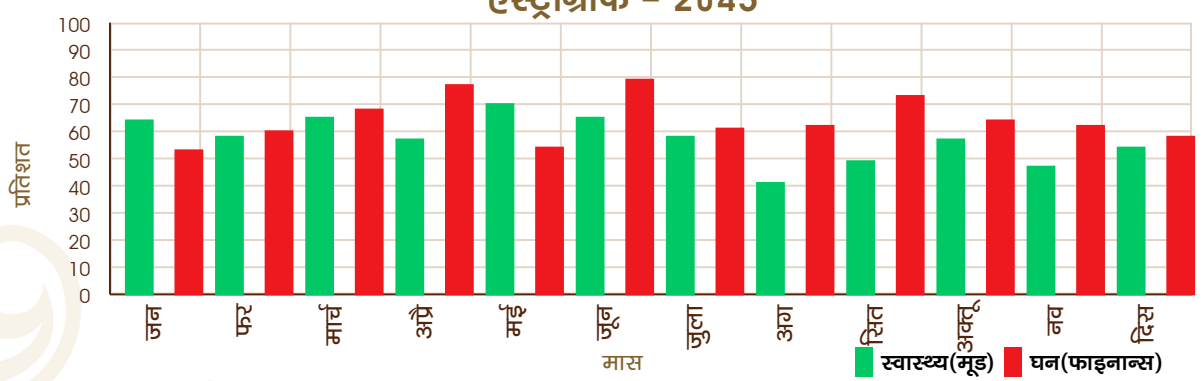

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।
।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

वाशि योग

सूर्यादव्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,शनि,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाद्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।।

अ.7/भाव-9/श्लोक-45।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।

।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

सत्कीर्तियुक्त योग

लाभेशे कर्मभावस्थे कर्मेशे बलसंयुते।
देवेन्द्रगुरुणा दृष्टे सत्कीर्त्तिसहितो भवेत्।।

।। बृहद् पाराशरहोराशास्त्र ।। अ. 12/श्लोक

यदि जन्मकुण्डली में लाभ का स्वामी कर्मस्थ हो तथा कर्मेश बली हो तथा उस पर गुरु से दृष्ट हो तो जातक सत्कीर्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

सत्कर्मी प्राणी होकर सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-143 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

कर्माधिपे चतुर्थस्थे लाभनाथेन संयुते ।
भाग्यनाथेन वा युक्ते बहुवाहनदेशभाक् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-174 ।।

यदि जन्मपत्रिका में दशमेश चतुर्थभाव में लाभेश से युक्त अथवा नवमेश से युक्त हो तो जातक वाहनों का स्वामी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वाहन सुख प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अति छोटे कद होने का योग

लग्ने शनौ सोमसुते स्वगेहे शौर्ये चतुर्थे सबुधेऽतिह्रस्वः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-21 ।।

यदि जन्मकुंडली में लग्नस्थ शनि हो, बुध स्वगृही हो अथवा चतुर्थभाव में शनि बुध से युक्त हो तो जातक अति छोटे कद का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 48 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अति छोटे कद के प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।